पद्मभूषण डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' की स्मृति में

कर्मयोगी स्व. कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ (एडव्होकेट) की प्रेरणा से

सद्भावना

2025

भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन

श्रीपाल एज्युकेशन सोसायटी, उज्जैन

श्री कृष्ण शिक्षण लोक परमार्थ समिति, उज्जैन

www.vyakhyanmala.bhartiyagyanpeeth.com

26 जनवरी 1950 देश को मिला अपना गणतंत्र
26 जनवरी 2019 उज्जैन को मिली अपनी आवाज

आपके अपने रेडियो दस्तक **90.8FM** के रुप में

आप भी बने उज्ज्ञैन की आवाज

जो होगी प्रसारित रेडियो दस्तक **90.8FM** पर

भेज दीजिये हमारे व्हाट्सएप नम्बर **9406894068** पर

www.radiodastak.com
Contact : 0734-2555908, 9406894068

उज्जैन का अपना एवं पहला कम्युनिटी रेड़ियो

रेडियो दस्तक
90.8 FM

सुनेगा उज्जैन - बढ़ेगा उज्जैन

सद्भावना 2025

अनुक्रमणिका

	क्र.	विषय	वक्ता	पृ.क्र.
* संपादक संदीप कुलश्रेष्ठ	1.	विकसित भारत की यात्रा में रक्षा प्रोद्योगिकी का योगदान	माननीय डॉ. सुधीर कुमार मिश्रा भारत के सुप्रसिद्ध रक्षा वैज्ञानिक, पूर्व महानिदेशक (ब्रह्मोस डीआरडीओ) एवं मंत्रालय भारत सरकार	11...
	2.	अध्यक्षीय उद्बोधन	माननीय डॉ. मोहन गुप्त (वरिष्ठ शिक्षाविद्, विचारक पूर्व कुलगुरु महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन)	19...
	3.	संस्कृत कविता में लोक जीवन	माननीय प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी पूर्व कुलपति केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	23...
* संपादक मंडल युधिष्ठिर कुलश्रेष्ठ श्रीमती अमृता कुलश्रेष्ठ डॉ. गिरीश पंड्या डॉ. नीलम महाडिक डॉ. मेघा शर्मा	4.	अध्यक्षीय उद्बोधन	माननीय डॉ. गोविन्द गंधे निदेशक, कालिदास अकादमी, उज्जैन	30...
	5.	भारत की आत्मा उसकी संस्कृति उसकी परंपरा में बसती है	माननीय डॉ. मोहनदास हेगड़े निदेशक हार्टफुलनेस रिसर्च सेंटर, मैसुर	36...
	6.	अध्यक्षीय उद्बोधन	माननीय श्री तुलसीदास परोहा वरिष्ठ शिक्षाविद एवं साहित्यकार	43...
	7.	महात्मा गांधीजी और मानवतावाद	माननीया श्रीमती शैलजा बारूरे वरिष्ठ शिक्षाविद् निदेशक महात्मा गांधी स्टडी सेन्टर अंबाजोगाई (महाराष्ट्र)	49...
* कम्प्यूटर श्रीमती मोनिका गेहलोद ऋषिकेश विभुते	8.	अध्यक्षीय उद्बोधन	माननीया डॉ. निवेदिता वर्मा वरिष्ठ शिक्षाविद्, डॉ. अंबेडकर पीठ, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन	58...
	9.	ए आई युग में सामाजिक सारोकार एवं न्याय के उपादान	न्यायमूर्ति माननीय श्री अनिल शुक्ला जी पूर्व अध्यक्ष, शुल्क नियामक समिति, छत्तीसगढ़	61...
	10.	अध्यक्षीय उद्बोधन	न्यायमूर्ति माननीय श्री गौतम चौरडिया अध्यक्ष राज्य उपभोक्ता सेवा आयोग छत्तीसगढ	64...
* प्रकाशक श्रीमती कृष्णा कुलश्रेष्ठ अध्यक्ष भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन श्रीपाल एज्युकेशन सोसायटी	11.	श्री गुरु तेग बहादुर जी के मानवीय आदर्श	माननीय रणजीतसिंह अरोरा प्रख्यात साहित्यकार एवं उद्योगपति	72...
	12.	अध्यक्षीय उद्बोधन	माननीय डॉ. पिलकेन्द्रसिंह अरोरा प्रख्यात साहित्यकार एवं विचारक	79...
	13.	आप नही बदलेंगे तो प्रकृति आपको बदल देगी	पद्म भूषण माननीय श्री अनिल प्रकाश जोशी प्रसिद्ध पर्यावरणविद्	82...
	14.	अध्यक्षीय उद्बोधन	पद्मश्री जयरामजी प्रसिद्ध नृत्याचार्य	88...

संपादक की ओर से...

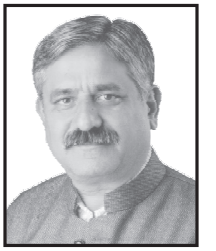

23वीं अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक नए चिंतन, नई दृष्टि और समय की मांग के अनुरूप एक सार्थक पहल के रूप में साकार हुई।

आज जब विश्व युद्ध जैसे तनावपूर्ण हालातों, अस्थिरता और अविश्वास के वातावरण से गुजर रहा है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम समाज को केवल सूचना नहीं, बल्कि दिशा देने का कार्य करें। विकसित भारत 2047 के संकल्प और पर्यावरण संरक्षण जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों को केंद्र में रखते हुए इस वर्ष की व्याख्यानमाला की रूपरेखा निर्धारित की गई।

इसी क्रम में जब 2047 के भारत की कल्पना को देश के रक्षा वैज्ञानिक ने शुभारंभ सत्र में अभिव्यक्त किया, तो वह व्याख्यान व्यापक स्तर पर चर्चित होकर देशभर में प्रेरणा का विषय बन गया। जब देश के प्रमुख न्यायवेत्ताओं ने न्यायपालिका में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर अपने विचार रखे, तो युवाओं के भीतर न्याय की दिशा में एक नई दृष्टि का सूत्रपात हुआ। जब प्रतिष्ठित पद्म पुरस्कारों से सम्मानित व्यक्तित्वों ने पर्यावरण संरक्षण और भारतीय संस्कृति पर अपने विचार प्रस्तुत किए, तो व्याख्यानमाला की गरिमा और अधिक ऊँचाइयों तक पहुँची और जब प्रखर बुद्धिजीवियों ने साहित्य के विविध आयामों पर अपने विचार व्यक्त किए, तो इस संपूर्ण श्रृंखला को एक और व्यापक बौद्धिक विस्तार प्राप्त हुआ।

इस प्रकार विभिन्न आयामों को समेटते हुए यह व्याख्यानमाला समकालीन विषयों पर गंभीर चिंतन का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी।

इन महत्वपूर्ण और सारगर्भित विचारों को केवल मंच तक सीमित न रखते हुए उन्हें स्थायी रूप से संरक्षित करने का दायित्व निभाते हुए समिति "सद्भावना स्मारिका 2025" के माध्यम से उन्हें प्रकाशित रूप में प्रस्तुत कर रही है।

मंच से व्यक्त विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करना और उन्हें संपादित कर सुव्यवस्थित रूप देना एक सतत साधना की प्रक्रिया है। इस क्रम में यथासंभव त्रुटिरहित प्रस्तुति का प्रयास संपादक मंडल द्वारा किया गया है, तथापि सुझाव और सुधार की संभावनाएँ सदैव बनी रहती हैं। इस दिशा में आपके विचार सादर आमंत्रित हैं।

हमें विश्वास है कि यह स्मारिका समाज में नई जागृति उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

संदीप कुलश्रेष्ठ
सचिव
अखिल भारतीय सद्भावना
व्याख्यानमाला समिति

प्रकाशक की ओर से...

23वीं अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला केवल विचारों का मंच नहीं रही, बल्कि संवाद, सहभागिता और व्यापक प्रसार का एक सशक्त माध्यम बनकर सामने आई।

व्याख्यानमाला का आयोजन अलग–अलग विधाओं में व्यापक रूप से किया गया। संस्थान के सभागृह में सैकड़ों श्रोताओं की उपस्थिति में व्याख्यानों को सामूहिक रूप से सुना गया। यह केवल श्रवण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि प्रत्येक व्याख्यान के उपरांत विमर्श और संवाद का एक सजीव अवसर भी निर्मित हुआ। वहीं, विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से इन व्याख्यानों को देश–विदेश में व्यापक रूप से सुना गया, जिससे यहाँ अभिव्यक्त विचार वैश्विक स्तर तक प्रसारित हो सके। इसके साथ ही, कम्युनिटी रेडियो दस्तक 90.8 FM के माध्यम से इन व्याख्यानों का प्रसारण स्थानीय स्तर पर लाखों श्रोताओं तक पहुँचा, जिससे यह संवाद जन–जन तक सुलभ हुआ।

इस प्रकार ऑफलाइन, ऑनलाइन और ऑन–एयर, इन तीनों माध्यमों से विचारों को व्यापक रूप से समाज तक पहुँचाने के उपरांत अब संस्थान अपना दायित्व समझते हुए इन अमूल्य विचारों को चतुर्थ माध्यम ऑन पेपर भी "सद्भावना स्मारिका 2025" के रूप में प्रकाशित कर रहा है।

यह प्रकाशन केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि उन विचारों की स्थायी अभिव्यक्ति है, जो समाज को दिशा देने, संवेदनशील बनाने और सकारात्मक परिवर्तन की ओर प्रेरित करने की क्षमता रखते हैं। इस कार्य में जुड़े सभी विद्वानों, वक्ताओं, आयोजकों एवं तकनीकी सहयोगियों का योगदान सराहनीय है।

हमें विश्वास है कि यह स्मारिका पाठकों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी और सद्भाव, शांति एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। आपके सुझाव और मार्गदर्शन सादर आमंत्रित हैं।

श्रीमती कृष्णा कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष
भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन
श्रीपाल एज्युकेशन सोसायटी

जगदीश देवड़ा
उप मुख्यमंत्री,
वित्त, वाणिज्यिक कर,
योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी
मध्यप्रदेश शासन, भोपाल

मंत्रालय कक्ष : B-206, VB-II
दूरभाष कार्या. : 0755-2708042
निवास : 0755-2790095, 2790096
फैक्स : 0755-2790095

क्रमांक 33-338 /उ.मु.मं./विवायोआसां/2026 भोपाल, दिनांक 08-04-2026

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन द्वारा **"भारतीय व्याख्यानमाला"** स्मारिका का प्रकाशन किया जा है। यह पहल न केवल बौद्धिक संवाद को एक सशक्त मंच प्रदान करती है, बल्कि समाज में सकारात्मक चिंतन, सांस्कृतिक मूल्यों, पर्यावरण जागरूकता तथा राष्ट्र निर्माण की भावना को भी सुदृढ़ करने का कार्य कर रही है।

आज जब हमारा देश 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, तब इस प्रकार के आयोजन अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा अपने अनुभव और विचार साझा करने से युवाओं को नई दिशा और प्रेरणा प्राप्त होती है, साथ ही समाज के समग्र विकास में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित होता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'भारतीय व्याख्यानमाला' स्मारिका निरंतर इसी प्रकार समाज को जागरूक, शिक्षित एवं प्रेरित करती रहेगी और ज्ञान के इस यज्ञ में अधिकाधिक लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करेगी। यह पहल आने वाले समय में एक आदर्श उदाहरण के रूप में स्थापित होगी।

इस स्मारिका के सफल आयोजन हेतु मैं सभी आयोजकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सादर,

(जगदीश देवड़ा)

प्रति,
श्री युधिष्ठिर कुलश्रेष्ठ जी
अध्यक्ष- अ. भा. सदभावना व्याख्यानमाला समिति,
उज्जैन, म.प्र.

निवास : सी–5, 74 बंगला, स्वामी दयानंद नगर, भोपाल–462 003

Anil Firojiya
Member of Parliament (Lok Sabha)
Ujjain-Alot, Madhya Pradesh

सत्यमेव जयते

Member :
- Committee on Transport, Tourism and Culture
- Standing Committee on Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes
- Consultative Committee on Ministry of External Affairs

।। शुभकामना संदेश ।।

23 वीं अखिल भारतीय **''सद्भावना व्याख्यानमाला 2025''** के सफल आयोजन तथा इसकी स्मारिका के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में भारत **''अमृत काल''** में **''विकसित भारत 2047''** के महान लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर है। ऐसे समय में समाज में सकारात्मक चिंतन, सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण, पर्यावरण जागरूकता तथा जनहित से जुड़े विषयों पर सार्थक संवाद की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। इस दिशा में सद्भावना व्याख्यानमाला एक प्रेरणादायी एवं सराहनीय पहल है।

उज्जैन स्थित सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थान भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा, कर्मयोगी स्वर्गीय श्री कृष्णमंगल सिंह कुलश्रेष्ठ जी की प्रेरणा से तथा पद्मभूषण स्वर्गीय डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी की पावन स्मृति में आयोजित इस व्याख्यानमाला में देशभर के विद्वानों ने विकसित भारत 2047, पर्यावरण चेतना, संस्कृत साहित्य, सामाजिक सरोकार एवं जीवन प्रबंधन जैसे समसामयिक विषयों पर विचार–विमर्श किया, जो निस्संदेह समाज को नई दिशा प्रदान करेगा।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इन महत्वपूर्ण विचारों को **''सद्भावना स्मारिका 2025''** के माध्यम से स्थायी रूप में जन–जन तक पहुँचाने का सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। यह स्मारिका न केवल ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी, बल्कि समाज में सकारात्मक ऊर्जा एवं जागरूकता का संचार भी करेगी।

मैं इस आयोजन से जुड़े सभी आयोजकों, विद्वानों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की मंगलकामनाएं करता हूँ।

अनिल फिरोजिया

सांसद, उज्जैन–आलोट संसदीय क्षेत्र

Delhi : 801, Saraswati Apartment, Dr. BD Marg, New Delhi- 110001, Phone: +91 11-23310863
Ujjain : 6, Bhakat Nagar, Dushehra Maidan, Ujjain, Madhya Pradesh - 456010
Mobile : +91 8120003005 • Email : ujjainmp22@gmail.com

प्रो. अर्पण भारद्वाज
कुलगुरु
Prof. Arpan Bhardwaj
Vice Chancellor

सम्राट् विक्रमादित्य विश्वविद्यालय
उज्जैन (म.प्र.) 456010 भारत
SAMRAT VIKRAMADITYA VISHWAVIDYALAY
Ujjain - 456010 (M.P.) Bharat
E-mail : vcvikramujn@gmail.com
Website : www.vikramuniv.ac.in

क्रमांक : 54 / कुल. कार्या. / 2026
दिनांक : 28.04.2026

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन द्वारा '२३वीं अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला' के अंतर्गत 'सद्भावना स्मारिका २०२५' का प्रकाशन किया जा रहा है।

वर्तमान समय में, जब हमारा राष्ट्र 'विकसित भारत–२०४७' के संकल्प की ओर अग्रसर है, ऐसे में सद्भावना, सांस्कृतिक चेतना, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक मूल्यों पर केंद्रित इस प्रकार के विमर्श अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रेरणादायी हैं। यह व्याख्यानमाला न केवल ज्ञान–विस्तार का माध्यम है, बल्कि समाज में सकारात्मक चिंतन एवं समन्वय की भावना को भी सुदृढ़ करती है।

मुझे विश्वास है कि यह स्मारिका विद्वानों के चिंतन को व्यापक समाज तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी तथा युवा पीढ़ी को राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रेरित करेगी।

इस उत्कृष्ट आयोजन हेतु आयोजक संस्था भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ।

अर्पण

(प्रो. अर्पण भारद्वाज)

अनिल जैन कालूहेड़ा
विधायक
विधानसभा उज्जैन-उत्तर (216)

क्रमांक –555

दिनांक 28/4/2026

शुभकामना–संदेश

अत्यंत प्रसन्नता हुई कि पद्मभूषण स्व. डॉ. शिवमंगल सिंह "सुमन" जी की स्मृति में, माह नवम्बर 2025 में "23वीं अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला" का आयोजन शैक्षणिक संस्थान भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन में किया गया। इस व्याख्यानमाला में देश के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों ने विकसित भारत 2047, पर्यावरण चेतना, संस्कृत साहित्य, सामाजिक सरोकार तथा जीवन प्रबंधन जैसे समसामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत हुए, इन महत्वपुर्ण विचारों को स्मारिका के रूप में प्रकाशित करना संस्थान का दायित्व हैं। देशहित में एक ही भावना एक ही भाव, "सद्भावना–सद्भाव" इसी उद्धेश्य से स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा हैं।

प्रसिद्ध समाजसेवी, शिक्षाविद्, कर्मयोगी स्व. कृष्णमंगल सिंह जी कुलश्रेष्ठ (एडवोकेट) द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थानों में क्रमशः भारतीय ज्ञानपीठ उज्जैन, श्रीपाल एजुकेशन सोसाइटी एवं श्री कृष्ण शिक्षण लोक परमार्थ समिति उज्जैन के माध्यम से मध्यप्रदेश में मूल्य आधारित शिक्षा के नए आयाम स्थापित कर एक अलग विशेष पहचान विकसित हुई हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन द्वारा प्रस्तुत "सद्भावना स्मारिका 2025" के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मेरी ओर से बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(अनिल जैन कालूहेड़ा)

कार्यालय : मनी पार्क कॉलोनी, मेन गेट के पास, आगर रोड़, उज्जैन (म.प्र.)
निवास : 59, दशहरा मैदान, क्षपणक मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) 98272 - 28494, 94796 - 28494 aniljain@gmail.com

आशीष सिंह
आई.ए.एस.
आयुक्त
उज्जैन सम्भाग, उज्जैन

आयुक्त कार्यालय, उज्जैन संभाग, उज्जैन
सम्राट विक्रमादित्य प्रशासनिक संकुल भवन, 'तृतीय तंल'
कोठी पैलेस रोड़, उज्जैन (म.प्र.) 456 010
दूरभाष : 0734-2511671(का.) 2511670(नि.)
ईमेल : commujjain@nic.in

अ.शा. पत्र क्र. : Q|स्तेनो|2026
दिनांक : 27|04|2026

"सन्देश"

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि भारतीय ज्ञान पीठ उज्जैन द्वारा कर्मयोगी स्व. श्री कृष्णमंगल सिंह कुलश्रेष्ठ जी की प्रेरणा से तथा पद्मभूषण प्रख्यात कवि डॉ. शिवमंगलसिंह "सुमन" की पावन स्मृति में 23वीं अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला का आयोजन नवम्बर 2025 में किया गया था। इस अवसर पर **"सद्भावना स्मारिका –2025"** का प्रकाशन किया जा रहा है। स्मारिका का प्रकाशन एक सृजनात्मक प्रयास है, जिससे पाठकों को विद्वानों के व्याख्यानों के संबंध में अद्यतन जानकारी प्राप्त होगी ।

"सद्भावना स्मारिका –2025" के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(आशीष सिंह)

प्रति,

श्री युधिष्ठिर कुलश्रेष्ठ,
अध्यक्ष,
अ.भा.सद्भावना व्याख्यानमाला समिति,
उज्जैन म.प्र.

शुभकामना संदेश

सद्भाव, सहअस्तित्व और परस्पर सम्मान किसी भी सभ्य एवं प्रगतिशील समाज की मूल आत्मा होते हैं। जब समाज में सकारात्मक विचारों का प्रवाह होता है, तब वह समाज न केवल सांस्कृतिक रूप से समृद्ध होता है, बल्कि राष्ट्रीय विकास की दिशा में भी दृढ़ता से अग्रसर होता है। ऐसे में विचार-विमर्श, संवाद और चिंतन के मंच समाज के बौद्धिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उज्जैन की प्रतिष्ठित संस्था **भारतीय ज्ञानपीठ** द्वारा विगत अनेक वर्षों से निरंतर आयोजित **अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला** इसी उद्देश्य की सार्थक अभिव्यक्ति है। यह व्याख्यानमाला केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि विविध क्षेत्रों के मनीषियों के विचारों का ऐसा संगम है, जो समाज में सकारात्मकता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने का कार्य करता है।

इन महत्वपूर्ण विचारों को **"सद्भावना स्मारिका-2025"** के रूप में प्रकाशित किया जाना एक अत्यंत सराहनीय एवं दूरदर्शी पहल है। निःसंदेह यह स्मारिका विचारों की उस समृद्ध धरोहर को संरक्षित करेगी, जो वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत तथा भावी पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

मैं भारतीय ज्ञानपीठ एवं अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला समिति, उज्जैन के इस उत्कृष्ट एवं जनहितकारी प्रयास के प्रति हार्दिक अभिनंदन प्रकट करता हूँ तथा **"सद्भावना स्मारिका-2025"** के सफल प्रकाशन एवं व्यापक प्रभाव की मंगलकामना करता हूँ।

(प्रदीप शर्मा)
पुलिस अधीक्षक,
जिला उज्जैन

मुकेश टटवाल
महापौर,उज्जैन

उज्जैन नगर पालिक निगमउज्जैन, 456010
कार्यालय – (0734) 2552660, 2535201
निवास– 1, महापौर विश्रामगृह
ग्राण्ड होटल परिसर, फ्रीगंज, उज्जैन
निवास–(0734) 2551541
फैक्स– (0734) 2535331, 2535200
मोबाईल– 9425093592
E-Mail: mayorujjain-mp@mp.gov.in

क्रमांक :– 463
उज्जैन, दिनांक :– 21.04.2026

शुभकामना– संदेश

अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि उज्जैन की सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थान भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा विगत कई वर्षो से अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला का आयोजन किया जा रहा है। पद्मभूषण डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी की स्मृति में एवं कर्मयोगी स्व. कृष्णमंगल कुलश्रेष्ठ जी की प्रेरणा से नवम्बर 2025 में इस आयोजन का यह 23 वॉ सफलतम वर्ष था। इस व्याख्यानमाला में देश के विभिन्न भागों से प्रख्यात चिंतकों, विचारकों और बुद्धिजीवियों द्वारा विकसित भारत 2047, पर्यावरण चेतना, संस्कृत साहित्य, सामाजिक सरोकार तथा जीवन प्रबंधन जैसे प्रासंगकि तथा सामाजिक विषयों पर प्रेरक और उपयोगी विचार व्यक्त किए गए जिससे राष्ट्रीय स्तर तक इस व्याख्यानमाला को विशेष ख्याती प्राप्त हुई। अत्यंत हर्ष का विषय है कि अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला समिति द्वारा इन सभी प्रेरक विचारों को संकलित करके 'सद्भावना स्मारिका 2025' के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। स्मारिका में प्रकाशित प्रबुद्ध चिंतकों एवं विचारकों के विचार समाज को हमेशा प्रेरणा एवं सद्मार्ग दिखाते रहेंगें।

'सद्भावना स्मारिका 2025' के प्रकाशन के अवसर मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

(मुकेश टटवाल)
महापौर

प्रति,
श्री संदीप कुलश्रेष्ठ,
सचिव,
अ.भा. सद्भावना व्याख्यानमाला समिति,
उज्जैन

विकसित भारत की यात्रा में रक्षा प्रौद्योगिकी का योगदान

दिनांक - 17-11-2025

माननीय सुधीर कुमार मिश्रा
भारत के सुप्रसिद्ध रक्षा वैज्ञानिक, पूर्व महानिदेशक
(ब्रह्मोस डीआरडीओ) एवं मंत्रालय भारत सरकार

भारतीय ज्ञानपीठ के सभी दर्शकों और रेडियो दस्तक के श्रोताओं को मेरा सादर नमस्कार। आज बहुत गौरव का अनुभव हो रहा है कि मैं डॉ. शिवमंगल सिंह ''सुमन'' जी की स्मृति में आयोजित इस व्याख्यानमाला में आपसे संवाद कर रहा हूँ। जब मैं स्कूल में था तब मैंने उनकी अनेक रचनाएँ पढ़ी थीं।

आज हम इस विषय पर चर्चा करेंगे कि हमारा देश भारत 2047 तक किस प्रकार एक विकसित देश बन सकता है। हमारे प्रधानमंत्री और भारत सरकार ने भी हमें इस बात के लिए प्रेरित किया है कि जब भारत अपना 100वाँ स्वतंत्रता दिवस मना रहा होगा, तब तक भारत एक विकसित देश बन चुका होगा।

विकसित देश बनने के लिए हमें क्या–क्या करना पड़ेगा ? कैसे करना पड़ेगा और क्यों करना पड़ेगा ? आज हम इन्हीं प्रमुख बिंदुओं पर बातचीत करेंगे।

जब हम अपने देश के बारे में विचार करते हैं, तो हमें यह देखना होता है कि हमारे संसाधन क्या हैं ? हमारे राजस्व के स्रोत क्या हैं ? और हमारे पास ऐसी कौन–कौन–सी शक्तियाँ हैं ? जिनके आधार पर हम अपने देश को आगे बढ़ा सकते हैं। सबसे पहले हम यह देखें कि हमारे पास क्या–क्या नहीं है । यदि आज हम देखें तो ऊर्जा के लिए आवश्यक कई संसाधन जैसे तेल और गैस हमारे पास पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं। इसके बाद जब हम अंतरराष्ट्रीय या वैश्विक स्तर पर देखते हैं, तो पाते हैं कि अधिकांश बड़े देश अपने हितों को ही प्राथमिकता देते हैं। इसलिए हमारे लिए ऐसा कोई स्वाभाविक या प्राकृतिक सहयोगी नहीं दिखाई देता जिसे हम पूरी तरह अपना मित्र मान सकें। हमारे पड़ोस के अनेक देशों में भी अस्थिरता की स्थिति रही है, और जिन देशों के साथ हमारे संबंध हैं, उनसे भी समय–समय पर हमारे मतभेद और संघर्ष होते रहे हैं।

यदि हम यह भी देखें कि हमारे पास ऐसे महत्त्वपूर्ण या क्रिटिकल मिनरल्स कितने हैं जिनका उपयोग करके हम वैश्विक स्तर पर अपने संसाधनों को एक बड़ी शक्ति में बदल सकें, तो उस दृष्टि से भी हमारी स्थिति बहुत अधिक सशक्त नहीं की जा सकती। लेकिन हमारे पास जो सबसे बड़ी शक्ति है, वह है 140 करोड़ बुद्धिमान भारतीय की, मैं उन्हें बुद्धिमान इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि हमारा देश हजारों वर्षों से अपनी बुद्धिमत्ता और चतुरता के बल पर समृद्ध रहा है। इसलिए यदि हमारी समृद्धि की कोई वास्तविक कुंजी है, तो वह हमारे यही 140 करोड़ भारतीय हैं। 140 करोड़ भारतीयों में से लगभग 65–70 करोड़ आज के समय में बहुत युवा हैं, अर्थात् उनकी आयु 35 वर्ष से कम है। जैसे–जैसे हमारी जनसंख्या बढ़ेगी और 2047 का वर्ष हमारे निकट आएगा, वैसे–वैसे इन युवाओं और नवयुवकों की संख्या भी बढ़ती जाएगी। मेरे अनुमान से यह संख्या लगभग 75–80 करोड़ तक पहुँच सकती है। यदि यह संख्या 75–80 करोड़ के आसपास पहुँचती

है, तो हमारे पास लगभग 80 करोड़ सक्षम मस्तिष्क होंगे। हमारे पास 80 करोड़ ऐसे उत्कृष्ट दिमाग होंगे, जिनका सही उपयोग, सही दिशा में नियोजन और उचित अवसर देकर हम भारत को एक विकसित देश बनाने में लगा सकते हैं। विकसित देश की परिभाषा भी थोड़ी भिन्न होती है।

आज भले ही हम कहें कि हमारा जीडीपी विश्व में पाँचवें स्थान पर है और आगे चलकर हम चौथे या तीसरे स्थान पर भी पहुँच सकते हैं, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या हम तीसरे स्थान से आगे बढ़कर दूसरे स्थान तक पहुँच पाएँगे? विकसित देश होने की एक और महत्त्वपूर्ण कसौटी है–प्रति व्यक्ति आय। इस संदर्भ में हमारी स्थिति अभी उतनी सशक्त नहीं है। कुछ समय पहले मैंने पढ़ा था कि इस सूचकांक में हमारा स्थान लगभग 142वें या 145वें के आसपास बताया जाता है। कई ऐसे देश, जो समग्र रूप से बहुत समृद्ध नहीं माने जाते, वहाँ भी प्रति व्यक्ति आय हमसे अधिक है। इसका अर्थ यह है कि हमारे देश में अभी भी बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं, मध्यम वर्ग में हैं, या ऐसे हैं जो रोज कमाते हैं और रोज ही अपनी आजीविका चलाते हैं। इसलिए केवल जीडीपी का बड़ा होना ही विकसित देश की पहचान नहीं है। हमें प्रति व्यक्ति आय को भी काफी ऊँचे स्तर तक ले जाना होगा। यदि हम इसे विश्व के शीर्ष दस देशों की श्रेणी के निकट ला सकें, तब ही हम वास्तव में विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।

अब प्रश्न आता है कि विकसित भारत बनाने के लिए किन–किन बातों की आवश्यकता होगी ? इसके लिए हमें अपने नागरिकों की मूलभूत आवश्यकताओं को उच्च स्तर पर सुनिश्चित करना होगा–जैसे उत्कृष्ट शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ, पौष्टिक भोजन, रहने के लिए अच्छे घर, सशक्त संचार व्यवस्था, एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर आदि। इसके साथ–साथ हमें अपनी औसत आयु को भी बढ़ाना होगा। यदि हम इसे कम से कम 85–90 वर्ष तक ले जा सकें, तो यह भी एक विकसित समाज की महत्वपूर्ण पहचान होगी। इन सबके अतिरिक्त भी अनेक ऐसे मानदंड और पैरामीटर हैं, जिन पर हमें गंभीरता से कार्य करना पड़ेगा। हमारी जो कुल जीडीपी है, उसे लगभग 30 ट्रिलियन डॉलर से अधिक तक ले जाना पड़ेगा। इसके लिए हमें अपने उन राज्यों पर विशेष ध्यान देना होगा जो अभी भी अपेक्षाकृत पिछड़े हैं। जब आय की बात आती है, तो मैं मध्य प्रदेश राज्य को अभी भी कई दृष्टियों से पिछड़ा मानता हूँ–चाहे वह आर्थिक दृष्टि से हो, औद्योगिक दृष्टि से हो या शैक्षिक दृष्टि से। लेकिन जहाँ तक मानव विकास या मानवीय मूल्यों की बात है, तो मुझे लगता है कि इस दृष्टि से मध्य प्रदेश देश में बहुत आगे खड़ा दिखाई देता है। कृषि के क्षेत्र में भी हमारी स्थिति काफी मजबूत है।

भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है, तो एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है–रक्षा प्रौद्योगिकी (डिफेंस टेक्नोलॉजी)। अब यह समझना आवश्यक है कि रक्षा प्रौद्योगिकी क्यों महत्त्वपूर्ण है।

यदि हम प्रथम विश्वयुद्ध को देखें, तो उस समय विश्व की बड़ी शक्तियों के बीच प्रभुत्व की प्रतिस्पर्धा थी। उस समय ब्रिटिश साम्राज्य, जर्मन साम्राज्य, ऑस्ट्रो–हंगेरियन साम्राज्य, उस्मानी (टर्किश) साम्राज्य और रूसी साम्राज्य जैसी शक्तियाँ वैश्विक प्रभाव के लिए संघर्ष कर रही थीं। इस संघर्ष में जिस देश की सैन्य शक्ति और तकनीकी क्षमता अधिक विकसित थी, वही अंततः

अधिक प्रभावी सिद्ध हुआ। इसके बाद दूसरा विश्व युद्ध हुआ। उस समय भी वैश्विक शक्ति संतुलन के लिए संघर्ष चल रहा था। युद्ध के दौरान कई देश इसमें शामिल होते गए और अंततः यूनाइटेड स्टेट्स एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आया। इन ऐतिहासिक घटनाओं से हमें एक महत्त्वपूर्ण सीख मिलती है—जब तक कोई राष्ट्र रक्षा प्रौद्योगिकी और सैन्य क्षमता के क्षेत्र में मजबूत नहीं होता, तब तक वह विश्व में अग्रणी स्थान प्राप्त करना कठिन पाता है। इसलिए यदि हम वास्तव में एक विकसित और प्रभावशाली भारत बनाना चाहते हैं, तो हमें अपनी रक्षा प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक ध्यान देना होगा।

मेरा एक और विचार है। आज यदि हम अपने देश को देखें, तो बड़े औद्योगिक शहरों की संख्या बहुत अधिक नहीं है— कुल मिलाकर शायद 10—12 प्रमुख शहर ही ऐसे हैं जिन्हें बड़े औद्योगिक केंद्र कहा जा सकता है। दूसरी ओर, हमारी जनसंख्या लगभग 140 करोड़ है और भविष्य में यह 150 या 160 करोड़ तक भी पहुँच सकती है। कई अनुमान यह भी कहते हैं कि यह संख्या लगभग 170—175 करोड़ के आसपास जाकर स्थिर हो सकती है और उसके बाद धीरे—धीरे कम होना शुरू हो सकती है। ऐसी स्थिति में यदि हमें इतनी बड़ी जनसंख्या को सुव्यवस्थित ढंग से बसाना है, तो हमें कम से कम 100 नए सुव्यवस्थित शहरों का निर्माण करना पड़ेगा, जो न सिर्फ पुणे और बेंगलुरु जैसे शहरों को टक्कर दे सकें, बल्कि उनसे भी बेहतर बन सकें। उनके भीतर जो आधारभूत संरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) है, उससे भी अधिक उन्नत और सुव्यवस्थित इन्फ्रास्ट्रक्चर इन नए शहरों में होना चाहिए। वर्तमान समय में हम देख रहे हैं कि दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, चेन्नई और हैदराबाद जैसे शहरों में विकास अपनी एक सीमा तक पहुँच चुका है। इसलिए जब ये 100 नए शहर बनाए जाएँ, तो मेरा मानना है कि उनमें से कम से कम 15 से 20 शहर हमारे मध्य प्रदेश में अवश्य होने चाहिए।

आप में से जो लोग इस व्याख्यानमाला को सुन रहे हैं, उनसे मेरा आग्रह है कि आप अपने—अपने राजनीतिक प्रतिनिधियों से इस विषय पर बात करें। उनसे कहें कि मध्य प्रदेश को आगे लाने का एक महत्त्वपूर्ण तरीका यह है कि हम अपने शहरों का विकास केवल शहर के केंद्र (डाउनटाउन) तक सीमित न रखें। हमें शहरों की परिधि का विस्तार करना होगा।

जब शहर का विस्तार होगा, उसका व्यास बढ़ेगा, तब रिंग रोड, दूसरी रिंग रोड और तीसरी रिंग रोड जैसी संरचनाएँ बनेंगी। इससे शहरों का विकास होगा, उद्योग आएँगे और हमारे क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ेंगी। इसी प्रकार हमारा देश एक विकसित भारत और हमारा प्रदेश एक विकसित मध्य प्रदेश बन सकेगा।

अब हम यह देखते हैं कि रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हम किस स्थान पर खड़े हैं। जैसा कि मैंने पहले कहा, यदि हमें विकसित राष्ट्र बनना है तो रक्षा प्रौद्योगिकी पर विशेष ध्यान देना ही पड़ेगाय इसके अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इस संदर्भ में मैं एक प्रसंग याद करना चाहता हूँ। जब मेरी चर्चा डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम से हो रही थी—जो मेरे गुरु रहे हैं और जिनके साथ मुझे कार्य करने का अवसर मिला—तब मैंने उनसे पूछा था कि हमें रक्षा क्षेत्र पर इतना अधिक व्यय

क्यों करना चाहिए। तब उनका उत्तर थाकृ "शक्ति ही शक्ति का सम्मान करती है।" इसलिए यदि हमारे देश को वास्तव में एक विकसित राष्ट्र बनना है, यदि हमें ऐसा देश बनाना है जिसकी विश्व में प्रशंसा हो, तो हमें रक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक ध्यान देना होगा। इसके पीछे अनेक तकनीकी कारण भी हैं। मैं स्वयं एक रक्षा वैज्ञानिक हूँ, तो आपको बता सकता हूँ कि इस समय हमारे देश में रक्षा के क्षेत्र में जो अनुसंधान और विकास का कार्य करने वाला प्रमुख संस्थान है, उसका नाम डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीआरडीओ) है। इसके अंतर्गत लगभग 25,000 वैज्ञानिक कार्यरत हैं।

जब भी यह प्रश्न आता है कि रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमें क्या करना चाहिए जिससे हमारा देश एक विकसित भारत बन सके, तो इसके लिए कई चरणों पर कार्य करना आवश्यक होता है। सबसे पहले हमें एक स्पष्ट नीति बनानी चाहिए। इसके बाद यह देखना चाहिए कि हमारे कौन–कौन से शक्ति स्तंभ हैं ? फिर हमें यह आकलन करना होगा कि वर्तमान समय में हम किस स्थिति में हैं।

हमें एक निष्पक्ष और गंभीर अध्ययन करना पड़ेगा कि आज हम कहाँ खड़े हैं और यदि हमें 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य तक पहुँचना है, तो उस दिशा में हमें किस प्रकार आगे बढ़ना पड़ेगा।

वास्तव में समस्या यह है कि आज प्रौद्योगिकी बहुत तेजी से बदल रही है। पहले हम यह सोचते थे कि एक दीर्घकालिक दृष्टि बनाकर और एक तकनीकी दस्तावेज तैयार करके, यदि हम उसे लगातार लागू करते रहें, तो अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। लेकिन आज जिस गति से प्रौद्योगिकी बदल रही है, उससे यह कार्य कुछ कठिन हो जाता है। फिर भी हमें यह अवश्य विचार करना होगा कि कौन–कौन सी ऐसी प्रौद्योगिकियाँ हैं जिन पर हमें विशेष रूप से काम करना चाहिए।

इसके बाद हमें यह देखना होगा कि हमारे कौन–कौन से संस्थान हैं और उन्हें हम किस प्रकार सशक्त बना सकते हैं या उनमें किस प्रकार के सुधार ला सकते हैं, जिससे वे और अधिक प्रभावी ढंग से तथा तेजी से प्रगति कर सकें। इसके साथ–साथ हमें कुछ प्रमुख राष्ट्रीय कार्यक्रम भी प्रारंभ करने होंगे। प्रमुख कार्यक्रमों से मेरा आशय ऐसे कार्यक्रमों से है जिनमें पूरे देश की उद्योग संस्थाएँ, प्रमुख संस्थान और शीर्ष वैज्ञानिक मिलकर कार्य करें। फिर हमें यह भी देखना होगा कि इन सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमें किस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा। साथ ही जो भी नीतियाँ बनाई जाएँ, उन्हें बहुत दृढ़ता और अनुशासन के साथ आगे बढ़ाना होगा।

इसके बाद एक और अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व आता है, जो किसी भी देश को विकसित राष्ट्र बनाने में बड़ी भूमिका निभाता है, और वह है–निर्यात नीति। मैं आपको बताना चाहूँगा कि हमारे देश का सबसे पहला बड़ा वेपन एक्सपोर्ट जिस पर व्यापक रूप से काम हुआ, वह ब्रह्मोस मिसाइल का निर्यात है। इस परियोजना पर मैंने स्वयं लगभग सात वर्षों तक कार्य किया। इन सात वर्षों के

दौरान मुझे बहुत से प्रश्नों के उत्तर देने पड़े और कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा। मैं यह कह सकता हूँ कि जो देश इसे खरीदना चाहते थे, उनके साथ काम करना अपेक्षाकृत आसान था। लेकिन हमारे अपने देश के भीतर ब्यूरोक्रेटिक बाधाएँ इतनी अधिक थीं कि उन्हें पार करना बहुत कठिन हो गया। इतनी कठिनाइयाँ आईं कि यदि मैं उनके बारे में विस्तार से बताऊँ तो उसके लिए मुझे अलग से दो–तीन घंटे का व्याख्यान देना पड़ेगा।

इसके बाद हमें अपना एक स्पष्ट रोडमैप बनाना पड़ेगा, और वह भी माइलस्टोन के साथ। यदि हम 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना चाहते हैं, तो हमें यह निर्धारित करना पड़ेगा कि 2046 में हमारी अर्थव्यवस्था कितनी होगी, 2045 में कितनी होगी, 2040 में कितनी होगी, 2030 में कितनी होगी, 2028 में कितनी होगी और 2026 में कितनी होगी। वास्तव में 2026 का माइलस्टोन ही यह तय करेगा कि हम 2047 तक एक विकसित भारत बन पाएँगे या यह केवल एक सपना ही रह जाएगा। इतिहास में कई सपने ऐसे रहे हैं जो पूरे नहीं हो पाए। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने भी यह सपना व्यक्त किया था कि 2020 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बने, लेकिन वह लक्ष्य पूरा नहीं हो सका। उसके पीछे अनेक कारण रहे। अब हमने 2047 का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसलिए यह आवश्यक है कि यह लक्ष्य केवल एक कल्पना या सपना न रह जाए, बल्कि वास्तविकता बने। इसे वास्तविकता बनाने के लिए हमें अपने आप से और दूसरों से सच बोलना पड़ेगा। हमें स्पष्ट रूप से तय करना होगा कि 2026 के लक्ष्य क्या हैं और क्या हम उन लक्ष्यों तक पहुँच पा रहे हैं या नहीं। इसी प्रकार 2027 के लक्ष्य क्या होंगे और क्या हम उन्हें प्राप्त कर पाएँगे या नहीं–यह भी लगातार देखना पड़ेगा।

सिर्फ यह कह देने से काम नहीं चलेगा कि हम दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए हैं या चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे हैं। यह बातें प्रेरणा देने के लिए अच्छी हो सकती हैं, लेकिन केवल इन्हीं से लक्ष्य प्राप्त नहीं होता। मुझे एक प्रसिद्ध प्रबंधन विशेषज्ञ का कथन याद आता है, जो जनरल मोटर्स के शीर्ष पद पर रहे थे। इस समय उनका नाम मुझे तुरंत याद नहीं आ रहा हैय जब याद आएगा तो मैं अवश्य बताऊँगा। उन्होंने कहा था कि यदि आप किसी भी कार्य में हुई प्रगति को वास्तव में समझना चाहते हैं, तो उसे संख्याओं के माध्यम से मापना ही सबसे सही तरीका है। इसलिए हमें बहुत जल्द, आज या आने वाले कुछ महीनों के भीतर ही, इन सभी संख्यात्मक लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना पड़ेगा। अन्यथा यह लक्ष्य केवल एक सपना बनकर रह जाएगा।

यदि हमें एक विकसित देश बनना है, तो उसके लिए हमें आज किन–किन प्रौद्योगिकियों पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा। सबसे पहले जिस क्षेत्र पर हमें ध्यान देना चाहिए, वह है क्वांटम कंप्यूटिंग। इस पर ध्यान इसलिए देना आवश्यक है क्योंकि आने वाले लगभग दस वर्षों में यही वह क्षेत्र होगा जो प्रौद्योगिकी की दिशा को निर्धारित करेगा। क्वांटम कंप्यूटिंग के माध्यम से हम अनेक जटिल समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। क्वांटम कंप्यूटिंग का एक बड़ा उपयोग दूरसंचार क्षेत्र में होगा। जब दूरसंचार की बात आती है, तो आपने स्वयं देखा होगा कि 2G से लेकर 5G तक की

यात्रा ने हमारे जीवन को कितना बदल दिया है। यदि हम थोड़ा पीछे जाकर सोचें–2G से 3G आया, 3G से 4G आया और फिर 4G से 5G आया–तो हर चरण ने हमारे जीवन में एक बड़ा परिवर्तन किया। यदि आज हमें फिर से 2G या उससे भी पुराने स्तर पर ले जाकर खड़ा कर दिया जाए, तो हमें ऐसा लगेगा मानो हम बहुत पुराने समय में पहुँच गए हों। इसी प्रकार जब आगे 6G, 7G या उससे भी आगे की तकनीकें आएँगी, तो हमारे जीवन में और भी व्यापक परिवर्तन देखने को मिलेंगे। हमारे जीवन की शैली में एक प्रकार का पूर्ण रूपांतरण होगा।

दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र है कंप्यूटेशन और इंटरनेट। आप कल्पना कीजिए कि भविष्य में एक क्वांटम चिप आपके मोबाइल फोन में लगी होगी और उसका गणनात्मक सामर्थ्य आज दुनिया में मौजूद अनेक कंप्यूटरों और सुपर कंप्यूटरों की संयुक्त क्षमता से भी अधिक हो सकता है। यह एक ऐसी संभावना है जिसकी आज हम पूरी तरह कल्पना भी नहीं कर सकते।

यदि हम रक्षा क्षेत्र की बात करें, तो वहाँ भी क्वांटम तकनीक का व्यापक उपयोग होगा। उदाहरण के लिए क्वांटम रडार, क्वांटम संचार और क्वांटम कंप्यूटिंग–ये सभी भविष्य की रक्षा प्रणालियों का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनेंगे। हमारे मिसाइल, रॉकेट, टैंक और ड्रोन जैसे अनेक हथियार प्रणालियों में भी इन प्रौद्योगिकियों का उपयोग होगा। इसके अतिरिक्त एक और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी है–क्रिप्टो तकनीक। क्रिप्टो तकनीक के बिना हमारे जीवन से जुड़े अनेक डिजिटल संसाधन सुरक्षित नहीं रह सकते। इसलिए हमें इस क्षेत्र में भी गंभीरता से और मौलिक रूप से कार्य करना होगा। जब क्रिप्टो करेंसी की चर्चा आती है, तो अभी तक हमारे देश में इसे पूर्ण रूप से कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं हुई है। दूसरी ओर, आयकर विभाग यह कहता है कि यदि किसी व्यक्ति को क्रिप्टो से लाभ होता है, तो उस पर कर लगाया जाएगा। इसलिए स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि यदि उस पर कर लगाया जा रहा है, तो उसे स्पष्ट रूप से वैधानिक स्वरूप भी दिया जाना चाहिए। इसके लिए हमें अभी से एक प्रौद्योगिकी और नीति संबंधी योजना बनानी होगी। हमें यह देखना होगा कि क्रिप्टो को किस प्रकार एक व्यवस्थित और सुरक्षित ढाँचे में वैधानिक बनाया जा सकता है। यदि इस दिशा में हमने बहुत अधिक विलंब किया, तो विश्व की आर्थिक व्यवस्था में होने वाले संभावित परिवर्तनों के लिए हम तैयार नहीं रह पाएँगे।

कभी–कभी यह भी सुनने में आता है कि भविष्य में कुछ बड़े देश अपनी मौजूदा मुद्रा व्यवस्था में परिवर्तन कर सकते हैं और नई डिजिटल या क्रिप्टो आधारित प्रणालियों की ओर बढ़ सकते हैं। यदि ऐसी कोई स्थिति उत्पन्न होती है, तो हमें यह विचार करना होगा कि उसके लिए हमारी तैयारी क्या है। इसलिए हमारे नीति–निर्माताओं को इस विषय पर गंभीरता से विचार करना होगा कि यदि वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में इस प्रकार का परिवर्तन होता है, तो भारत की रणनीति क्या होगी ?

इसके बाद हमें अपने एम्युनेशन कारखानों तथा रक्षा उत्पादन प्रणाली के बारे में भी सोचना होगा। सामान्यतः रक्षा उपकरणों को हमारी सशस्त्र सेनाएँ 10 वर्ष, 15 वर्ष या 20 वर्ष की उपयोग अवधि को ध्यान में रखकर खरीदती हैं। उनकी एक निश्चित शेल्फ लाइफ या उपयोग

अवधि मानी जाती है। लेकिन अब जो नई प्रौद्योगिकियाँ सामने आ रही हैं–जैसे ड्रोन, मानवरहित युद्धक वाहन और मानवरहित जल–आधारित वाहन–इनकी तकनीक बहुत तेजी से बदल रही है। इन क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का स्वरूप हर दो या तीन वर्ष में ही बदल सकता है। ऐसी स्थिति में यदि हम समय के साथ अपनी तकनीक को अद्यतन नहीं करेंगे, तो आधुनिक युद्ध की परिस्थितियों में प्रतिस्पर्धा करना और विजय प्राप्त करना कठिन हो जाएगा। यदि हम आज बड़े पैमाने पर हथियार खरीद लेते हैं और उन पर अपना अधिकांश धन खर्च कर देते हैं, लेकिन उनका उपयोग दो वर्षों के भीतर नहीं होता, तो वे तकनीकी दृष्टि से पुराने और अप्रासंगिक हो सकते हैं। इसलिए हमें केवल खरीद पर निर्भर रहने के बजाय एक मजबूत क्षमता विकसित करनी होगी। ऐसी क्षमता, जिसके आधार पर आवश्यकता पड़ने पर हम तेजी से उत्पादन कर सकें। उदाहरण के लिए, यदि आवश्यकता हो तो हम हर महीने सैकड़ों या हजारों ड्रोन बना सकें, प्रतिदिन बड़ी संख्या में मानवरहित युद्धक वाहन तैयार कर सकें।

आज हम जितने लड़ाकू विमान एक वर्ष में बनाते हैं, हमें यह विचार करना होगा कि क्या हम उस संख्या को कई गुना बढ़ा सकते हैं। अर्थात हमें अपनी निर्माण क्षमता को इस स्तर तक विकसित करना होगा कि आवश्यकता पड़ने पर हम उत्पादन को अत्यधिक तेजी से बढ़ा सकें। इसके लिए हमें उन्नत निर्माण प्रौद्योगिकी, प्रभावी उत्पादन प्रक्रियाएँ और समुचित तकनीकी विकास पर विशेष ध्यान देना होगा। जब हमारे पास इस प्रकार की क्षमता होगी, तब हम न केवल अपनी सुरक्षा के लिए सदैव तैयार रहेंगे, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अन्य देशों को भी अपने रक्षा उत्पादों का निर्यात कर सकेंगे। निर्यात करने के अनेक लाभ होते हैं। पहला यह कि इससे सीधे राजस्व प्राप्त होता है। दूसरा, इससे अंतरराष्ट्रीय मित्रता मजबूत होती है। और तीसरा, जो देश हमारे उत्पादों को खरीदते हैं, उनकी एक प्रकार की निर्भरता हमारे ऊपर बन जाती है। इसलिए हमें ऐसी निर्माण क्षमता और प्रौद्योगिकी विकसित करनी होगी, जो वर्तमान में पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त, हमें अपने स्टार्टअप परिवेश को भी सशक्त बनाना होगा। यह समझना आवश्यक है कि केवल डीआरडीओ सभी प्रौद्योगिकियों का विकास नहीं कर सकता। इसके पीछे कई कारण हैं, जिन पर हम कभी और विस्तार से चर्चा कर सकते हैं। इसलिए हमें एक मजबूत स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और एक सुदृढ़ निर्माण अर्थव्यवस्था का निर्माण करना होगा।

यदि हम आज की स्थिति देखें, तो भारत की तुलना इजराइल से की जा सकती है। इजराइल के पास भी तेल, गैस जैसे ऊर्जा संसाधन नहीं हैं। वहाँ की सबसे बड़ी शक्ति उसके लोग और उनकी बुद्धिमत्ता है। हमारे देश की स्थिति भी कुछ हद तक ऐसी ही है–हमारे पास भी सबसे बड़ी शक्ति हमारे लोग और उनकी क्षमता है। वर्तमान में यदि हम स्टार्टअप के क्षेत्र को देखें, तो इजराइल में अत्यंत सफल स्टार्टअप्स की बड़ी संख्या है। हमारे देश में भी अनेक सफल स्टार्टअप्स हैं, लेकिन हमें उनकी संख्या को सैकड़ों से बढ़ाकर लाखों तक ले जाना होगा। इसके लिए सरकार को आवश्यक नीतिगत परिवर्तन करने होंगे। नीतिगत परिवर्तन का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम लोगों को आमंत्रित करें कि वे रक्षा क्षेत्र में आएँ। वास्तविक परिवर्तन तब होगा जब हम उन

जटिल नियमों और प्रक्रियाओं को सरल बनाएँगे, जो इस क्षेत्र में प्रवेश को कठिन बनाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आज कोई व्यक्ति एक स्टार्टअप शुरू करना चाहता है, तो उसे लगभग 100 से 200 विभिन्न नियमों और औपचारिकताओं का पालन करना पड़ता है। इन प्रक्रियाओं को पूरा करने में ही लगभग छह से आठ महीने का समय लग जाता है। इस प्रकार की जटिलताएँ कम किए बिना हम तेजी से नवाचार और विकास की दिशा में आगे नहीं बढ़ सकते।

यदि आप एक प्रौद्योगिकी आधारित स्टार्टअप स्थापित करना चाहते हैं, तो इसमें और भी अधिक समय और प्रक्रियाएँ लगती हैं। जबकि यदि आप यूएई, सिंगापुर या इजराइल जैसे देशों में जाएँ, तो वहाँ एक कंपनी एक या दो दिन में ही स्थापित हो जाती है। इसके बाद बात आती है फंडिंग की। किसी भी स्टार्टअप को आगे बढ़ने के लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती है। अब प्रश्न यह है कि क्या हमारे बैंक बिना किसी गारंटी के ऐसे स्टार्टअप को ऋण देने के लिए तैयार हैं? इस स्थिति में सरकार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। सरकार को आगे आकर यह सुनिश्चित करना होगा कि वह ऐसे स्टार्टअप्स को वित्तीय सहायता, आवश्यक आदेश और निरंतर सहयोग प्रदान करेगी, ताकि वे स्थिर रूप से कार्य कर सकें। यह एक बड़ा परिवर्तन है, जिसके लिए हमें अपने प्रशासनिक दृष्टिकोण और कार्य–प्रणाली में बदलाव लाना होगा। इसके बाद यदि हम वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें, तो पृथ्वी का लगभग 70 प्रतिशत से अधिक भाग समुद्र से घिरा हुआ है। इसलिए हमें समुद्र की सतह और समुद्र के भीतर–दोनों ही स्तरों पर–अपनी रक्षा क्षमताओं को विकसित करना होगा। आज हम अपने देश में अत्याधुनिक युद्धपोत बना रहे हैं, और यह भी घोषित किया जा चुका है कि अब हम युद्धपोतों के लिए अन्य देशों पर निर्भर नहीं रहेंगे। इसी प्रकार की क्षमता हमें पनडुब्बियों के क्षेत्र में भी विकसित करनी होगी, ताकि हम न केवल अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें, बल्कि भविष्य में उनका निर्यात भी कर सकें। यदि हम आगे के क्षेत्रों की बात करें, तो एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है–साइबर प्रौद्योगिकी। इसका अर्थ है इंटरनेट पर सुरक्षित रूप से कार्य करने की व्यवस्था विकसित करना। यह जानकर आश्चर्य होता है कि हम जिस इंटरनेट का प्रतिदिन उपयोग करते हैं, वह वास्तव में उसके कुल स्वरूप का बहुत छोटा हिस्सा है। सामान्य उपयोगकर्ता जीवन भर इंटरनेट का केवल एक सीमित भाग ही देख पाता है। शेष बहुत बड़ा हिस्सा तथाकथित डार्क नेटवर्क में होता है, जहाँ अलग प्रकार की संरचनाएँ और व्यवस्थाएँ कार्य करती हैं, जो सामान्य सुरक्षा प्रणालियों से भिन्न होती हैं। इसलिए हमें साइबर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी व्यापक और गहन कार्य करना होगा।

इसके अतिरिक्त एक और महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है–अंतरिक्ष (स्पेस), जिस पर हमें गंभीरता से कार्य करना आवश्यक है। तो कुल मिलाकर यदि हम रक्षा प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना चाहते हैं, तो हमें इन सभी क्षेत्रों में गंभीरता से कार्य करना पड़ेगा। आप सभी ने इतने ध्यानपूर्वक मेरी बातों को सुना, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं भारतीय ज्ञानपीठ और रेडियो दस्तक का आभार व्यक्त करता हूँ।

अध्यक्षीय उद्बोधन

दिनांक - 17-11-2025

माननीय डॉ. मोहन गुप्त
वरिष्ठ शिक्षाविद्, विचारक पूर्व कुलगुरु महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन

माननीय श्री कृष्ण मंगल सिंह कुलश्रेष्ठ जी की प्रेरणा से प्रारंभ इस सद्भावना व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र के सम्माननीय वक्ता सुधीर कुमार मिश्रा जी ने इस व्याख्यानमाला के विषय में मुख्य वक्तव्य दिया है। वे एक विशेषज्ञ विद्वान हैं और डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीआरडीओ) के महानिदेशक रहे हैं। इसलिए उन्होंने अपना वक्तव्य वर्ष 2047 तक भारत को विकसित कैसे बनाया जाए, इस पर अपने विचार को केंद्रित रखा और रक्षा प्रौद्योगिकी के अलावा भी भारत को विकसित बनाने के लिए क्या–क्या अन्य पैरामीटर हैं, क्या–क्या अन्य आवश्यकताएँ हैं, उनका भी उन्होंने उल्लेख किया। वे एक विशेषज्ञ हैं और विशेषज्ञ की विशेषता यह होती है कि वह अपनी विशेषज्ञता की सीमा में भविष्य की दृष्टि देता है, विजन प्रस्तुत करता है। यह उसकी विशेषता भी है और एक रूप में उसकी सीमा भी है, क्योंकि विशेषज्ञता के संदर्भ में कई बार व्यापक परिप्रेक्ष्य छूट जाता है।

उन्होंने प्रारंभ में जो बात कही कि "शक्ति ही शक्ति का सम्मान करती है", यह बात उन्होंने अपनी श्री अब्दुल कलाम साहब के साथ हुई मुलाकात के संदर्भ में कही थी, जब वे उनके साथ कार्य कर रहे थे। यह बात पूरी तरह सही है कि इस विश्व के क्रियाकलाप में शक्ति ही एकमात्र नियामक होती है। अर्थात शक्ति–संतुलन ही सदैव निर्णायक भूमिका निभाता है। कोई दूसरा तत्व इसमें वास्तविक रूप से नियामक नहीं होता। न्याय व्यवस्था या प्रशासन भी उसी सीमा तक प्रभावी होता है, जिस सीमा तक वह शक्तिशाली होता है। उससे अधिक शक्ति के सामने वह प्रभावी नहीं रह पाता। इसलिए मैं इस बात से सहमत हूँ कि "शक्ति ही शक्ति का सम्मान करती है।" अतः विकास की पहली आवश्यकता यह है कि कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली बने, और शक्तिशाली बनने में रक्षा प्रौद्योगिकी का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि यदि कोई राष्ट्र रक्षा के क्षेत्र में सशक्त नहीं है, तो उसे वास्तविक अर्थों में शक्तिशाली नहीं माना जा सकता, भले ही वह आर्थिक या राजनीतिक रूप से कितना ही प्रभावशाली क्यों न हो। इस दृष्टि से भी मैं उनसे सहमत हूँ।

उन्होंने कुछ उदाहरण दिए, जो भारत की विशेषताओं को रेखांकित करते हैं, और उनका विशेष आग्रह यहाँ की युवा जनसंख्या पर था, जिसे वे "जनांकिकीय लाभांश" कहते हैं। उनके अनुसार हमारे पास बड़ी संख्या में सक्षम और प्रतिभाशाली मस्तिष्क हैं, और इसी के आधार पर हम 2047 तक विकसित भारत की यात्रा पूर्ण कर सकते हैं। इसके लिए क्या–क्या करना होगा, इस पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि हमारी कुल जीडीपी की स्थिति संतोषजनक है, किंतु प्रति व्यक्ति आय अभी भी कम है, जिसे बढ़ाना आवश्यक है। साथ ही, हमें नए शहरों का विकास करना होगा, ताकि बढ़ती हुई जनसंख्या को व्यवस्थित रूप से बसाया जा सके। इसके

अतिरिक्त, हमारी रक्षा क्षमता को भी सुदृढ़ करना आवश्यक है। उनकी मान्यता है कि हम केवल हथियार बनाकर नहीं रख सकते, क्योंकि यह आवश्यक नहीं कि वे हर समय प्रभावी बने रहें, बल्कि हमें ऐसी रक्षा क्षमता विकसित करनी होगी कि आवश्यकता पड़ने पर हम त्वरित रूप से हथियारों का निर्माण कर सकें। उनका दृष्टिकोण अत्यंत स्पष्ट और व्यावहारिक है।

एक सपाट, सीधी सड़क पर यदि कोई यात्रा करता है, तो उसे किन–किन मंजिलों का सामना करना पड़ेगा और वह किस प्रकार अपनी मंजिल तक पहुँच सकता है–यह उनका विजन है, यह उनकी दृष्टि है, जो अपने आप में सही है। मैं उसके दूसरे पहलू की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। यह केवल भौतिक या भौतिकवादी दृष्टिकोण का एक पक्ष है, लेकिन जब शासन या प्रशासन की बात आती है, तो सामाजिक सरोकारों और हमारी जनता की प्रकृति को भी ध्यान में रखना आवश्यक होता है। मेरा मानना है कि यदि परिस्थितियाँ अनुकूल हों, मार्ग स्पष्ट और व्यवस्थित हो, तो उनके द्वारा सुझाए गए तरीके और दृष्टिकोण के आधार पर हम 2047 तक विकसित राष्ट्र बन सकते हैं। किंतु यहाँ दो बातें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। पहली बात यह है कि इस प्रकार की नीतियाँ बनाने वाले प्रायः यह मान लेते हैं कि समय एक रेखीय प्रक्रिया है, जबकि वास्तविकता में समय रेखीय नहीं होता। हमारी अवधारणा में तो यह बिल्कुल भी रेखीय नहीं है। इसमें अनेक मोड़ आते हैं, कई बार यूटर्न लेने पड़ते हैं और कई बार मार्ग अवरुद्ध भी हो जाता है। वर्तमान में हम 2025 में हैं और 2047 तक पहुँचने में अभी लगभग 22 वर्ष का समय है। इन 22 वर्षों में लगभग चार चुनाव होने वाले हैं और भारतीय लोकतंत्र की प्रकृति को देखते हुए ये चुनाव कई बार विकास की प्रक्रिया में व्यवधान भी उत्पन्न करते हैं। हमें इन परिस्थितियों से होकर ही आगे बढ़ना होगा। इसी प्रकार, जिस जनांकिकीय लाभांश की बात की जा रही है, वह भी केवल विशेष परिस्थितियों में ही प्रभावी होता है इस तथ्य को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

विश्व के चिंतक भी इस पर विचार करते हैं कि लोक अत्यंत अनिश्चित होता है। यह बहुमुखी होता है–अर्थात् उसकी अनेक दिशाएँ होती हैं, वह दुराराध्य भी होता है और अस्थिर भी होता है। लोक की इस प्रकृति को समझना बहुत आवश्यक है। इसलिए किसी भी राष्ट्र की पहली आवश्यकता यह है कि अपने लोगों को, विशेषकर युवा वर्ग को, जो कर्मशील है, इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाए कि वह विकास की दिशा में कार्य करे, न कि विध्वंसक बने। हमने अपने आसपास भी देखा है कि जिसे जनांकिकीय लाभांश कहा जाता है, वही कभी–कभी विनाशकारी रूप भी ले सकता है। यदि सही प्रशिक्षण और उचित दिशा न दी जाए, तो वही शक्ति विध्वंस का कारण भी बन सकती है। हमने उदाहरण के रूप में देखा है कि किस प्रकार पड़ोसी देश नेपाल में उग्र भीड़ ने कुछ ही समय में व्यापक नुकसान पहुँचा दिया। वहाँ के महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक स्थलों को क्षति पहुँचाई गई और अनेक महत्वपूर्ण अभिलेखों को नष्ट कर दिया गया। यद्यपि भारत में ऐसी स्थिति की संभावना बहुत कम है।

चूंकि भारत एक विविधता वाला देश है और लोगों के हृदय में एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण भी

विद्यमान है, इसलिए यहाँ ऐसी स्थिति की संभावना कम प्रतीत होती है। फिर भी यह सावधानी अत्यंत आवश्यक है। तो प्रश्न यह है कि क्या किया जाए, ताकि मिश्रा जी द्वारा बताए गए मार्ग पर हम बिना किसी बाधा के आगे बढ़ सकें और सभी अवरोधों को पार कर सकें। हमारे शास्त्र इस संबंध में हमें स्पष्ट मार्गदर्शन देते हैं। तीन बातें विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। पहली बात यह है कि चाणक्य ने कहा है कि किसी भी शासन में "प्रकृति संपन्न" अत्यंत आवश्यक होती है। "प्रकृति संपन्न" एक तकनीकी शब्द है, जिसका अर्थ है संपूर्ण प्रशासनिक तंत्र, जिसमें सेना भी सम्मिलित होती है। यदि यह तंत्र असंतुलित हो जाए, तो वह स्वयं राष्ट्र के लिए समस्या बन सकता है।

सौभाग्य से भारत में प्रशासनिक व्यवस्था नियंत्रित और संतुलित है, इसलिए आवश्यक है कि उसे और अधिक सुदृढ़, प्रशिक्षित और अनुशासित बनाया जाए। चाणक्य ने यहाँ तक कहा है कि यदि यह प्रकृति वर्ग शुद्ध, ईमानदार और प्रशिक्षित हो, तो बिना किसी सशक्त नेतृत्व के भी राष्ट्र का संचालन संभव हो सकता है। अतः इस पक्ष पर विशेष ध्यान देना होगा। दूसरी बात, जिस जनांकिकीय लाभांश की चर्चा की गई है, उसे प्रभावी बनाने के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती। केवल कौशल विकास को ही शिक्षा मान लेना उचित नहीं है। शिक्षा का प्रथम उद्देश्य मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाना होता है, जो आज पर्याप्त रूप से होता हुआ नहीं दिखाई देता। इसलिए यदि हमें भविष्य में एक विकसित राष्ट्र बनना है, तो शिक्षा पर गंभीर और समग्र ध्यान देना होगा। केवल संख्या बढ़ाने से कार्य नहीं चलेगा, बल्कि अनुशासनपूर्ण और मूल्याधारित शिक्षा प्रदान करनी होगी। वर्तमान में स्थिति यह है कि दसवीं के बाद अनेक विद्यार्थी विद्यालयों से दूर हो जाते हैं, इसमें सुधार आवश्यक है। प्रशासन के क्षेत्र में भी दो महत्वपूर्ण बातें हैं। पहली, हमारे ऋषियों ने कहा है कि दंड व्यवस्था अत्यंत आवश्यक होती है, क्योंकि बिना दंड के समाज में अनुशासन बनाए रखना कठिन होता है। वर्तमान में हमारी दंड व्यवस्था अपेक्षाकृत कमजोर दिखाई देती है और लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह एक चुनौती भी है कि दंड प्रक्रिया कई बार शिथिल हो जाती है, जिससे समाज में अव्यवस्था बढ़ने लगती है। इसलिए आवश्यक है कि दंड व्यवस्था को प्रभावी बनाया जाए, क्योंकि बिना उचित दंड के प्रशासनिक व्यवस्था को संतुलित रखना संभव नहीं है।

दूसरे, सबके मूल में जो तत्व है, वह धर्म है। धर्म को लोग सही रूप में समझ नहीं पाए हैं, क्योंकि उसका अनुवाद "रिलिजन" के रूप में किया गया, जबकि धर्म का वास्तविक अर्थ है—दायित्वबोध। व्यक्ति का जो कर्तव्य है, उसका निष्ठापूर्वक निर्वाह करना ही धर्म है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को पढ़ाता है, यह उसका धर्म है। व्यापारी अपने व्यवसाय को समाज के हित में संचालित करते हुए संस्था के लाभ का ध्यान रखता है, यह उसका धर्म है। क्षत्रिय देश की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करता है, यह उसका धर्म है। इसलिए महर्षि वेदव्यास ने इस संदर्भ में अत्यंत स्पष्ट और महत्वपूर्ण बात कही है। उन्होंने कहा कि मैं हाथ उठाकर पुकार रहा हूँ, पर कोई सुन नहीं रहा है। धर्म से ही अर्थ और काम—दोनों की सिद्धि होती है। जिस विकास की बात की जा

रही है, वह भी धर्म से ही संभव है, और जिन कामनाओं की पूर्ति की बात की जाती है, वह भी धर्म के माध्यम से ही होती है। फिर भी प्रश्न यह है कि उस धर्म का पालन लोग क्यों नहीं करते? यह अत्यंत विचारणीय है। धर्म का पालन व्यक्ति के संस्कारों से होता है, और यदि संस्कारों से वह संभव न हो, तो उसे सुनिश्चित करने के लिए दंड व्यवस्था की आवश्यकता होती है। इसलिए दंड व्यवस्था का सुदृढ़ होना अनिवार्य है।

यह मैंने विषय का एक दूसरा पहलू प्रस्तुत किया है। इसका उद्देश्य केवल यह है कि यदि दंड व्यवस्था, शिक्षा और दायित्वबोध पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया, तो समाज में संतुलन बनाए रखना कठिन हो जाएगा। मनुष्य की मूल प्रकृति अधोगामी मानी गई है, इसलिए उसे सही दिशा में बनाए रखने के लिए दंड व्यवस्था और अनुशासन आवश्यक होते हैं। अतः लोगों का प्रशिक्षण, विशेषकर नेतृत्व वर्ग और प्रशासनिक वर्ग का प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है। साथ ही शिक्षा और उचित दंड व्यवस्था के माध्यम से समाज में दायित्वबोध जागृत करना भी अनिवार्य है। तभी हम अपने मार्ग में आने वाली बाधाओं, अवरोधों और कठिनाइयों को पार करते हुए विकास की मंजिल तक पहुँच सकेंगे।

मैंने यहाँ विषय के कुछ अन्य आयामों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। मिश्रा जी ने जो कहा है, वह अपने स्थान पर पूर्णतः सत्य है, किंतु उसे साकार करने के लिए प्रशासनिक और सामाजिक स्तर पर जिन आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए, यदि वे पूरी नहीं की गईं, तो 2047 तक विकसित भारत का जो दृष्टिकोण है, वह केवल कल्पना बनकर रह जाएगा।

हम महाकाल से प्रार्थना करते हैं कि हमारे प्रशासकों और शासकों को ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करें कि वे सही दिशा में कार्य करें। भारत की सामान्य जनता प्रायः सही सोच रखने वाली होती हैय यह हमारे देश की विशेषता है। इसलिए हमारी यही कामना होनी चाहिए कि हमारा प्रशासनिक वर्ग, हमारा शिक्षक वर्ग और हमारा नेतृत्व वर्ग सही मार्ग का अनुसरण करे, तो हम निश्चित रूप से 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। बहुत–बहुत धन्यवाद

संस्कृत कविता में लोक जीवन

दिनांक - 18-11-2025

माननीय प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
पूर्व कुलपति केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

मुझे कर्मयोगी स्व. कृष्णमंगल सिंह कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से पद्मभूषण डॉ. शिव मंगल सिंह सुमन की स्मृति में स्थापित 23वीं अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित होकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

मैं "संस्कृत साहित्य में लोक जीवन" विषय पर कुछ चर्चा करूँगा। संस्कृत भाषा और उसके साहित्य के संबंध में सामान्य धारणा, यहाँ तक कि शिक्षित वर्ग में भी, यह है कि यह ज्ञान की अनुपम निधि है। प्राचीन ऋषियों, मुनियों, दार्शनिकों और विचारकों के उदात्त एवं गहन चिंतन की शास्त्रीय परंपराओं की यह संवाहिका रही है। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य उच्च कोटि का साहित्य है, जिसमें धीरोदात्त नायक और महान चरित्रों का वर्णन मिलता है। किंतु जब हम विद्यार्थी थे और आधुनिक साहित्य तथा अन्य भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करते थे, तब हमारे मन में यह प्रश्न उठता था कि इस साहित्य में सामान्य जनजीवन का चित्रण कहाँ है। क्योंकि ऐसा संभव नहीं है कि साहित्य की रचना हो और उसमें जनजीवन का चित्रण न हो। यह प्रश्न मेरे मन में बना रहा। इसी कारण मैंने संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया और उसके परिणामस्वरूप जो तथ्य और कविताएँ मेरे सामने आईं, उनके आधार पर मैं कुछ विचार प्रस्तुत करूँगा। एम.ए. में हमें "दशरूपक" नामक एक ग्रंथ पढ़ाया जाता था। उसमें चिंताचारी भाव के उदाहरण के रूप में एक श्लोक था, जो मेरे मन में विशेष रूप से अंकित हो गया। उस श्लोक का भाव इस प्रकार है—पति वृद्ध है, वह खेत के मचान पर चला गया है, वह अंधा भी है, फिर भी वहाँ गया है। घर में अन्न का अभाव है, कुछ भी शेष नहीं है। वर्षा का समय आ गया है और जो पुत्र आजीविका के लिए परदेश गया था, उसकी कोई सूचना नहीं है। घर में बड़ी कठिनाई से थोड़ा—सा तेल बचाकर रखा गया था, वह भी काँच की कुप्पी के टूट जाने से नष्ट हो गया। इस स्थिति में जब सास अपनी गर्भवती बहू को देखती है, जो संतान की प्रतीक्षा में है, तो वह यह सब देखकर अत्यंत व्याकुल होकर रोती रहती है।

यह उदाहरण हमें एम.ए. में पढ़ाया गया। तभी से मेरे मन में यह प्रश्न उठा कि इस प्रकार के और भी श्लोक अवश्य होंगे, जिनमें गाँव के लोगों का जीवन, हम लोगों का जीवन, मध्यमवर्गीय परिवारों का जीवन, उनके संघर्ष और उनके दुख—दर्द का चित्रण हुआ हो। क्योंकि ऐसा संभव ही नहीं है कि आम जनता का जीवन साहित्य में न आए। रामायण में भी एक प्रसंग है, जहाँ एक निर्धन ब्राह्मण भगवान राम के सामने कुछ माँगने के लिए आता है। उसकी पत्नी उसे बार—बार कहती है कि घर में भुखमरी की स्थिति है, बच्चे भूखे हैं और राम वनवास पर जा रहे हैं, वे सबको दान दे रहे हैं, तुम भी उनसे कुछ माँग लो। तब वह ब्राह्मण उनके पास जाता है। यह वाल्मीकि रामायण का अत्यंत मार्मिक प्रसंग है। महाभारत में भी इस प्रकार के अनेक प्रसंग मिलते हैं। हमारे महाकाव्यों में भी सामान्य जन के दुःख—दर्द का चित्रण उपस्थित है। फिर भी मेरे मन में यह

जिज्ञासा बनी रही कि क्या इस प्रकार की स्वतंत्र कविताएँ भी रची गई हैं। खोज करते–करते मुझे अनेक श्लोक और कविताएँ प्राप्त हुईं। ऐसे कवियों का भी पता चला, जिन्होंने गाँव में रहकर, वहीं के लोगों के जीवन को देखते हुए, उनके साथ जुड़कर, उनके जीवन का यथार्थ चित्रण किया। ऐसे अनेक कवि स्वयं भी उसी सामाजिक वर्ग से आए थे।

संस्कृत भाषा के संबंध में यह एक भ्रांति फैलाई गई कि वह केवल पूजा–पाठ की भाषा है, पंडितों या पुरोहितों की भाषा है, या केवल दार्शनिक चिंतन की भाषा है और आम जनता से उसका कोई संबंध नहीं है। यह धारणा वास्तव में औपनिवेशिक काल में प्रचारित एक भ्रम है।

पिछले लगभग दो सौ वर्षों में हमारे मन में इतिहास की जो विकृत छवियाँ स्थापित कर दी गई हैं, उनमें संस्कृत भाषा के संबंध में यह भ्रांति भी शामिल है। वास्तव में उन्नीसवीं शताब्दी तक गाँवों में अनेक पंडित संस्कृत का अच्छा ज्ञान रखते थे और सामान्य लोग भी उसे समझते थे। गाँवों में संस्कृत में शास्त्रार्थ होते थे। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि आम जनजीवन, उनके दुख–दर्द और संघर्षों का चित्रण करने वाली जीवंत कविताएँ संस्कृत में क्यों नहीं लिखी गई होंगी। वस्तुतः ऐसी कविताएँ लिखी गईं। किंतु यह भी सत्य है कि ऐसे कवियों को राजाश्रय नहीं मिला। वे या तो राजदरबार तक नहीं पहुँचे, या उन्हें वहाँ स्थान नहीं मिला, परिणामस्वरूप उनकी अनेक रचनाएँ लुप्त हो गईं। फिर भी उनकी कविताएँ इतनी सशक्त और प्रभावशाली थीं कि वे लोकजीवन में प्रचलित हो गईं, लोगों की जुबान पर चढ़ गईं। बाद में इन्हें विभिन्न सुभाषित संग्रहों में संकलित किया गया।

संस्कृत में ऐसे लगभग सौ सुभाषित संग्रह मिलते हैं, जिनमें बारहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं–बीसवीं शताब्दी तक के वे श्लोक संकलित हैं, जो लोक में प्रचलित रहे। इनमें महाकवियों के श्लोकों के साथ–साथ सामान्य जीवन का चित्रण करने वाले अनेक श्लोक भी एकत्र किए गए हैं। जब मैंने इन सुभाषित संग्रहों का अध्ययन किया, तो पाया कि ऐसे लगभग डेढ़ हजार के आसपास श्लोक हो सकते हैं, जो अत्यंत अद्‌भुत और विशिष्ट हैं। इन रचनाओं में अनेक बड़े कवि भी हैं, जिनके बारे में कहा जा सकता है कि वे कालिदास, माघ और भारवि जैसे महान कवियों की परंपरा के समकक्ष हैं। योगेश्वर ऐसे ही एक महत्त्वपूर्ण कवि हैं, जिनके लगभग सत्तर श्लोक उपलब्ध हैं और जिनमें उन्होंने जीवन का अत्यंत सजीव और मार्मिक चित्रण किया है। यद्यपि वे देव–स्तुति पर भी लिखते हैं, शंकर के तांडव का भी वर्णन करते हैं, परंतु जब वे गाँव के जीवन, विशेषकर ग्रामीण स्त्रियों और किसानों के बारे में लिखते हैं, तो संस्कृत कविता का एक अलग ही रूप सामने आता है।

संस्कृत साहित्य का यह भी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है, जिसे समझना आवश्यक है, क्योंकि हमारे इतिहास और संस्कृति का प्रायः एकांगी चित्रण किया जाता है और एक ही प्रकार का आख्यान प्रस्तुत कर दिया जाता है, जबकि हमारी परंपराएँ बहुआयामी रही हैं। इस पृष्ठभूमि में मैं कुछ श्लोकों का उल्लेख करूँगा, उनके हिंदी अर्थ सहित, ताकि आप जैसे सुधी श्रोताओं को यह अनुभव हो सके कि संस्कृत में भी उस प्रकार की कविताएँ रची गई हैं, जिन्हें आज हम जन–संघर्ष की कविता, आमजन की कविता या मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय जीवन की कविता कहते हैं।

प्राचीन काल में भी अनेक बार अकाल पड़े, भुखमरी रही, किसान और मजदूर वर्ग का जीवन संघर्षपूर्ण रहा, कारीगर और शिल्पी भी थे, जिन्होंने विशाल मंदिरों और भवनों का निर्माण किया। उनके जीवन का स्वरूप क्या था, यह महान काव्यों में कभी–कभी ही दिखाई देता है, यद्यपि महान कवि भी इन बातों की पूरी तरह उपेक्षा नहीं करते। उदाहरण के लिए, कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतल' में एक मछुआरे का प्रसंग आता है, जिसका कोई नाम नहीं है, वह एक सामान्य व्यक्ति है, जो यह प्रश्न उठाता है कि पशुबलि देने वाला धर्मात्मा कहलाता है और वह जो केवल मछली पकड़कर अपना जीवन यापन करता है, वह चोर कैसे हो गया। यह एक अत्यंत विचारोत्तेजक प्रश्न है। माघ के काव्य में भी लोकजीवन के अनेक चित्र मिलते हैं, किंतु कुछ ऐसे कवि हैं जिनकी चर्चा मैं विशेष रूप से कर रहा हूँ, जिन्होंने सीधे–सीधे ग्रामीण, मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय जीवन का चित्रण किया है। ऐसे ही कुछ श्लोक मैंने संकलित किए हैं। उनमें से एक श्लोक घर के वर्णन से संबंधित है – एक छोटे से कस्बे या गाँव के घर का चित्रण। कवि कहता है कि उसके घर में लकड़ियाँ हिल रही हैं, दीवारें दरक गई हैं, छत पर घास उग आई है, और घर के भीतर मेंढक और कछुए घूमते रहते हैं। इस प्रकार वह अपने जीर्ण–शीर्ण, टूटे–फूटे घर का अत्यंत सजीव चित्र प्रस्तुत करता है।

इस कविता को पढ़ते हुए हमें पहली बार यह अनुभव होता है कि केंचुए जैसे साधारण जीवों के लिए भी संस्कृत में शब्द विद्यमान थे, क्योंकि महान कवियों की उच्च कोटि की कविताओं में ऐसे जीवों का उल्लेख सामान्यतः नहीं मिलता। इस प्रकार की कविताएँ हमें यह भी बताती हैं कि जिन छोटे–छोटे जीव–जंतुओं को हम अपने आसपास देखते हैं, उनके लिए भी प्राचीन संस्कृत में शब्द और अभिव्यक्तियाँ थीं, जो उनके जीवन के चित्रण के साथ सामने आती हैं। यह कविता दरिद्रता का चित्रण करती है, परंतु इसमें रहने वाले लोगों का स्वाभिमान भी उतना ही प्रबल है। वे आर्थिक रूप से भले ही साधनहीन हों, पर मन से वे अत्यंत समृद्ध हैं। कवि स्वयं भी मन से अत्यंत उदात्त है और उसकी कविता भी उच्च स्तर की है।

अब मैं एक और श्लोक का उल्लेख करूँगा और उसका आशय स्पष्ट करूँगा। यह एक अत्यंत सजीव और प्रभावपूर्ण श्लोक है, जो शार्दूलविक्रीड़ित छंद में रचा गया है। इसमें घर की जर्जर अवस्था का वर्णन किया गया है – छत जगह–जगह से उखड़ गई है, दीवारों में दरारें पड़ गई हैं, मानो वे साँस ले रही हों। इन दरारों से साँप घर के भीतर प्रवेश कर जाते हैं, जो चूहों का पीछा करते हुए अंदर आ जाते हैं। इसके साथ ही चमगादड़ भी घर के भीतर आ जाते हैं और उनके उड़ने से 'भाय–भाय' जैसी ध्वनि उत्पन्न होती है। इस प्रकार कवि अपने घर की स्थिति का अत्यंत जीवंत और मार्मिक चित्र प्रस्तुत करता है।

अंतिम पंक्ति में कवि कहता है कि हे राजन, आपके शत्रु का जैसा घर होना चाहिए, वैसा ही मेरा घर हो गया है। यह अत्यंत तीखी और व्यंग्यपूर्ण पंक्ति है। इससे स्पष्ट होता है कि कवि अपने दुःख को केवल वर्णित नहीं कर रहा, बल्कि उसमें एक तीव्र संवेदन और सामाजिक संकेत भी है। इस प्रकार की कविताओं में जीवन का यथार्थ और संघर्ष बिना किसी समझौते के सामने आता है।

इसी क्रम में एक और मार्मिक श्लोक है, जिसमें कवि अपने जर्जर घर का चित्रण करता है। वह

कहता है कि घर की बल्ली नीचे लटक आई है, मानो दाँत निकालकर चिढ़ा रही हो। एक अत्यंत प्रभावशाली पंक्ति में वह बताता है कि घर की स्त्रियों के पास पर्याप्त वस्त्र नहीं हैं, इसलिए वे संकोचवश छिपकर रहती हैं। जैसे ही कोई घर से बाहर निकलता है, वे तुरंत द्वार बंद कर लेती हैं, ताकि कोई उन्हें इस अवस्था में न देख ले। आगे कवि कहता है कि उसके घर के आसपास भिखारी भी नहीं आतेय वे दूर से ही देखकर मुँह मोड़ लेते हैं। यहाँ कवि की संवेदना इतनी गहरी है कि उसे इस बात का भी दुःख है कि भिखारी तक उसके घर की ओर नहीं आते। इससे यह संकेत मिलता है कि यह कोई सामान्य परिवार नहीं, बल्कि एक स्वाभिमानी, संभवतः कुलीन परिवार है, जो विपन्नता में जीवन व्यतीत कर रहा है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि यह धारणा सही नहीं है कि सभी ब्राह्मण समृद्ध होते थे। यज्ञ आदि से कुछ को दक्षिणा मिलती थी, परंतु अनेक ब्राह्मण परिवार अत्यंत साधनहीन भी थे। परंपरा में तो यह आदर्श भी रखा गया कि ब्राह्मण को धन–संचय नहीं करना चाहिए और उसे तपस्वी जीवन जीना चाहिए। ऐसे में यदि किसी ब्राह्मण परिवार पर विपत्ति या अकाल आ जाए, तो उसकी स्थिति कितनी दयनीय हो सकती है, इसका चित्रण भी इन कविताओं में मिलता है। एक श्लोक में कवि अपनी पत्नी से कहता है कि हम कुलीन ब्राह्मण हैं, इसलिए हमसे कोई मजदूरी भी नहीं कराएगा, और घर में खाने को कुछ नहीं है–अब हम क्या करें, यह समझ में नहीं आता। योगेश्वर जैसे कवियों ने विशेष रूप से ग्रामीण और निम्नवर्गीय स्त्रियों के जीवन का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। एक श्लोक में वर्षा ऋतु का दृश्य है, जहाँ एक स्त्री अपने टपकते हुए घर को बचाने का प्रयास कर रही है। छत से पानी टपक रहा है, सत्तू भीग रहा है, बच्चे रो रहे हैं, और वह उन्हें चुप कराने की कोशिश कर रही है। फर्श पर जमा पानी को कपड़े से बार–बार पोंछ रही है, और फूस के बिस्तर को बचाने का प्रयास कर रही है ताकि रात में सोने लायक रह सके। वह अपने सिर पर पुराना सूप रखकर इधर–उधर दौड़ रही है, ताकि किसी तरह घर को संभाल सके। अंत में कवि कहता है–यह बेचारी गृहिणी क्या–क्या करे, जब बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है। यहाँ वर्षा को भी एक सांस्कृतिक रूप में 'देवों का बरसना' कहा गया है, जो संस्कृत काव्य की विशिष्ट अभिव्यक्ति है।

संस्कृति तो हमारी अपनी है और वे कवि महान कवि हैं। उनकी भाषा भी उसी स्तर की है, किंतु जीवन का संघर्ष भी उतना ही वास्तविक और गहरा है। योगेश्वर जैसे कवि न केवल उच्च कोटि के रचनाकार हैं, बल्कि उन्होंने जनजीवन के यथार्थ को भी उतनी ही संवेदनशीलता से अभिव्यक्त किया है। यह वही जीवन है, जिसे हममें से अनेक लोगों ने अपने बचपन में गाँवों में देखा है–जब माचिस नहीं होती थी, तब चूल्हा कैसे जलाया जाता था। ऐसे वर्णनों को पढ़ते हुए वही स्मृतियाँ ताजा हो जाती हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि ये लोग हीन नहीं थे। उनका स्वाभिमान, उनके शिल्प, उनकी कलाएँ–इन सबका भी सजीव चित्रण इन कविताओं में मिलता है।

महिलाओं के जीवन पर भी अत्यंत मार्मिक श्लोक मिलते हैं। एक श्लोक में वर्षा का दृश्य है–बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है। घर में चूल्हा जलाना है, परंतु आग बुझ चुकी है। पहले घरों में अंगारों को राख में दबाकर सुरक्षित रखा जाता था, ताकि उन्हें पुनः फूँककर चूल्हा जलाया जा

सके। किंतु वर्षा के कारण जब नमी अधिक हो जाती थी, तो वे अंगारे भी बुझ जाते थे। ऐसी स्थिति में गृहिणियाँ पड़ोस में जाकर पूछती थीं कि क्या कहीं कुछ अंगारे बचे हैं, जिससे वे चूल्हा जला सकें। कवि इसी दृश्य का वर्णन करता है—वर्षा के बीच महिलाएँ सिर पर सूप या किसी वस्तु को ओढ़कर, एक घर से दूसरे घर जाती हैं और पूछती हैं कि क्या कहीं थोड़े से अंगारे मिल सकते हैं।

इस प्रकार के जीवन—चित्र अत्यंत स्वाभाविक और सजीव हैं। संस्कृत काव्य में जहाँ एक ओर अलंकारों की समृद्धि, उत्प्रेक्षाएँ और काव्यगत सौंदर्य है, वहीं दूसरी ओर 'स्वभावोक्ति' भी है—अर्थात जीवन का सहज, यथार्थ और बिना बनावट का चित्रण। यही इस प्रकार की कविताओं की विशेषता है।

इस संदर्भ में लक्ष्मीधर अत्यंत महत्वपूर्ण कवि हैं। भट्ट लक्ष्मीधर दसवीं शताब्दी के कवि माने जाते हैं, जबकि योगेश्वर नवमी शताब्दी के कवि हैं। ये बंगाल के पाल राजाओं के समय में हुए और विंध्याचल क्षेत्र में इन्होंने व्यापक रूप से भ्रमण किया। इनकी प्रशस्तियाँ भी प्राप्त होती हैं, जैसे कालिदास की प्रशस्तियों में अनेक श्लोक मिलते हैं, उसी प्रकार योगेश्वर की प्रशस्तियों में भी अनेक उल्लेख मिलते हैं। एक प्रशस्ति में कहा गया है कि विंध्याचल की पुलिंद एवं सामान्य वर्ग की स्त्रियों के जीवन, उनके संघर्ष और उनके परिवेश का सजीव चित्रण करने वाले कवि योगेश्वर ही हैं।

भट्ट लक्ष्मीधर भी अत्यंत श्रेष्ठ कवि थे। उन्होंने 'चक्रपाणि विजय' जैसा महाकाव्य रचा, जिसे संस्कृत के उत्कृष्ट महाकाव्यों में स्थान प्राप्त है। ऐसा कहा जाता है कि उन्हें राजा भोज की सभा में आश्रय नहीं मिला, और उसी अनुभव का उल्लेख उन्होंने अपने काव्य में भी किया है। बाद में वे ग्राम्य जीवन की ओर आए और वहाँ के जीवन पर अत्यंत मार्मिक श्लोकों की रचना की। उनके एक श्लोक में शीत ऋतु का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है। जिस प्रकार वर्षा ऋतु के चित्र हमने देखे, उसी प्रकार यहाँ हेमंत—शिशिर का वर्णन है। वे कहते हैं कि बंदर ठंड से काँप रहे हैं, गाय—बैल और अन्य पशु शीत से व्याकुल हो उठे हैं। एक अत्यंत सूक्ष्म और मार्मिक चित्रण में वे बताते हैं कि एक कुत्ता रात में किसी भट्टी की गरम राख में घुसकर सो गया था, क्योंकि उसे वहाँ ऊष्मा मिल रही थी। प्रातः जब भट्टी को पुनः जलाने का समय आया, तो उसे हटाया जा रहा है, किंतु वह हटना नहीं चाहता, क्योंकि उसे वहाँ अत्यंत सुख मिल रहा है। आगे वे कहते हैं कि शीत की तीव्रता से दीन—हीन लोग ऐसे सिकुड़ जाते हैं, मानो कछुआ अपने अंगों को समेटकर अपने ही शरीर में समा जाता है। इस प्रकार कवि ने अत्यंत सूक्ष्म निरीक्षण और संवेदनशीलता के साथ शीत ऋतु में जनजीवन की कठिनाइयों का चित्रण किया है।

इस प्रकार के अनेक श्लोक संस्कृत साहित्य में मिलते हैं और बच्चों के जीवन पर भी अत्यंत सुंदर एवं मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है। सामान्यतः संस्कृत काव्य में बच्चों का चित्रण अधिक नहीं मिलता—कालिदास के नाटकों में भरत का प्रसंग अवश्य आता है, जो सिंह के दाँत गिनता है—किन्तु ग्राम्य जीवन में बच्चे क्या करते हैं, इसका अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थ चित्रण इन श्लोकों में मिलता है। एक श्लोक में वर्णन है कि दरिद्र परिवार के बच्चे किसी संपन्न व्यक्ति के द्वार पर खड़े हैं, भीतर झाँक रहे हैं। वे भूखे हैं, कुछ माँगना भी चाहते हैं, परंतु लज्जा के कारण उनके मुख से

शब्द नहीं निकलते। वे केवल भीतर भोजन करते हुए व्यक्ति को निहारते रह जाते हैं, उनकी आँखें मानो विस्मय और अभाव से फैल जाती हैं। यह जीवन की अत्यंत बारीक और संवेदनशील पकड़ है।

इसी प्रकार शीत ऋतु में बच्चों का एक और दृश्य चित्रित किया गया है—दीवार पर पड़ती हुई धूप के छोटे से टुकड़े में खड़े होने के लिए वे आपस में धक्का—मुक्की कर रहे हैं। उस थोड़ी—सी गर्मी को पाने के लिए वे आपस में झगड़ते हैं कि कौन वहाँ खड़ा होगा। यह दृश्य अत्यंत सहज और जीवन के निकट है। इसके साथ ही कुछ श्लोक स्वाभिमान, मनस्विता और संतोष के भी हैं। एक श्लोक में एक गृहस्वामी अपनी पत्नी से कहता है कि अभी कठिन समय है, भोजन का अभाव है, पर किसी प्रकार बच्चों का पालन करो। जैसे ही वर्षा आएगी और फसल उगेगी, जब खेतों में उपज होगी, तब स्थिति बदल जाएगी। तब न केवल हमारा जीवन सुधरेगा, बल्कि हम भी आनंदपूर्वक जीवन यापन करेंगे। इस प्रकार इन कविताओं में केवल अभाव और संघर्ष ही नहीं, बल्कि आशा, स्वाभिमान और जीवन के आनंद के क्षण भी विद्यमान हैं। ग्रीष्म और वर्षा में कष्ट हो सकता है, परंतु शरद ऋतु में, विशेषकर दीपावली के आसपास जब फसल घर आती है, तब उल्लास का वातावरण होता है—गीत गाए जाते हैं, उत्सव मनाया जाता है, और जीवन में आनंद का संचार होता है।

इस प्रकार के अनेक चित्र संस्कृत काव्य में मिलते हैं, जिनमें ग्राम्य जीवन का आनंद भी उतनी ही सजीवता से प्रकट होता है। जब धान की फसल कटकर घर आती है, तो गाँव में उत्सव जैसा वातावरण बन जाता है। एक श्लोक में वर्णन है कि घर के आँगन में नए धान का ढेर लगा है, उसकी सुगंध चारों ओर फैल रही है। गृह की युवतियाँ ओखली में धान कूट रही हैं और उनके कंगनों की मधुर ध्वनि वातावरण को और भी आनंदमय बना रही है। इसी प्रकार एक और अत्यंत सुंदर चित्रण है—जब पति प्रवास से लौटकर घर आता है, तो गृहिणी के हृदय में जो आनंद उमड़ता है, उसका अत्यंत मार्मिक वर्णन किया गया है। केशव, जो इस परंपरा के प्रमुख कवि हैं, उनके एक श्लोक में यह दृश्य अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत हुआ है। पति दूर मरुस्थल की कठिन यात्राएँ पार करके घर लौटा है। उसे देखते ही पत्नी की आँखों में संतोष और प्रेम के आँसू भर आते हैं, और वह मुस्कान के साथ उसका स्वागत करती है।

इसके बाद का दृश्य और भी अधिक भावपूर्ण है—वह तुरंत उस ऊँट के लिए चारा लाती है, जिस पर बैठकर उसका पति इतनी दूर से आया है। वह अपने आँचल से उसे स्नेहपूर्वक पोंछती है, मानो उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रही हो। पति से बातचीत तो बाद में होगी, पहले वह उस जीव के प्रति अपना प्रेम प्रकट करती है, जिसने उसके प्रिय को सुरक्षित घर तक पहुँचाया। इस प्रकार की कविताएँ यह प्रमाणित करती हैं कि संस्कृत साहित्य में केवल उच्चवर्गीय या दार्शनिक विषय ही नहीं, बल्कि सामान्य जनजीवन, उनके सुख—दुःख, संघर्ष और आनंद के अत्यंत जीवंत और संवेदनशील चित्र भी प्रस्तुत किए गए हैं। इन कविताओं के रचयिता भी महान कवि थे। कुछ के नाम ज्ञात हैं, जबकि अनेक कवियों के नाम समय के साथ लुप्त हो गए, क्योंकि उनके श्लोक तो लोक में जीवित रहे, पर उनके रचनाकार भुला दिए गए।

ग्यारहवीं शताब्दी के बाद इन श्लोकों को विभिन्न सुभाषित–संग्रहों में संकलित किया गया। विद्याकर का 'सुभाषित–रत्नकोष', वल्लभदेव की 'सुभाषितावली', शारंगधर का 'सदुक्ति–कर्णामृत' आदि अनेक सुभाषित–संग्रह हैं, जिनमें हजार–दो हजार श्लोकों का संकलन किया गया। इस प्रकार जो श्लोक अन्यथा लुप्त हो सकते थे, विशेषकर गाँव–गिराव में रची गई कविताएँ, उन्हें इन संग्रहकारों ने सुरक्षित कर लिया। इसलिए हम उन कवियों को नमन करते हैं, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी इतनी सशक्त रचनाएँ कीं, और उन सुभाषित–संग्रहकारों को भी प्रणाम करते हैं, जिन्होंने इन्हें एकत्र कर हमारे लिए संरक्षित रखा। मेरा यह आशय नहीं है कि यह कोई पृथक या अलग–थलग परंपरा है। इसमें निरंतर आदान–प्रदान होता रहा है। महान कवि थे, जैसे कालिदास, वे भी इस प्रकार के जीवन और भाषा से परिचित थे। उनके नाटकों में मछुआरे जैसे पात्र उसी प्रकार की भाषा बोलते हैं, और कंचुकी या सेवक–वर्ग के पात्र भी उसी जीवन की झलक प्रस्तुत करते हैं, जिसे ये कवि अभिव्यक्त कर रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि इन कवियों और राजाश्रय प्राप्त महान कवियों के बीच संपर्क और संवाद रहा है। अतः यह कहना उचित नहीं होगा कि यह कोई विरोध या विद्रोह की पृथक परंपरा है। बल्कि समाज में एक प्रकार का सामंजस्य विद्यमान था।

मुख्य बात यह है कि हमारा जो सामान्य जीवन है, वह भी संस्कृत कविता में अपने स्वाभाविक और यथार्थ रूप में उपस्थित होता है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। आप सभी का बहुत–बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

अध्यक्षीय उद्बोधन

दिनांक - 18-11-2025

माननीय डॉ. गोविन्द गंधे
निदेशक, कालिदास अकादमी, उज्जैन

वर्ण, नाम, अर्थ, संघ, नाम, रस, नाम, छंद, मंगलाचरण–इन सबके कर्ता वाणी, विनायक, भवानी और शंकर को मैं वंदन करता हूँय श्रद्धा और विश्वास के रूप में जिनके बिना कोई भी परम सत्य का दर्शन नहीं कर सकता। मंच पर विराजमान संस्कृत के मुरधन्य विद्वान आदरणीय प्रोफेसर राधा वल्लभ त्रिपाठी जी तथा आप सभी सुधी श्रोताओं को मैं विनम्रतापूर्वक प्रणाम निवेदित करता हूँ। 23वीं सद्भावना व्याख्यानमाला के अवसर पर मैं आप सबका हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करता हूँ। आदरणीय राधा वल्लभ त्रिपाठी जी, आपके चरणों में बैठकर सीखने और अध्ययन करने की अभी भी आवश्यकता है, और आज आपके समक्ष कुछ कहने का अवसर मिला है। आशा करता हूँ कि आप जैसे गुरुजनों से जो कुछ सीखा है, वह आपके समक्ष तथा श्रोताओं के लिए कुछ उपयोगी सिद्ध होगा।

संस्कृत कविता में लोक जीवन यह विषय ऐसा ही प्रतीत होता है जैसे कोई कहे कि समुद्र में जल, अग्नि में दाहकता और आकाश में रिक्तता उनका स्वाभाविक गुण है, ठीक उसी प्रकार से संस्कृत कविता भी लोक जीवन से युक्त है, अथवा हम यह कह सकते हैं कि वह लोक जीवन के लिए लोक जीवन की ही कविता है। कविता की जब बात आती है तो हम अनायास ही स्मरण करते हैं आदि कवि वाल्मीकि का और उनके आदि काव्य रामायण का। जब रामायण का प्रारंभ होता है तो नारद जी प्रश्न करते हैं "कोऽन्वस्मिन् लोके" अर्थात इस लोक में कौन है जिसका हम वर्णन करना चाहते हैं, इस प्रकार काव्य का विषय प्रारंभ से ही लोक से संबंधित रहा है, अर्थात लोक पर आधारित ही आदि कवि की यह रचना हुई और उसी की प्रेरणा से संपूर्ण काव्य सृष्टि का विकास हुआ। मुझे लगता है कि काव्य लोक का एक प्रतिबिंब है, अर्थात लोक में जो कुछ भी दिखाई देता है वही काव्य में प्रतिबिंबित होता है और इसीलिए जब उत्तर दिया जाता है "रामो नाम जनैः श्रुतः" अर्थात लोगों के द्वारा सुना गया, लोक में प्रसिद्ध वह नाम राम है जो समस्त संसार में विख्यात है, जो वीर्यवान है, धैर्यवान है और गुणों से संपन्न है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि संस्कृत कविता का प्रारंभ ही लोक से संबद्ध है और इसका संकेत हमें आदि कवि वाल्मीकि से ही प्राप्त होता है। चूँकि यह प्रथम काव्य था और इसी को आधार बनाकर बाद में काव्यशास्त्र तथा नाट्यशास्त्र के ग्रंथों की रचना हुई, इसलिए कहा जा सकता है कि लक्ष्य ग्रंथ की निर्मिति पहले हुई और लक्षण ग्रंथ बाद में बने। जब शास्त्रकारों ने लक्षण ग्रंथों की रचना की तो उनके सामने वाल्मीकि कृत काव्य ही प्रमुख आधार के रूप में उपस्थित था और उसी के आधार पर उन्होंने यह निर्धारित किया कि काव्य का प्रयोजन क्या है, काव्य क्यों लिखा जाना चाहिए और उसका उद्देश्य क्या होना चाहिए।

सारे मतों का समन्वय करते हुए आचार्य ने काव्य के छह प्रयोजन बताए हैं जिनमें पूर्ववर्ती

और परवर्ती सभी आचार्यों के मतों का समावेश दिखाई देता है। आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य छह प्रयोजनों को ध्यान में रखकर रचा जाता है जिनमें प्रारंभ के दो प्रयोजन "काव्यं यशसे अर्थकृते" कहे गए हैं अर्थात यश की प्राप्ति और अर्थ की प्राप्ति, ये दोनों कवि–निष्ठ प्रयोजन माने जा सकते हैं अर्थात कवि का उद्देश्य हो सकता है कि उसे यश मिले और उसे अर्थ की प्राप्ति हो। इसके बाद के जो चार प्रयोजन हैं वे लोक से संबंधित हैं जिनमें जनसामान्य को शिक्षित करना, उन्हें व्यवहार कुशल बनाना, उनके अकल्याण का निवारण करना, उन्हें उपदेश देना तथा काव्य के माध्यम से आनंद की अनुभूति कराना शामिल है, और यह आनंद भी सामान्य नहीं बल्कि "ब्रह्मानन्दसहोदर" कहा गया है अर्थात काव्य का आस्वादन करते हुए जो आनंद प्राप्त होता है वह ब्रह्मानंद के समान अनुभव होता है। जब हम इन प्रयोजनों पर दृष्टिपात करते हैं तो स्पष्ट होता है कि काव्य के ये सभी प्रयोजन मूलतः लोक को केंद्र में रखकर निर्धारित किए गए हैं और जब प्रयोजन ही लोकमूलक हैं तो काव्य में चित्रित संसार भी स्वाभाविक रूप से लोक से ही संबंधित होगा। हमारे यहाँ कविता को काव्य कहा जाता है और संस्कृत परंपरा में काव्य को मुख्यतः तीन प्रकारों में विभाजित किया गया है–गद्य काव्य, पद्य काव्य और मिश्र काव्य। गद्य काव्य वह है जो गद्य रूप में होता है, पद्य काव्य वह है जो छंदबद्ध रचना के रूप में होता है और मिश्र काव्य में गद्य और पद्य दोनों का समावेश होता है जिसमें चम्पू काव्य तथा नाटक अथवा रूपक आदि प्रमुख हैं। जब नाटक या रूपक की चर्चा होती है तो उसके विधि–निषेध और प्रयोजन पर भी विचार किया गया है और नाट्य के प्रयोजन को इस प्रकार व्यक्त किया गया है–"दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम् विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति" अर्थात जो लोग दुःख, श्रम और शोक से पीड़ित हैं उनके लिए नाट्य विश्रांति प्रदान करने वाला होता है। यहाँ स्पष्ट है कि दुःख, कष्ट और शोक का निवारण लोक का ही होता है और इसी आधार पर यह सिद्ध हो जाता है कि संस्कृत काव्य में लोक जीवन ही मुख्य तत्व है और संस्कृत काव्य की रचना मूलतः लोक के लिए ही की गई है।

यह तो हुई शास्त्र की बात और शास्त्र की बात इसलिए कही गई क्योंकि हमारे यहाँ यह मान्यता है कि यदि किसी तथ्य को प्रमाणित करना हो तो शास्त्र का आधार आवश्यक होता है, जैसा कि श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है "तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ" अर्थात क्या करना है और क्या नहीं करना है इसका निर्णय शास्त्र के आधार पर ही किया जाना चाहिए, इसलिए यह स्पष्ट होता है कि शास्त्र भी यही निर्देश देता है कि संस्कृत काव्य की रचना लोक के लिए की जानी चाहिए चाहे वह गद्य के रूप में हो, पद्य के रूप में हो, नाटक के रूप में हो या चंपू काव्य के रूप में हो। जब काव्य की रचना का मूल प्रयोजन ही लोकाभिमुख है और लोक को ध्यान में रखकर किया गया है तो यह स्वाभाविक है कि उसमें लोक की संवेदना, लोक के अनुभव, लोक का संकीर्तन, लोक के रीति–रिवाज, आचार–विचार और व्यवहार सभी का समावेश दिखाई देगा। इस प्रकार महाकवि कालिदास जिन्हें कविकुलगुरु कहा जाता है, उनसे लेकर संस्कृत की लौकिक काव्य परंपरा का विकास देखा जा सकता है, क्योंकि वाल्मीकि को हम आर्ष

काव्य परंपरा में रखते हैं और उनकी कृति रामायण को आर्ष काव्य कहा जाता है, इसके पश्चात कालिदास से ही लौकिक काव्य परंपरा का व्यवस्थित प्रारंभ माना जाता है। उनके ग्रंथों को आधार बनाकर, उनका अध्ययन कर, उनकी प्रेरणा से ही आगे की संपूर्ण काव्य सृष्टि का निर्माण हुआ।

कालिदास ने जो काव्य रचे उनका प्रभाव व्यापक रहा और स्वाभाविक रूप से जैसे नगरों में, जो उनकी प्रिय नगरी रही, उनकी रचनाओं का विशेष अध्ययन हुआ होगा, क्योंकि कालिदास ने उज्जयिनी का जितना सजीव, आत्मीय और प्रेमपूर्ण वर्णन किया है उतना किसी अन्य संस्कृत कवि ने नहीं किया। उनकी विश्व प्रसिद्ध कृति अभिज्ञानशाकुंतलम् इसका श्रेष्ठ उदाहरण है, जिसमें जब शकुंतला की कण्व ऋषि के आश्रम से विदाई होती है तो वहाँ के वृक्ष, लताएँ, पशु–पक्षी सभी भाव–विभोर हो उठते हैं और आश्रम के ऋषि–मुनि भी अपने भावों को रोक नहीं पाते, जिससे यह सिद्ध होता है कि संस्कृत काव्य में केवल उच्च आदर्श ही नहीं बल्कि लोकजीवन की गहरी संवेदनाएँ भी अत्यंत सजीव रूप में अभिव्यक्त होती हैं।

कालिदास ने अत्यंत सुंदर और मार्मिक वर्णन किया है कि जब शकुंतला आश्रम से विदा हो रही होती है तो कण्व ऋषि का कंठ रुद्ध हो जाता है, उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं और अश्रुओं के कारण उन्हें कुछ दिखाई भी नहीं देता, कंठ रुद्ध होने से वे कुछ बोल भी नहीं पाते, तब वे बड़ी भावपूर्ण बात कहते हैं कि यदि वन में रहने वाले हम जैसे तपस्वियों की यह अवस्था है, तो जब कोई कन्या अपने पिता के घर से विदा होती होगी तब गृहस्थ लोग अपने आप को कैसे संभाल पाते होंगे, अर्थात उनके लिए तो यह पीड़ा और भी अधिक असहनीय होती होगी। इस प्रकार का अत्यंत संवेदनशील और लोकानुभव से जुड़ा हुआ वर्णन यदि कहीं मिलता है तो वह संस्कृत काव्य में मिलता है, जहाँ अरण्यवासी ऋषि अपने अनुभव के माध्यम से नगरवासियों के जीवन की भावनाओं को व्यक्त करते हैं, यह तुलना ही यह सिद्ध करती है कि संस्कृत काव्य लोक जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है। यहाँ यह भी स्पष्ट होता है कि जो ऋषि समस्त मोह माया से दूर रहते हैं, वही जब अपनी मानस पुत्री के विदा होने पर विचलित हो जाते हैं तो सामान्य गृहस्थों के हृदय की स्थिति का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। कहने का आशय यह है कि समस्त उदाहरणों को एक साथ प्रस्तुत करना संभव नहीं है, किंतु "स्थाली पुलाक न्याय" के आधार पर कुछ उदाहरणों के माध्यम से इस तथ्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। महाकवि कालिदास की कृति मेघदूत में भी ऐसा ही लोक जीवन का सजीव चित्रण मिलता है, जहाँ यक्ष मेघ से कहता है कि तुम अपना मार्ग थोड़ा मोड़कर उज्जयिनी की ओर जाना, वहाँ तुम्हें ग्रामों के वृद्धजन उदयन की कथाएँ कहते हुए मिलेंगे–"प्राप्यावन्ती उदयनकथाकोविद ग्रामवृद्धा"–यह सीधा संकेत है कि काव्य में लोक जीवन, लोक कथाएँ और जनसामान्य की परंपराएँ कितनी सजीव रूप में विद्यमान हैं। यदि यह लोक जीवन नहीं है तो और क्या है। इसी प्रकार अन्य ग्रंथों जैसे पंचतंत्र और हितोपदेश में भी लोक जीवन, लोक व्यवहार और जनसामान्य की बुद्धि, नीति और अनुभव का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि संस्कृत काव्य की मूल चेतना लोक जीवन से ही अनुप्राणित है।

जब हम भवभूति के उत्तररामचरितम् का अध्ययन करते हैं तो यह भाव अत्यंत मार्मिक रूप से व्यक्त होता है कि "स्नेहं दया सौख्यं यदिवा जानकीमपि आराधनाय लोकस्य त्यजामि"कृअर्थात यदि लोक की मर्यादा और लोकमंगल के लिए आवश्यक हो तो स्नेह, दया, सुख यहाँ तक कि जानकी का भी परित्याग किया जा सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि संस्कृत काव्य में लोक सर्वोपरि है और उसके लिए त्याग की पराकाष्ठा तक जाने का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। इसी कारण संस्कृत काव्य की प्रत्येक धारा–चाहे वह मेघदूत हो, मालविकाग्निमित्रम् हो, उत्तररामचरितम् हो या नैषधीयचरितम् । हर जगह लोक जीवन की झलक प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। नाटक, गद्य, पद्य या चंपू–काव्य का कोई भी रूप क्यों न हो, वह लोक से ही शक्ति ग्रहण करता है और लोक के लिए ही रचा जाता है। यहाँ तक कि नाट्य के विषय में स्पष्ट कहा गया है–"लोकसिद्धं भवेत् नाट्यम्", अर्थात नाटक वही सफल है जिसे लोक स्वीकार करे और यह लोकस्वीकृति ही इस बात का प्रमाण है कि संस्कृत साहित्य में लोक ही अंतिम कसौटी है। यद्यपि कवि अपने यश या अर्थ की प्राप्ति के लिए भी काव्य रचना कर सकता है, परंतु काव्य का परम उद्देश्य इससे कहीं अधिक उच्च है–वह है सहृदय के हृदय में ऐसी आनन्दानुभूति उत्पन्न करना, जो उसे पढ़ते–पढ़ते ही उसकी आत्मा को स्पर्श कर ले और वह अपनी सुध–बुध तक भूल जाए। इसी अनुभूति को आचार्यों ने "ब्रह्मानन्द सहोदर" कहा है–अर्थात वह आनंद जो योगियों को साधना की चरम अवस्था में प्राप्त होता है, वही यदि काव्य के माध्यम से सुलभ हो जाए, तो उससे श्रेष्ठ काव्य प्रयोजन और कुछ हो ही नहीं सकता।

इसलिए मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि "संस्कृत काव्य में लोक जीवन" कोई अलग से खोजने योग्य तत्व नहीं है, बल्कि वह तो काव्य का स्वाभाविक, अनिवार्य और सर्वव्यापी स्वरूप है ऐसा कोई पृष्ठ, कोई प्रसंग, कोई घटना या कोई दृश्य संस्कृत काव्य में मिलना कठिन है जहाँ लोक से संबंधित भाव न हो। जैसा कि पूर्व में आदि कवि महर्षि वाल्मीकि की आदि रचना रामायण के संदर्भ में कहा गया कि नारद का प्रश्न ही "कोऽस्मिन् लोके३" से प्रारंभ होता है–अर्थात लोक में कौन है जिसका वर्णन किया जाए–और उसी लोकाधारित प्रश्न से जो काव्य आरंभ हुआ, उसे वरदान भी यही मिला कि "यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले तावत् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति", अर्थात जब तक इस पृथ्वी पर पर्वत और नदियाँ विद्यमान रहेंगे, तब तक रामायण की कथा लोक में प्रचलित रहेगी। यह अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य है कि काव्य को प्राप्त वरदान भी लोकमान्यता से ही जुड़ा हुआ है–काव्य का अस्तित्व लोक में ही है, लोक के कारण है और लोक के लिए ही है। इसका सीधा अर्थ यह है कि संस्कृत कविता केवल किसी एक वर्ग, एक समय या एक उद्देश्य की नहीं, बल्कि वह शाश्वत है क्योंकि वह लोक में प्रतिष्ठित है जब तक सृष्टि है, तब तक लोक है और जब तक लोक है, तब तक काव्य भी जीवित रहेगा।

इसी संदर्भ में यदि हम कालिदास की अमर कृति अभिज्ञानशाकुंतलम् को देखें तो उसमें भी लोक जीवन की मार्मिकता अत्यंत स्वाभाविक रूप से प्रकट होती है। वास्तव में, जब हम उज्जयिनी की पावन भूमि पर इस प्रकार के व्याख्यान का विचार करते हैं, तो कालिदास, महाकाल, शिप्रा नदी

और सम्राट विक्रमादित्य जैसे नामों का स्मरण स्वाभाविक हो जाता है क्योंकि यह केवल ऐतिहासिक या सांस्कृतिक संदर्भ नहीं हैं, बल्कि ये लोकजीवन की उस निरंतर परंपरा के प्रतीक हैं जिसमें ज्ञान, संस्कृति और साहित्य एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। ज्ञान तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक वह लोक से जुड़ न जाए, और जब कोई वक्तव्य लोक के उदाहरणों के साथ प्रस्तुत होता है, तभी वह श्रोता के हृदय में सीधे प्रवेश करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि संस्कृत काव्य केवल लोक का चित्रण ही नहीं करता, बल्कि स्वयं लोक का ही विस्तार है–वह लोक से उत्पन्न होता है, लोक में जीवित रहता है और लोक के साथ ही अपनी सार्थकता प्राप्त करता है।

बात करें अभिज्ञानशाकुंतलम् के छठे अंक की तो वहाँ एक अत्यंत रोचक और यथार्थपूर्ण प्रसंग सामने आता है, जो यह सिद्ध करता है कि संस्कृत काव्य केवल आदर्शों की ही नहीं, बल्कि वास्तविक लोक व्यवहार की भी सजीव अभिव्यक्ति है। शकुंतला के प्रस्थान के बाद, जब अंगूठी खो जाती है और उसी के कारण राजा दुष्यंत उसे पहचान नहीं पाते, तब उस अंगूठी का प्रसंग एक मछुआरे के माध्यम से सामने आता है। दो सैनिक उस मछुआरे को पकड़कर लाते हैं और उससे जिस प्रकार प्रश्नोत्तर करते हैं–"कौन है?", "कहाँ से आया है?", "जितना पूछा जाए उतना ही उत्तर दे"–वह पूरा संवाद हमारे वर्तमान लोकजीवन का सजीव प्रतिबिंब प्रतीत होता है। इसमें प्रशासनिक दबाव, अधिकार का प्रदर्शन और सामान्य जन के प्रति संदेहपूर्ण दृष्टि–ये सभी तत्व उसी प्रकार दिखाई देते हैं जैसे आज भी समाज में देखे जाते हैं।

आगे जब मछुआरे के पास से अंगूठी मिलती है और वह राजा दुष्यंत के पास पहुँचाई जाती है, तब राजा प्रसन्न होकर उसे पारितोषिक प्रदान करते हैं। यह दृश्य केवल पुरस्कार का नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवहार की एक और परत को उद्घाटित करता है। जब वह मछुआरा वापस लौटता है और सैनिक उसे ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं, तब वह सहज ही कहता है कि "आप नाराज न हों, इस पुरस्कार में से आधा आप ले लीजिए।" यह सुनते ही वे सैनिक प्रसन्न हो जाते हैं। यहाँ पर जो स्थिति चित्रित की गई है, वह अत्यंत सूक्ष्म व्यंग्य के साथ लोकजीवन की एक सच्चाई को प्रकट करती है–मानवीय प्रवृत्तियाँ, लोभ, दबाव और समझौते की मानसिकता–ये सब आज के समाज में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे।

इस छोटे से प्रसंग के माध्यम से कालिदास यह सिद्ध कर देते हैं कि उनका काव्य केवल उच्च आदर्शों और राजदरबारों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें सामान्य जन, उनकी समस्याएँ, उनका व्यवहार और उनकी मनोवृत्तियाँ भी उतनी ही गहराई से उपस्थित हैं। यही कारण है कि संस्कृत काव्य में लोक जीवन केवल एक विषय नहीं, बल्कि उसकी आत्मा के रूप में विद्यमान है। अंततः जब वे सैनिक उससे कहते हैं–"अब तुम हमारे मित्र हो गए हो, आओ इस मित्रता को दृढ़ करने के लिए मंदिर चलें"–तो यह प्रसंग केवल एक घटना नहीं रह जाता, बल्कि लोक व्यवहार की सहजता, व्यावहारिकता और मानवीय संबंधों की वास्तविकता का सजीव चित्र बन जाता है। इस प्रकार अभिज्ञानशाकुंतलम् में प्रस्तुत यह छोटा सा दृश्य यह प्रमाणित करता है कि कालिदास का काव्य केवल आदर्शों का आकाश नहीं, बल्कि लोकजीवन की धरती से गहराई से जुड़ा हुआ है।

इसी आधार पर निस्संदेह यह कहा जा सकता है कि संस्कृत काव्य में लोक जीवन केवल कहीं–कहीं नहीं, बल्कि पद–पद पर, पग–पग पर विद्यमान है। वह केवल चित्रण मात्र नहीं है, बल्कि वही उसका प्राण तत्व है। मेरा उद्देश्य भी यही रहा कि छोटे–छोटे उदाहरणों और दृष्टांतों के माध्यम से, काव्य के प्रयोजन और उसके उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, आपके समक्ष यह स्थापित कर सकूं कि संस्कृत कविता में लोक जीवन केवल दिखाई नहीं देता, अपितु वास्तव में लोक जीवन ही संस्कृत कविता का स्वरूप है।

आयोजकों ने मुझे इस पावन अवसर पर आमंत्रित किया, इसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ, और आप सभी ने मेरी बातों को धैर्यपूर्वक सुना, इसके लिए आप सभी को सादर साधुवाद एवं धन्यवाद।

भारत की आत्मा उसकी संस्कृति उसकी परंपराओं में बसती है

दिनांक - 19-11-2025

माननीय डॉ. मोहनदास हेगड़े
निदेशक हार्टफुलनेस रिसर्च सेंटर, मैसुर

नमस्कार। भारत की आत्मा उसकी संस्कृति और परंपराओं में बसती है, इस महत्वपूर्ण विषय पर मैं अपनी बात आप सभी के समक्ष रखने जा रहा हूं। देश जो समृद्ध संस्कृति और गौरवशाली पृष्ठभूमि लिए हुए है उसे पूरी दुनिया जानती है क्योंकि यह आज की देन नहीं है बल्कि सदियों से चली आ रही एक सतत परंपरा है और केवल हम भारतवासी ही नहीं बल्कि विदेशों में रहने वाले अनेक लोग भी इसे अत्यंत सम्मान और आदर की दृष्टि से देखते हैं, इसलिए आवश्यक है कि हम अपने देश के अतीत की ओर थोड़ा सा दृष्टिपात करें, हमारे देश की भौगोलिक संरचना और हमारी प्राचीन सभ्यता हजारों वर्षों पुरानी है और हमारी जो परंपराएं तथा सांस्कृतिक आयाम विकसित हुए हैं उनके पीछे अनेकों महापुरुषों, चिंतकों और समाज के विभिन्न वर्गों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

जैसा कि हमारी भक्ति परंपरा रही है और उसके बाद हमारे जितने भी आध्यात्मिक वैज्ञानिक रहे हैं जैसे आर्यभट, भास्कराचार्य तथा हमारे वेद, उपनिषद और भगवद्गीता जैसे महान ग्रंथ, इन सभी को जब हम देखते हैं तो हमें गर्व की अनुभूति होती है और प्रत्येक भारतवासी के भीतर यह गर्व होना अत्यंत आवश्यक है, आज हम अपने देश को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होते हुए देखकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। मैं स्वयं एक अर्थशास्त्री के रूप में यह समझता हूं कि पहले हमारा स्थान वैश्विक परिदृश्य में क्या था और आज हम किस प्रकार अग्रणी देशों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। हम स्पष्ट रूप से अपने देश की प्रगति को देख सकते हैं और विकसित भारत के स्वप्न को साकार होते हुए अनुभव कर सकते हैं।

हमारे यहां जो विचार रहा है "वसुधैव कुटुंबकम" अर्थात समस्त विश्व एक परिवार है, वह केवल एक वाक्य नहीं बल्कि हमारी जीवन दृष्टि है, इसी के आधार पर हम अपने पड़ोसी देशों और विश्व के अन्य राष्ट्रों के साथ अहिंसा और सौहार्द की भावना से आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। यह परंपरा हमारे यहां सदियों से चली आ रही है, और जब हम प्रार्थना करते हैं या अपने त्योहारों का उत्सव मनाते हैं तो वह केवल अपने लिए नहीं बल्कि समस्त मानव समाज के कल्याण के लिए होता है। हम अपने देशवासियों के साथ–साथ विश्व के सभी लोगों के सुख और शांति की कामना करते हैं, यह भावना हमें हमारे शास्त्रों से प्राप्त हुई है जैसे वेद, उपनिषद और भगवद्गीता, जिन्होंने हमें यह सिखाया है कि किसी के साथ भेदभाव न करते हुए सबको अपने परिवार के समान मानना ही सच्चा धर्म है, और इसी परंपरा में हमारी गुरुकुल पद्धति भी निहित रही है।

मैं अपनी ओर से यह कहना चाहूंगा कि हम जिस पद्धति में ध्यान करते हैं, जिस पद्धति का मैं अभ्यास करता हूं उसका नाम हार्टफुलनेस है, उसमें जो प्रशिक्षण दिया जाता है वह मूलतः गुरुकुल

परंपरा की ही भावना पर आधारित होता है, और गुरुकुल पद्धति का मूल स्वरूप यह है कि वह पूर्णतः विद्यार्थी केंद्रित होती है, अर्थात प्रत्येक विद्यार्थी की प्रकृति, उसकी प्रवृत्ति और उसकी आंतरिक क्षमता को ध्यान में रखते हुए उसे आगे बढ़ाया जाता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर जो अंतर्निहित चेतना, समझ और आत्मिक शक्ति है उसे जागृत किया जाए, यह अंतरावलोकन और आत्मनिरीक्षण के माध्यम से संभव होता है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक गहन और समृद्ध तत्व विद्यमान होता है जिसे कोई आत्मा कहता है, कोई रूह कहता है, कोई स्पिरिट कहता है, नाम भले ही अलग–अलग हों परंतु उसका सार एक ही है।

गुरुकुल पद्धति का उद्देश्य इसी आंतरिक तत्व को पहचानना और उसे विकसित करना है, यह पद्धति केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रहती कि हम कुछ पढ़ लें और परीक्षा के समय उसे लिख दें, बल्कि इसमें ज्ञान की प्राप्ति का तरीका गुरु के मार्गदर्शन से समझाया जाता है, गुरु स्वयं ज्ञान का भंडार देने के बजाय शिष्य के भीतर जो अवरोध हैं, जो क्लेश हैं, जो अशुद्धियाँ और जटिलताएँ हैं उन्हें दूर करने का कार्य करते हैं, और जैसे ही ये अवरोध दूर होते हैं वैसे ही व्यक्ति की आंतरिक आवाज, उसकी अंतःप्रेरणा और उसकी सहज बौद्धिक क्षमता स्वतः प्रकट होने लगती है।

हमारे वेदों में ही हमें आध्यात्मिक मनोविज्ञान का गहन और अत्यंत प्रभावशाली ज्ञान प्राप्त होता है, और यही वह आधार है जिसके माध्यम से हम आगे बढ़कर ध्यान जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांत को समझ सकते हैं। ध्यान का जो कॉन्सेप्ट है, उसके बारे में हमारे हार्टफुलनेस के ग्लोबल गाइड डॉक्टर कमलेश डी. पटेल यह बताते हैं कि "ध्यान" शब्द को यदि हम गहराई से समझें तो उसमें 'धी' और 'यान' का समन्वय है, जहां 'धी' का संबंध उस अंतर्यामिनी चेतना से है और 'यान' उस साधन से, अर्थात यह शरीर उस चेतना का वाहन है, और जब हम ध्यान में बैठते हैं तो धीरे–धीरे हमें अपने भीतर की अनेक गूढ़ बातें स्पष्ट होने लगती हैं। यह जो ज्ञान है, यह कोई बाहरी आयातित विचार नहीं है, बल्कि हमारे वेदों, हमारी संस्कृति और हमारी परंपरा से प्राप्त हुई एक अनमोल धरोहर है, जिसने सदियों से मानव जीवन को दिशा प्रदान की है।

इसके साथ–साथ हमारे यहां चरित्र निर्माण की जो परंपरा है, वह भी इसी आध्यात्मिक दृष्टि से जुड़ी हुई है, जहां व्यक्ति के बाहरी आचरण से अधिक उसके आंतरिक संस्कारों पर बल दिया जाता है। जब हम किसी को नमस्कार, नमस्ते या प्रणाम करते हैं, तो वह केवल एक औपचारिक अभिवादन नहीं होता, बल्कि वह इस भावना का प्रतीक होता है कि मेरे भीतर स्थित आत्मा आपके भीतर स्थित आत्मा को स्वीकार करते हुए नमन कर रही है, और यही हमारे भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है। यही वह दृष्टिकोण है जो हमें विविधताओं के बीच एकता का अनुभव कराता है, क्योंकि हमारे देश में अनेक भाषाएं हैं, अनेक संस्कृतियां हैं, अनेक जीवन शैलियां हैं, फिर भी हम सभी अपने आप को "हिंदुस्तानी" कहते हैं, क्योंकि हमारी पहचान उस व्यापक

भारतीयता से जुड़ी हुई है, जिसने हमें एक सूत्र में बांध रखा है। इसी कारण से हमारे जीवन में अनेक उपलब्धियां आई हैं, अनेक सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं, और आज हम गर्व के साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत को विश्व के सामने प्रस्तुत कर पा रहे हैं। यदि हम योग, आयुर्वेद, शास्त्रीय कलाओं और पारिवारिक परंपराओं की ओर देखें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे यहां जीवन के प्रत्येक पक्ष को एक संतुलित और समन्वित दृष्टि से देखा गया है, और यही कारण है कि आज "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस" जैसे आयोजन विश्व के कोने–कोने में मनाए जाते हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि हमारी परंपराएं केवल हमारे लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी और कल्याणकारी हैं।

आज लगभग सभी लोग यह समझने लगे हैं कि योग के पीछे गहरी वैज्ञानिकता निहित है, क्योंकि यह केवल एक अभ्यास नहीं बल्कि ऐसा समग्र साधन है जिसके माध्यम से हम अपनी मानसिक स्थिति को संतुलित रख सकते हैं। वर्तमान समय में चारों ओर तनाव का वातावरण है, और यह तनाव केवल बाहरी परिस्थितियों के कारण नहीं, बल्कि इस कारण भी है कि हम अपनी संस्कृति, अपनी परंपराओं और अपने मूल आधार से धीरे–धीरे दूर होते जा रहे हैं। पाश्चात्य विचारों और जीवनशैली को अपनाना अपने आप में गलत नहीं है, अनेक क्षेत्रों में उससे हमें लाभ भी हुआ है, किंतु समस्या तब उत्पन्न होती है जब हम अपनी जड़ों को ही भूल जाते हैं और अपने मूल को त्याग देते हैं। यही कारण है कि बार–बार यह कहा जाता है कि हमें अपनी संस्कृति की ओर लौटना होगा, क्योंकि वहीं से योग की शुरुआत होती है। "योग" का अर्थ ही है–जो जोड़ दे, जो एकता स्थापित करे जब मन और आत्मा का समन्वय होता है और वह परमात्मा से जुड़ता है, तब व्यक्ति वास्तविक संतुलन और शांति का अनुभव करता है।

आज हम जिस खुशी की तलाश बाहर की वस्तुओं में करते हैं, वह वास्तव में भीतर से प्राप्त होने वाली अनुभूति है। यह कोई नई बात नहीं है, हमारे समस्त साहित्य, हमारी परंपराएं, हमारे शास्त्र बार–बार यही बताते आए हैं कि आनंद का स्रोत बाह्य नहीं, अपितु आंतरिक है। उपनिषदों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अपने भीतर झांकिए, स्वयं को पहचानिए, और इसके लिए आवश्यक है कि हम अंतर्मुखी बनें, और यही अंतर्मुखता हमें योग और ध्यान सिखाते हैं। जब हम ध्यान की प्रक्रिया में बैठते हैं तो प्रारंभ में कठिनाई अवश्य होती है, एकाग्रता तुरंत नहीं आती, किंतु निरंतर अभ्यास के माध्यम से धीरे–धीरे मन स्थिर होने लगता है, व्यक्ति अंतर्मुखी होने लगता है और उसके भीतर की स्पष्टता बढ़ने लगती है। बाहरी संसार निरंतर हमें विचलित करता रहता है, अनेक प्रकार के आकर्षण, भ्रम और विकर्षण उत्पन्न करता है, जिसके कारण हमारे भीतर अस्थिरता और उलझन बढ़ती जाती है, किंतु ध्यान और योग के अभ्यास से हम उस बाहरी शोर से ऊपर उठकर अपने भीतर की शांति से जुड़ पाते हैं, और यही जुड़ाव हमें वास्तविक संतुलन, स्पष्टता और स्थायी आनंद की ओर ले जाता है।

यह जो हमारी आसक्ति है, यह जो पूरा मटेरियल कॉन्सेप्ट है, उसमें मनुष्य लगातार

उलझता चला जाता है। यह भी सत्य है कि भौतिक विकास अत्यंत आवश्यक है, और उसी के कारण आज हम यहां बैठे हैं, संवाद कर पा रहे हैं, तकनीकी साधनों के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं–यह सब मटेरियल डेवलपमेंट का ही परिणाम है। किंतु इसके साथ–साथ यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि हमारे भीतर शांति बनी रहे। बाहरी प्रगति और आंतरिक संतुलन–दोनों का समन्वय ही वास्तविक विकास है। इसलिए मैं सभी श्रोताओं से यह निवेदन करना चाहूंगा कि हम अपने भीतर की शांति, अपने मानसिक संतुलन, अपने 'पीस ऑफ माइंड' के साथ कभी समझौता न करें। जीवन में उपलब्धियां, पद, प्रतिष्ठा, साधन–ये सब महत्वपूर्ण हो सकते हैं, परंतु यदि मन अशांत है तो इन सबका कोई वास्तविक अर्थ नहीं रह जाता।

मुझे एक अवसर याद आता है जब हम मैसूर में तत्वशास्त्र विभाग से जुड़े एक बड़े सम्मेलन में गए थे, जहां विभिन्न विषयों पर शोध कर रहे पीएचडी विद्यार्थियों के साथ एक अंतरविषयी कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसे हार्टफुलनेस रिसर्च के संदर्भ में भी देखा जा रहा था। उस सम्मेलन का विषय भी हमारी परंपरा, विशेष रूप से योगशास्त्र की परंपरा से संबंधित था। उस अवसर पर उद्घाटन भाषण के लिए एक महान संत पधारे थे–वाराणसी से जुड़े योग परंपरा के एक अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्तित्व, जिनका जीवन ही साधना और अनुशासन का उदाहरण था। उन्होंने बहुत विस्तार से तो नहीं, परंतु अत्यंत सारगर्भित एक वाक्य में पूरी जीवन–दृष्टि स्पष्ट कर दी। उनका संदेश था कि यदि मन शांत है, तो मनुष्य जीवन में सब कुछ कर सकता है।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि संतोष, सुकून, वास्तविक आनंद और यहां तक कि हमारा स्वास्थ्य–इन सबका मूल स्रोत मन की शांति ही है। यदि मन अशांत है, तो बाहरी उपलब्धियां भी हमें संतुष्टि नहीं दे सकतीं, और यदि मन शांत है, तो सीमित साधनों में भी व्यक्ति संतुष्ट और प्रसन्न रह सकता है। इसलिए इस शांति के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता। उन्होंने वहां उपस्थित लगभग दो सौ से अधिक विद्यार्थियों और विद्वानों को यही संदेश दिया कि जीवन की दिशा चाहे कोई भी हो – शोध, करियर, समाज सेवा या व्यक्तिगत उन्नति – उसकी आधारशिला मन की शांति ही होनी चाहिए, क्योंकि वही सभी उपलब्धियों को सार्थक बनाती है।

उस पूरे आयोजन से जो सबसे महत्वपूर्ण संदेश हमें प्राप्त हुआ, वह यही था कि अपने भीतर की शांति के साथ किसी भी परिस्थिति में समझौता नहीं करना चाहिए। यही हमारी धरोहर है, यही भारत की सबसे समृद्ध और मूल्यवान अवधारणाओं में से एक है। इसलिए मैं सभी श्रोताओं से निवेदन करना चाहूंगा कि अपने मूल आधार को, अपनी जड़ों को, अपने बुनियाद को निरंतर मजबूत बनाते रहें, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक आंतरिक संरचना होती है, उसका अपना एक आधार होता है, और वही आधार उसे स्थिरता प्रदान करता है। आज हम जिस बेचौनी, असंतोष और मानसिक अशांति का अनुभव कर रहे हैं, उसका एक बड़ा कारण यह है कि हम अपने मूल संस्कारों, अपनी परंपराओं और अपनी संस्कृति से दूर होते चले गए हैं।

विशेष बात यह है कि जिन मूल्यों को हम कभी साधारण समझकर उपेक्षित कर रहे हैं, उन्हें आज पाश्चात्य देश भी स्वीकार कर रहे हैं और उन पर गंभीर शोध कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान प्रणाली और हमारी परंपराएं आज वैश्विक स्तर पर अध्ययन और अनुसंधान का विषय बन चुकी हैं, क्योंकि इनमें अत्यंत गहन और समृद्ध विचार निहित हैं। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम स्वयं अपने सत्य को पहचानें, अपने अतीत को समझें और अपने सांस्कृतिक आधार को पुनः आत्मसात करें।

हाल ही में उदयपुर में "विकसित भारत" और "इंडियन नॉलेज सिस्टम" विषय पर एक महत्वपूर्ण सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें एक पूर्व कुलपति प्रोफेसर बी.पी. सिंह ने अत्यंत सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि भविष्य में भारत विश्व का नेतृत्व कर सकता है, और इसका आधार हमारी ज्ञान परंपरा है। उन्होंने यह भी संकेत किया कि हमारे वेदों में जो ज्ञान निहित है, वह केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यंत गहन है। आधुनिक विज्ञान, विशेषकर भौतिकी, जिन सिद्धांतों को आज खोज रहा है, उनकी झलक हमारे प्राचीन ग्रंथों में पहले से विद्यमान है। इसलिए उन्होंने यह प्रेरणा दी कि यदि हम अपने वेदों और परंपरागत ज्ञान की ओर पुनः गंभीरता से ध्यान दें, तो हमें अनेक गूढ़ सत्य समझ में आ सकते हैं।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम बाहरी प्रगति के साथ–साथ अपने आंतरिक और सांस्कृतिक आधार को भी सुदृढ़ करें, क्योंकि यही संतुलन हमें न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर भी एक सशक्त और संतुलित दिशा प्रदान कर सकता है।

मुझे स्मरण है कि हमारे महान वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जब विदेशों में अपने विचार प्रस्तुत कर रहे थे, तब उन्होंने एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात कही थी। उन्होंने संकेत किया कि जिन उन्नत अस्त्र–शस्त्रों और तकनीकों की चर्चा आज आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में की जाती है, उनके मूल सिद्धांतों की झलक हमें हमारे प्राचीन ग्रंथों–महाभारत और रामायण–में भी मिलती है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि उस समय के अस्त्र केवल भौतिक नहीं थे, बल्कि उनके पीछे साधना, मंत्रशक्ति और गहन आंतरिक एकाग्रता का आधार था। प्रत्येक योद्धा अपने तप, अपने अनुशासन और अपनी साधना के माध्यम से उस शक्ति को प्राप्त करता था। इसका तात्पर्य यह नहीं कि वह सब केवल अतीत की बात है। वास्तव में वह चेतना, वह साधना, वह क्षमता आज भी उपलब्ध है, यदि हम उसे अपनाने का प्रयास करें। यही ध्यान का मूल सिद्धांत है, जो हमें हमारे भीतर की उस शक्ति से जोड़ता है।

आज यह देखकर प्रसन्नता होती है कि अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को ध्यान की प्रक्रिया से जोड़ा जा रहा है। जब हम विभिन्न संस्थानों में जाते हैं, तो हम भी विद्यार्थियों को पहले विश्राम की अवस्था में लाते हैं, क्योंकि बिना मानसिक शिथिलता के ध्यान संभव नहीं होता। जब मन शांत और सहज हो जाता है, तब वह स्वाभाविक

रूप से अंतर्मुखी होने लगता है और व्यक्ति अपने भीतर की यात्रा प्रारंभ कर सकता है। इसी संदर्भ में एक अत्यंत विशिष्ट अवधारणा भी आती है, जिसे "ट्रांसमिशन" या "प्राण संचार" कहा जाता है। यह भी हमारी प्राचीन परंपरा की ही देन है, यद्यपि आज यह व्यापक रूप से दिखाई नहीं देती। सामान्यतः हम केवल वाइब्रेशन की बात करते हैं, परंतु ट्रांसमिशन उससे कहीं अधिक सूक्ष्म और प्रभावी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से साधक का आंतरिक विकास और भी तीव्र हो सकता है।

अतः मैं सभी श्रोताओं से पुनः निवेदन करता हूं कि वे यह स्मरण रखें कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अपार संभावनाएं विद्यमान हैं। हमारे भीतर ही हमारी संस्कृति की समृद्धि है, हमारे भीतर ही वह संपूर्ण ज्ञान निहित है, जो जीवन को सही ढंग से जीने की दिशा देता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम अपने मन को शांत रखें, क्योंकि जब मन शांत होता है, तब हमारी अंतःप्रेरणा, हमारी अंतर्ज्ञान शक्ति जागृत होने लगती है। यही वह शक्ति है, जिसके बारे में हमारे मार्गदर्शक यह कहते हैं कि इस संसार में कोई भी महान शोध केवल बौद्धिक प्रयास से नहीं हुआ, बल्कि अंतर्ज्ञान की शक्ति से ही संभव हुआ है। इसी को हम विवेक, प्रज्ञा या आंतरिक आवाज कह सकते हैं। यही हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का सार है, और इसी के बल पर भारत ने अतीत में भी विश्व को दिशा दी है और भविष्य में भी दे सकता है।

जैसा कि हमारे यहां तक्षशिला और नालंदा जैसे महान विश्वविद्यालय हुआ करते थे, जहां विश्व के कोने–कोने से विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते थे, वैसा ही एक समय था जब भारत ज्ञान का वैश्विक केंद्र माना जाता था। आज हम शिक्षा के लिए पाश्चात्य देशों की ओर जाते हैं, किंतु उस समय विदेशों से लोग हमारे यहां आते थे, हमारे ज्ञान, हमारी परंपरा और हमारी शिक्षा प्रणाली को सीखने के लिए। आचार्य चाणक्य जैसे महान आचार्यों का नाम हम लेते हैं, परंतु यह भी सत्य है कि उस काल में अनेक महान विद्वान थे, और शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह शोध और गहन अध्ययन पर आधारित थी। नालंदा और तक्षशिला में जो शिक्षा दी जाती थी, वह आज के "रिसर्च एंड डेवलपमेंट" की संकल्पना के समान थी, जहां विद्यार्थी केवल जानकारी प्राप्त नहीं करते थे, बल्कि हर विषय पर शोध करते थे, उसे समझते थे और उसमें निपुणता प्राप्त करते थे।

इसी संदर्भ में जब हम यह विचार करते हैं कि "भारत की आत्मा क्या है", तो यह स्पष्ट होता है कि जैसे मनुष्य की आत्मा उसकी आंतरिक चेतना है, उसी प्रकार भारत की आत्मा उसकी संस्कृति और उसकी परंपराएं हैं। हमारे संस्कार, हमारे मूल्य, हमारे आचरण–यही इस राष्ट्र की वास्तविक पहचान हैं। हम अपने बुजुर्गों को जो सम्मान देते हैं, महिलाओं के प्रति जो आदरभाव रखते हैं, समाज के प्रत्येक व्यक्ति के प्रति जो संवेदनशीलता रखते हैं–यही हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। यह केवल सामाजिक व्यवहार नहीं, बल्कि एक गहरी सांस्कृतिक चेतना का परिचायक है।

मुझे एक छोटा सा अनुभव स्मरण आता है। एक बार मैं दुबई में था और टैक्सी से एक स्थान की ओर जा रहा था, जहां एक मंदिर और गुरुद्वारा स्थित है। उस समय वहां बहुत भीड़ थी, संभवतः कोई त्योहार था। अचानक टैक्सी चालक ने बिना किसी निर्धारित क्रॉसिंग के ही गाड़ी रोक दी। मैंने उससे पूछा कि आपने यहां गाड़ी क्यों रोकी, जबकि यह कोई आधिकारिक स्थान नहीं है। उसका उत्तर अत्यंत भावपूर्ण था। उसने कहा कि "देवियां" सड़क पार कर रही हैं, इसलिए उसने गाड़ी रोक दी। उसका यह उत्तर केवल एक सामान्य वाक्य नहीं था, बल्कि वह उस सांस्कृतिक दृष्टिकोण को दर्शाता है, जिसमें स्त्री को केवल व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि आदर और श्रद्धा के भाव से देखा जाता है। यह वही दृष्टि है, जो हमारी भारतीय संस्कृति की आत्मा में निहित है–जहां नारी को 'देवी' के रूप में सम्मानित किया जाता है।

अतः जब हम भारत की आत्मा की बात करते हैं, तो वह केवल भौगोलिक या राजनीतिक परिभाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह हमारे संस्कारों, हमारे मूल्यों, हमारी परंपराओं और हमारी जीवन–दृष्टि में निहित है। यही वह आधार है, जो हमें विशिष्ट बनाता है और जो हमें भविष्य में भी विश्व को दिशा देने की क्षमता प्रदान करता है।

देखिए हम अपने कल्चर के बारे में जितना जानते हैं, कई बार उससे अधिक या उतना ही बाहर के लोग भी हमारे बारे में जानते हैं, इसलिए क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम स्वयं अपनी जड़ों, अपने बुनियाद के बारे में गहराई से अध्ययन करें, उसे समझें और उसकी जानकारी अपने भीतर संजोकर रखें, क्योंकि जब यह ज्ञान हमारे भीतर होगा तब हम पूरे आत्मविश्वास के साथ, पूरे गर्व के साथ इस विश्व के समक्ष कह सकेंगे कि हम भारतवासी हैं, हमें अपने देश, अपनी संस्कृति और अपनी परंपराओं पर गर्व है, अतः आज के इस शीर्षक के माध्यम से हमें यह समझना आवश्यक है कि हमारा ध्यान, आयुर्वेद, हमारी शास्त्रीय कलाएं और हमारा योगकृये सभी केवल परंपराएं नहीं हैं, बल्कि हमारे जीवन के निर्माण के आधार हैं, ये हमारे मन को शांति देते हैं, हमारे चरित्र का निर्माण करते हैं और हमें एक संतुलित तथा सार्थक जीवन जीने की दिशा प्रदान करते हैं, इसके साथ ही हमारे देश का आर्थिक विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है और वह निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है, आने वाले समय में भारत विश्व में एक अग्रणी भूमिका निभाएगा, यह विश्वास हमारे भीतर होना चाहिए, और इस दिशा में हम सभी को अपने–अपने स्तर पर प्रयास करना होगा, इसी भावना के साथ मैं अपनी बात को विराम देते हुए इस विचार को पुनः स्थापित करना चाहता हूं कि भारत की आत्मा उसकी संस्कृति और परंपराओं में ही निहित है, आप सभी को मेरा सादर नमन।

अध्यक्षीय उद्बोधन

दिनांक - 19-11-2025

माननीय श्री तुलसीदास परोहा
वरिष्ठ शिक्षाविद एवं साहित्यकार

चिंतामण गणेशं, काली, महाकालेश्वरं देवं, कविता वनिता विलास लास्यम्, कवि कुलगुरु वंदे। 23वीं अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला में आज हम एक अत्यंत महत्वपूर्ण और समसामयिक विषय पर विचार करेंगे –भारत की आत्मा उसकी संस्कृति और उसकी परंपराओं में बसती है।

मैं आपको ऋग्वेद के उस मंत्र की ओर ले चलूंगा, यजुर्वेद के सातवें अध्याय के चौदहवें मंत्र का एक पद है–"सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा", इसका अर्थ यह है कि भारत की संस्कृति विश्व की प्रथम संस्कृति है और वह ऐसी महान संस्कृति है जो समस्त विश्व को एक परिवार के रूप में देखती है, इसलिए यह संस्कृति अपनाने के साथ जीवन में उतारने योग्य भी है, क्योंकि यही वह संस्कृति है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का कार्य करती है। यह वर्ग, विचार और संप्रदाय से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता के कल्याण की बात करती है, उसकी चिंता करती है, और इतना ही नहीं यह एक ऐसी व्यापक संस्कृति है जिसके परिवार में केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु, पक्षी और समस्त स्थावर–पेड़–पौधे तक सम्मिलित हैं, इतना विराट दृष्टिकोण इस संस्कृति की मूल भावना में निहित है, आज हम उसी महान संस्कृति पर विचार करने के लिए यहां उपस्थित हुए हैं।

इसी संदर्भ में मैं आपका ध्यान महाराज मनु के वचनों की ओर आकर्षित करना चाहूंगा, मनुस्मृति में उन्होंने कहा है–"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः", अर्थात हे भारतभूमि में जन्म लेने वालों, आप उन श्रेष्ठ जनों में हैं जिन पर यह नैसर्गिक उत्तरदायित्व है कि आप अपनी महान संस्कृति को अपने आचरण के माध्यम से विश्व के समक्ष प्रस्तुत करें, इसे केवल उपदेश के रूप में न कहें बल्कि अपने जीवन में उतारकर दिखाएं, मनु यहां विशेष रूप से यह नहीं कहते कि दूसरों को शिक्षा दो, बल्कि यह कहते हैं कि अपने चरित्र से सिखाओ कि मानव जीवन किस प्रकार जिया जाता है, हमारी भारतीय संस्कृति हमें इसी आदर्श जीवन की प्रेरणा देती है और इसी कारण हमारे आदर्श पुरुष के रूप में भगवान श्रीराम का स्मरण किया जाता है।

श्रीराम हमारी संस्कृति के ही नहीं बल्कि विश्व संस्कृति, विश्व सभ्यता और विश्व विचार के ऐसे महान पुरुष हैं जिनके समान आज तक कोई दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है, उनका विचार और उनका व्यवहार दोनों ही एक आदर्श पुरुष के स्वरूप को प्रकट करते हैं, एक श्रेष्ठ नागरिक कैसा होना चाहिए यह हमें श्रीराम के चरित्र से सीखने को मिलता है, यही हमारी संस्कृति का मूल संदेश है कि हम सब "सम गच्छध्वं, सम वदध्वं, सम वो मनांसि जानताम्" की भावना से आगे बढ़ें, अर्थात हमारी गति, हमारे विचार और हमारी वाणी में एकता होनी चाहिए, जिस प्रकार एक परिवार

में सभी सदस्य एक–दूसरे के पूरक होते हैं, एक–दूसरे के सुख–दुख में सहभागी होते हैं और एक–दूसरे का सुख अपना सुख तथा दूसरे का दुख अपना दुख मानकर सहयोग करते हैं, उसी प्रकार हमें भी इस महान पारिवारिक परंपरा के अनुसार संगठित होकर श्रेष्ठ विचारों को अपनाना चाहिए और श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करना चाहिए, साथ ही हमें अपनी वाणी और अपने व्यवहार से ऐसा प्रभाव उत्पन्न करना चाहिए कि लोग प्रेरित होकर उसी मार्ग को अपनाने के लिए अग्रसर हों, हमारी संस्कृति हमें भौतिक वस्तुओं के संग्रह का नहीं बल्कि उन्हें साझा करने का संदेश देती है, यह संग्रह नहीं बल्कि त्याग और वितरण की संस्कृति है, अभी पूर्व वक्ता श्रद्धेय हेगड़े जी ने एक महत्वपूर्ण बात कही कि वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या मन की अशांति और विचलन है, विशेष रूप से युवा वर्ग इस समस्या से अधिक प्रभावित है और इसका प्रमुख कारण यही है कि हमारे भीतर संग्रहवादी और भौतिकवादी प्रवृत्तियां अत्यधिक बढ़ गई हैं, जिन्होंने हमारे मन की शांति को प्रभावित कर दिया है।

हम अपने मूल उद्देश्यों से हटकर भौतिकवाद की अंधी दौड़ में इस प्रकार सम्मिलित हो चुके हैं कि हम दिन–रात केवल इस प्रयास में लगे रहते हैं कि अधिक से अधिक सुख के साधनों का संग्रह कर लें और हमें यह भ्रम रहता है कि इन संसाधनों के एकत्र होने से हमें सुख प्राप्त होगा। पूरा जीवन हम इन्हीं भौतिक पदार्थों के संग्रह में अपनी ऊर्जा और समय का व्यय करते हैं, किंतु आश्चर्य यह है कि इतना सब कुछ प्राप्त कर लेने के बाद भी हमारा मन अशांत ही बना रहता है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि भौतिक पदार्थों के संग्रह में शांति नहीं है और इनके माध्यम से वास्तविक सुख की प्राप्ति संभव नहीं है, क्योंकि सुख मन का विषय है और मन कभी भी बाहरी वस्तुओं के संग्रह से पूर्ण संतुष्ट नहीं होता, इसी कारण ईशावास्य उपनिषद के प्रथम मंत्र में हमें यह गहन शिक्षा दी गई है–"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा", अर्थात यदि आप सच्चे अर्थों में प्रसन्न, सुखी और आनंदित रहना चाहते हैं तो त्याग की भावना के साथ उपभोग करना सीखें, इस मंत्र का व्यापक अर्थ यह है कि "ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्", इस समस्त जगत में जो कुछ भी दृश्य और अदृश्य रूप में विद्यमान है वह सब ईश्वरमय है, ईश्वर की ही सत्ता से परिपूर्ण है, ऐसे में किसी वस्तु पर हमारा जो स्वामित्व–बोध है वह वास्तव में केवल मिथ्या अहंकार है, क्योंकि जब हम इस संसार में आए थे तब हमारे पास कुछ भी नहीं था और जब हम जाएंगे तब भी कुछ साथ नहीं ले जा सकेंगे, फिर भी हम अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हुए दूसरों के अधिकारों पर कब्जा कर लेते हैं और उन्हीं वस्तुओं में अपना अहंकार स्थापित कर लेते हैं। यही कारण है कि संग्रह बढ़ता जाता है परंतु शांति हमसे दूर होती जाती है।

इसलिए श्रुति हमें यह उपदेश देती है–"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्", अर्थात किसी दूसरे के धन पर कभी गिद्ध दृष्टि न रखें, त्याग की भावना से वस्तुओं का उपयोग करें, यही वास्तविक सुख का मूल है। इस संदर्भ में एक वरिष्ठ प्रचारक का दिया हुआ उदाहरण स्मरण आता है। उन्होंने बताया कि एक बार महात्मा गांधी प्रयागराज गए और वहां आनंद भवन में उन्होंने भोजन किया, भोजन के पश्चात जब जवाहरलाल नेहरू उन्हें हाथ धुलाने के लिए बाहर ले

गए तो चर्चा में इतने तल्लीन हो गए कि एक लोटा पानी हाथ धोते–धोते नीचे गिर गया, जब गांधीजी ने देखा कि उनके हाथ ठीक से साफ नहीं हुए हैं तो उन्हें अत्यंत पश्चाताप हुआ और उन्होंने कहा कि आज मैं पूरे दिन पानी नहीं पियूंगा, क्योंकि मैंने एक लोटा पानी व्यर्थ नष्ट कर दिया, जबकि मुझे हाथ धोने के लिए एक गिलास से भी कम पानी पर्याप्त था। यह सुनकर जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि बापू, आप क्यों चिंता करते हैं, यहां तो गंगा, यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी बहती है, यहां पानी की कोई कमी नहीं है, आप जितना चाहें उतना पानी उपयोग कर सकते हैं। तब गांधीजी ने जो उत्तर दिया वह अत्यंत महत्वपूर्ण और विचारणीय है कि– जवाहर, क्या यह गंगा, यमुना और सरस्वती केवल हमारे लिए बहती हैं, क्या इन पर केवल हमारा ही अधिकार है, यदि मैंने अपनी आवश्यकता से अधिक जल का अपव्यय किया है तो वह किसी दूसरे के हिस्से का था। यह नदियाँ करोड़ों लोगों के लिए बहती हैं। असंख्य जीव–जंतु इनके जल पर निर्भर हैं, यदि हम आवश्यकता से अधिक किसी वस्तु का उपयोग करते हैं तो वास्तव में हम किसी और के अधिकार का हनन करते हैं, इसलिए मैं आज पानी नहीं पियूंगा।

ऐसे महान व्यक्तित्वों के आचरण ही हमारी भारतीय संस्कृति के जीवंत उदाहरण हैं, इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमारी संस्कृति त्याग और संयम का मार्ग दिखाती है, यदि हम श्रीराम के चरित्र को देखें तो हमें आदर्श परिवार का सर्वोत्तम स्वरूप दिखाई देता है, वहां दो भाइयों के बीच संघर्ष इस बात को लेकर नहीं है कि राज्य कौन लेगा बल्कि इस बात को लेकर है कि राज्य कौन नहीं लेगा, आज के समय में हम देखते हैं कि छोटी–छोटी वस्तुओं के लिए भी भाई–भाई के बीच विवाद हो जाते हैं, परंतु श्रीराम के आदर्श में भरत अयोध्या का राज्य इसलिए स्वीकार नहीं करते क्योंकि वह बड़े भाई का अधिकार है और श्रीराम स्वयं राज्य इसलिए नहीं लेते क्योंकि पिता के वचनानुसार उन्हें चौदह वर्ष का वनवास मिला है, यह त्याग, मर्यादा और कर्तव्य का अद्भुत उदाहरण हमारी संस्कृति की महानता को प्रकट करता है।

आप समझ सकते हैं कि हमारी संस्कृति के मूल्य कितने महान हैं और उसकी आचरण संहिता कितनी उच्च है, जहां दो भाई किसी वस्तु को पाने के लिए संघर्ष नहीं करते बल्कि एक–दूसरे को देने के लिए तत्पर रहते हैं, ऐसे उदाहरण विश्व में दुर्लभ हैं, अक्सर पूछा जाता है कि संस्कृति और सभ्यता में क्या अंतर है, दोनों शब्दों का बहुत प्रयोग होता है, तो विनम्रतापूर्वक कहना चाहूंगा कि संस्कृति और सभ्यता में सूक्ष्म अंतर होते हुए भी दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं, संस्कृति वह है जो हमारे शास्त्रों, वेदों, पुराणों और परंपरागत विचारों में निहित है, और जब वही विचार व्यवहार में उतरते हैं तो वह सभ्यता कहलाते हैं।

जैसे हमारे यहां कहा गया–"अतिथि देवो भव", अर्थात अतिथि को देवता मानकर उसका सत्कार करना चाहिए, यह एक विचार है, इसे जानना संस्कृति है, और जब कोई अतिथि हमारे द्वार पर आता है, हम उसे आदरपूर्वक बैठाते हैं, जल पिलाते हैं, उसका कुशलक्षेम पूछते हैं और प्रेमपूर्वक उसका स्वागत करते हैं, तो यह उस विचार का व्यवहारिक रूप है, जिसे हम सभ्यता कहते हैं। इस प्रकार संस्कृति और सभ्यता एक ही प्रक्रिया के दो पक्ष हैं और दोनों का परस्पर

गहरा संबंध है, हमारी संस्कृति के अंतर्गत कई प्रमुख तत्व आते हैं जैसे वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, स्त्री शिक्षा, स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण, सोलह संस्कार और अध्यात्म, ये सभी मिलकर हमारी संस्कृति की समग्र संरचना को निर्मित करते हैं।

मैं बहुत संक्षेप में अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए इसे पूर्ण करना चाहूंगा, सबसे पहले यदि हम पुरुषार्थ की बात करें तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ हमारे यहां बताए गए हैं, इनमें से धर्म पर थोड़ी विशेष चर्चा आवश्यक है क्योंकि वर्तमान समय में धर्म को इतना विवादित बना दिया गया है कि लोगों में इसके प्रति भ्रम उत्पन्न हो गया है और 'धर्मनिरपेक्ष' जैसे शब्दों के राजनीतिक प्रयोग ने इस भ्रम को और बढ़ा दिया है, इसलिए यह समझना आवश्यक है कि वास्तव में धर्म है क्या, हमारी भारतीय संस्कृति में धर्म का अर्थ किसी विशेष संप्रदाय, मत या विचारधारा को मानना और उसका अनुकरण करना नहीं है, बल्कि धर्म एक अत्यंत व्यापक अवधारणा है, हमारे यहां धर्म की व्याख्या दो रूपों में की गई है—गुण रूप में और क्रिया रूप में, अर्थात जो हमारे स्वभाव और आचरण दोनों में प्रकट होता है, इसी संदर्भ में वैशेषिक दर्शन में धर्म की परिभाषा दी गई है—"यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः", अर्थात जिस आचरण और जिन विचारों से व्यक्ति का अभ्युदय अर्थात समग्र उन्नति और निःश्रेयस अर्थात परम कल्याण होता है, वही धर्म है, और यह अभ्युदय केवल व्यक्तिगत नहीं होता, बल्कि तब पूर्ण माना जाता है जब उस व्यक्ति के साथ जुड़े हुए सभी लोगों का भी विकास और कल्याण सुनिश्चित हो।

केवल एक व्यक्ति का विकास ही धर्म नहीं है, बल्कि जब ऐसे श्रेष्ठ विचार और आचरण अपनाए जाएं जिनसे आप और आपसे जुड़े सभी लोगों का उत्कर्ष हो, सभी को सुख और प्रसन्नता प्राप्त हो, ऐसे विचारों और कार्यों का समुच्चय ही धर्म कहलाता है, इसलिए महाभारत में कहा गया है—"धारणात् धर्म इत्याहुः, धर्मो धारयते प्रजाः", अर्थात धर्म वह है जिसे धारण किया जाता है । जो व्यक्ति धर्म को धारण करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है और उसे पतन से बचाता है, क्योंकि अनेक बार हमारा मन गलत कार्यों की ओर प्रवृत्त होता है, तब धर्म ही हमें रोकता है और भीतर से यह भावना उत्पन्न होती है कि यह मेरा धर्म नहीं है, यह अधर्म है, इसलिए इसे नहीं करना चाहिए, भागवत में भी धर्म की एक सरल और अत्यंत सुंदर व्याख्या दी गई है—"स वै पुंसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे, अहैतुकी अप्रतिहता ययाऽत्मा सुप्रसीदति", अर्थात वह धर्म श्रेष्ठ है जिसके पालन से हमारी आत्मा प्रसन्न हो, जिस कार्य को करने के बाद हमें आंतरिक संतोष और आनंद की अनुभूति हो, और जिससे ईश्वर के प्रति हमारी श्रद्धा और भक्ति बढ़े, वही वास्तविक धर्म है।

महाभारत के वन पर्व में अज्ञातवास के दौरान पांडवों का वह प्रसंग हमें धर्म के मार्ग की गहन समझ देता है। जब पांडवों को प्यास लगी और वे पानी के लिए जंगल में गए, तो यक्ष उनसे प्रश्न करते हैं। जो उत्तर नहीं देते उन्हें यक्ष मार देता है। अंततः युधिष्ठिर से यक्ष प्रश्न पूछता है—"कः पंथा?" अर्थात, वह मार्ग बताइए जिसमें मनुष्य को वास्तव में चलना चाहिए। युधिष्ठिर का उत्तर अद्भुत है कि मनुष्य जीवन का सन्मार्ग केवल धर्म के अनुसरण में चलना है। लेकिन धर्म का स्वरूप समझने में कठिनाई हो सकती है, इसलिए कहा गया कि धर्म को जानने का

श्रेष्ठ मार्ग किसी महापुरुष के चरित्र को देखकर है। ऐसे महापुरुष श्री राम के रूप में प्रकट हुए। वाल्मीकि रामायण अरण्यकांड में जब रावण मारीच से कहता है कि सीता हरण करना है, मारीच उसे राम का परिचय देते हुए कहता है–"रामो विग्रहः, वान धर्मः, साधु सत्य, पराक्रमरू"कृराम धर्म के साक्षात प्रतिमान हैं। अर्थात, यदि धर्म को लेकर संदेह हो या भ्रम हो, तो राम के चरित्र का अध्ययन करना चाहिए। उनके जीवन और आचरण से हम धर्म की सही समझ प्राप्त कर सकते हैं।

संक्षेप में कहें तो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष – ये चार पुरुषार्थ तभी पूर्ण होते हैं जब हम श्री राम के जीवन के आदर्शों को अपने जीवन में आचरण करें। श्री राम हमारे संस्कृत के मूल पुरुष हैं और उनका चरित्र हमें श्रेष्ठ जीवन जीने की दिशा दिखाता है। 16 संस्कार हमारे व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण के लिए शास्त्रीय प्रक्रियाएं हैं। वर्ण व्यवस्था भी अत्यंत वैज्ञानिक रूप से बनाई गई थी–ईश्वर के शरीर के चार अंगों के समान चार वर्णों की सामाजिक व्यवस्था। लेकिन आज इस व्यवस्था को गलत समझा और प्रस्तुत किया जाता है। आदिवासी या अन्य तबकों को बताया जाता है कि वे "अछूत" हैं या ब्राह्मणों से दूर हैं। शास्त्रों में ऐसी बात कहीं नहीं लिखी है। जब ईश्वर के चार अंग–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र–एक शरीर का हिस्सा हैं, तो कोई अछूत कैसे हो सकता है? यदि हम गुरु या ईश्वर की पूजा करते हैं, तो पूरे शरीर की पूजा करते हैं। यह छुआछूत मध्यकाल में कुछ दुष्ट व्यक्तियों द्वारा बनाई गई भ्रांति है। मनुस्मृति और शास्त्रों में ऐसे पद्य यदि मिलते भी हैं, वे प्रक्षिप्त हैं, शास्त्रीय नहीं।

वाल्मीकि स्वयं बताते हैं कि रामायण में 500 सर्ग हैं, लेकिन जो आज मिलती है उसमें 611 सर्ग हैं। इसका अर्थ है कि समय के साथ उसमें श्लोक जोड़े गए। इसी प्रकार मनुस्मृति में भी छेड़छाड़ हुई। हमारी संस्कृति में छुआछूत का कोई स्थान नहीं था। श्री राम ने सभी को समान रूप से गले लगाया। आश्रम व्यवस्था अत्यंत वैज्ञानिक थी। 25 साल तक शिक्षा और अध्ययन पर ध्यान, 26 से 50 तक गृहस्थ जीवन–कमाई और परिवार, 50 से 75 तक वानप्रस्थ–अध्यात्म और पूजा, 76 साल के बाद मोक्ष और समाज सेवा। यह दिखाता है कि हमारी संस्कृति में जीवन को चरणबद्ध रूप से संतुलित रखने की कितनी समझ थी।

अध्यात्म हमारी संस्कृति का मूल तत्व है। आज मन अशांत है, युवा और बच्चे तनावग्रस्त और हिंसक हो रहे हैं। कुछ ने दस वर्ष की उम्र में ही जीवन खत्म किया। इसका कारण हमारी संस्कृति से दूर होना और माता–पिता का बच्चों को मूल संस्कार न देना है। यदि हम संस्कृति को जीवन में लाएँ और अध्यात्म के मूल्य बच्चों को सिखाएँ, तो ही भविष्य का भारत स्वस्थ और संतुलित बन सकता है।

मैं आपसे आग्रह करूंगा कि हम अपनी संस्कृति की ओर लौटें। संस्कृति हमें सिखाती है कि पूरे विश्व को एक परिवार मानकर चलें। अध्यात्म वह शक्ति है जो हमें अंदर से ताकत देती है। जब संकट आता है, हम भगवान के पास प्रार्थना करने जाते हैं। इस अज्ञात शक्ति के प्रति हमारी अगाध निष्ठा हमें कठोर परिस्थितियों से पार पाने में सक्षम बनाती है। यही हमारी संस्कृति का मूल तत्व है।

हमारी संस्कृति केवल मनुष्य तक सीमित नहीं है। महाकवि कालिदास की अभिज्ञान शाकुंतलम में उदाहरण आता है–शकुंतला अपनी सखा प्रियंबदा और अनुसूया के साथ पौधों को पानी दे रही है। वह कहती है कि यह काम केवल पिता के आदेश से नहीं करती, बल्कि अपने हृदय से, जैसे एक बड़ी बहन अपने छोटे भाइयों से करती है। पौधों और मृगों को भी अपने परिवार का हिस्सा मानकर वह उनका पालन–पोषण करती है। यही प्रेम और संवेदना हमारी संस्कृति का संदेश है, जो मनुष्य को प्रकृति और जीवों के साथ सहानुभूतिशील बनाती है।

दुनिया की किसी अन्य संस्कृति में इस प्रकार के महान मूल्यों की चर्चा नहीं मिली है। अन्य संस्कृतियां वर्ग विशेष या भोगवादी दृष्टि से जीवन जीना सिखाती हैं। लेकिन हमारी संस्कृति हमें सिखाती है–अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीना। अपने सुख से पहले दूसरों के सुख की चिंता करना, अपने दुख से पहले दूसरों के दुख को कम करना–यही हमारे मूल विचार हैं।

हम भगवान श्री राम, इस संस्कृति के आदर्श पुरुष, के चरित्र को अपनाकर जीवन जीते हैं। यह महान संस्कृति न केवल भारतीयों के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के उन लोगों के लिए आवश्यक है जो शांति, सुकून और वास्तविक आनंद का जीवन जीने की आकांक्षा रखते हैं।

यहीं मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। इस सद्भावना व्याख्यानमाला में मुझे अपने विचार पुष्प समर्पित करने का अवसर देने के लिए मैं आयोजन समिति के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उपस्थित श्रोताओं का हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

महात्मा गांधीजी और मानवतावाद

दिनांक - 20-11-2025

माननीया श्रीमती शैलजा बारूरे
वरिष्ठ शिक्षाविद् निदेशक महात्मा गांधी स्टडी सेन्टर, अंबाजोगाई (महाराष्ट्र)

सभी को मेरा सादर प्रणाम। सद्भावना व्याख्यानमाला में उपस्थित सभी श्रोताओं का हार्दिक स्वागत करते हुए अपना मंतव्य आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूं।

आज जब हम आधुनिक युग में विश्व स्तर पर मानवतावाद की चर्चा करते हैं तो इस विचारधारा में विश्वास रखने वाले विचारकों और समाज सुधारकों में महात्मा गांधीजी का नाम सर्वप्रथम आता है, क्योंकि उन्होंने पूरे विश्व को सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, नई तालीम, नैतिक शिक्षा, ग्राम स्वावलंबन और रामराज्य की अवधारणा जैसे उच्च विचारों की अमूल्य सौगात दी। उनके जीवन में जब भी संघर्ष की स्थिति आई या जब उन्होंने समाज को संघर्ष के लिए प्रेरित किया, तब उन्होंने केवल संघर्ष ही नहीं, बल्कि उसके साथ–साथ रचनात्मक कार्यों पर भी बल दिया, क्योंकि उनका मानना था कि केवल संघर्ष जीवन नहीं है, बल्कि रचनात्मक कार्यों के माध्यम से ही समाज में मानवीय मूल्य और सच्ची मानवता की स्थापना संभव है। महात्मा गांधीजी को हम संत, राजनेता या विभिन्न उपाधियों से जानते हैं, किन्तु उनकी वास्तविक पहचान एक महान मानवतावादी विचारक के रूप में है, वे प्रत्येक मनुष्य में ईश्वरत्व की संभावना देखते थे और हर व्यक्ति को नर से नारायण बनाने का स्वप्न रखते थे, चाहे वह दक्षिण अफ्रीका में उनका संघर्ष हो या भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, उनके हर प्रयास का मूल उद्देश्य मानवता की स्थापना ही था।

यह संघर्ष उनके जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे, फिर भी उन्होंने समस्त मानव समाज को जीवन जीने के लिए जिन मूल्यों की आवश्यकता है, उन मूल्यों की अमूल्य सौगात दी, उनका योगदान अत्यंत व्यापक और गहन है। महात्मा गांधीजी का संपूर्ण जीवन मानवता और मानवतावाद का एक सतत प्रयोग रहा है। स्वतंत्रता पूर्व भारत में और उससे पहले दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने सत्याग्रह के माध्यम से जनता को भयमुक्त करने का कार्य किया और वर्णभेद के विरुद्ध संघर्ष के लिए वहां के मजदूरों को संगठित किया। यह भय अनेक प्रकार का होता है–कभी शोषण का, कभी भूख का, कभी शासन या सरकार का, कभी पुलिस का और कभी अन्यायपूर्ण कानूनों का। इन सभी भयों से व्यक्ति को मुक्त करना ही महात्मा गांधीजी के जीवन का मूल उद्देश्य रहा और इस दिशा में वे सफल भी हुए।

हमारे किसान पुत्र आंदोलन के प्रणेता अमर हबीब जी ने एक बार अपने भाषण में कहा था कि गांधीजी जी के लिए भारत एक ऐसी प्रयोगशाला है, जिसमें उनके द्वारा किए गए प्रयोग केवल भारत को समृद्ध या सशक्त बनाने के लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व को एक मानवीय समाज के रूप में

विकसित करने और मानवतावादी मूल्यों की स्थापना करने के उद्देश्य से थे। भले ही हम गांधीजी को राष्ट्रपिता के रूप में जानते हैं, किन्तु उन्हें हमें संपूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक पूर्वज के रूप में समझना चाहिए। गांधीजी ने सत्याग्रह के माध्यम से यह सिद्ध किया कि शोषण का अंत रचनात्मक और अहिंसात्मक मार्ग से किया जा सकता है और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को उन्होंने अहिंसा के पथ पर सफल बनाया। उनके इन विचारों से विश्व के अनेक नेताओं और समाजसेवियों ने प्रेरणा ली, जैसे नेल्सन मंडेला, आंग सान सू की, बराक ओबामा तथा आज के समय में अनेक नवयुवा और सामाजिक कार्यकर्ता, जो विभिन्न समस्याओं के समाधान खोजने के लिए गांधीजी के विचारों का अनुसरण कर रहे हैं। इस प्रकार गांधीजी संपूर्ण विश्व के लिए एक दीपस्तंभ के समान हैं, जो मानवता को दिशा प्रदान करते हैं।

सिर्फ भारत या स्वतंत्रता पूर्व के भारत को ही गांधीजी ने मार्गदर्शन नहीं दिया, बल्कि आज भी हर समस्या के समाधान में उनके विचार हमें एक रामबाण उपाय की तरह दिखाई देते हैं, इसलिए हमें गांधीजी को पुनः समझना चाहिए, बार–बार उनका अध्ययन करना चाहिए और उनके द्वारा दिए गए मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए। सामान्यतः हम यह मानते हैं कि सरकार या शासन हमेशा जनता के हित में ही कार्य करता है, लेकिन महात्मा गांधीजी ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सामान्य जनता को यह साहस दिया कि यदि कोई कानून अन्यायपूर्ण है या जनहित में नहीं है तो उसके विरोध में खड़ा होना भी आवश्यक है। नमक सत्याग्रह के माध्यम से उन्होंने यह स्पष्ट किया कि हर कानून न्यायसंगत नहीं होता और यदि कानून जनहित के विरुद्ध हो तो उसके खिलाफ आवाज उठाना नागरिक का अधिकार ही नहीं बल्कि कर्तव्य भी है। इस विचार ने स्वतंत्रता पूर्व भारत की आम जनता के मन में एक नई चेतना जगाई, क्योंकि पहले लोगों को लगता था कि राजनीति, आंदोलन या शासन से जुड़े कार्य केवल कुछ विशेष वर्गों या मध्यवर्गीय लोगों की जिम्मेदारी हैं, लेकिन गांधीजी के नेतृत्व में आम जनता भी आंदोलन का हिस्सा बनी और इससे उनमें आत्मविश्वास का निर्माण हुआ, जिसने स्वतंत्रता की दिशा में हमारे कदमों को और अधिक मजबूत किया। साथ ही यह भी स्पष्ट हुआ कि आम व्यक्ति को भी जीने का अधिकार है, उसके भीतर भी विकास और आत्मविश्वास के बीज बोए जाएं तो वह भी एक सशक्त और सजग नागरिक बन सकता है।

ऐसा एक महत्वपूर्ण विचार गांधीजी ने दिया था और यही एक मानवीय मूल्य है कि अपने आप पर विश्वास रखो और अपने आसपास के लोगों पर भी विश्वास रखो, केवल अपने चाहने वालों पर ही नहीं बल्कि अपने विरोधियों के विचारों का भी सम्मान करना चाहिए। सत्याग्रह के माध्यम से महात्मा गांधीजी जी ने दक्षिण अफ्रीका और भारत में यह सिद्ध किया कि यदि आप सत्य के आग्रह के साथ कार्य करते हैं और सामने वाले के हृदय परिवर्तन पर विश्वास रखते हैं तो चाहे विरोधी कितना ही कट्टर क्यों न हो, वह अंततः एक मनुष्य है और उसके भीतर परिवर्तन संभव है,

वह आप पर विश्वास करता है और उसका हृदय परिवर्तन हो सकता है। जनरल स्मट्स, जो गांधीजी जी के प्रमुख विरोधियों में से थे, उन्होंने भी अपनी डायरी में लिखा कि जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका छोड़कर गए तो उन्हें गहरा दुःख हुआ, इससे स्पष्ट होता है कि गांधीजी ने अपने विरोधियों के मन में भी अपने लिए स्थान बनाया। वे न तो कोई अत्यंत धनी व्यक्ति थे और न ही केवल एक विद्वान अकादमिक, बल्कि उनकी शक्ति इस बात में थी कि वे मनुष्य और मानवीय मूल्यों पर अटूट विश्वास रखते थे और उसी के आधार पर अपने आंदोलनों की दिशा तय करते थे तथा अपने समस्त रचनात्मक कार्यक्रमों में मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि स्थान देते थे।

इसलिए विरोधक और उनके समकालीन जो भी सहकारी रहते थे, वे गांधीजी जी का आदर और सम्मान करते थे। गांधीजी ने जितना सम्मान पाया, उतनी ही उन पर टीका–टिप्पणी भी हुई। उनके विचारों की आलोचना भी हुई, उनका विश्लेषण भी हुआ, किंतु इससे उनके व्यक्तित्व की महत्ता और उनके कार्यों का मूल्य तनिक भी कम नहीं होता। इसका कारण यह है कि गांधीजी ने जीवन के अनेक आयामों पर कार्य किया। उन्होंने वर्ण व्यवस्था की विकृतियों का विरोध किया, जातीय भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष किया और अस्पृश्यता को मानवता पर लगा हुआ कलंक बताया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जब तक समाज से छुआछूत समाप्त नहीं होगी, तब तक सच्चे अर्थों में मानवता की स्थापना नहीं हो सकती।

इसके साथ ही गांधीजी पर्यावरण के प्रति भी अत्यंत सजग थे। उनका मानना था कि मनुष्य को प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीना चाहिए और आवश्यकताओं के अनुसार ही संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। उनकी प्रसिद्ध कृति "हिंद स्वराज" में उन्होंने यंत्र युग और पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण पर गंभीर प्रश्न उठाए और चेताया कि यदि मनुष्य केवल भौतिक प्रगति के पीछे भागेगा, तो वह अंततः अशांति और असंतोष का ही शिकार होगा। आज जब हम वैश्विक स्तर पर हिंसा, युद्ध और अशांति का वातावरण देखते हैं, तो गांधीजी के विचार और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। हम सभी सुख और शांति की कामना तो करते हैं, किंतु हमारी जीवन शैली और सोच हमें उस दिशा में नहीं ले जा पा रही है, क्योंकि हमें बचपन से ही यह सिखाया गया है कि जीवन का उद्देश्य केवल संघर्ष, स्पर्धा और प्रतिस्पर्धा है। हम दूसरों से आगे निकलने, दूसरों पर नियंत्रण रखने और कभी–कभी छल–कपट के माध्यम से सफलता प्राप्त करने को ही उपलब्धि मान लेते हैं। यह मूल्य नकारात्मक हैं, फिर भी विभिन्न विचारधाराओं और प्रभावों के कारण समाज में प्रचलित हो गए हैं। किंतु इन सबके बीच गांधीजी ने करुणा, प्रेम, स्नेह, दया और सहानुभूति जैसे मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि स्थान दिया।

उन्होंने अपने जीवन और आंदोलनों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि सच्ची शक्ति बाहरी आडंबर में नहीं, बल्कि भीतर के नैतिक बल में निहित होती है। यदि हम उनके स्वतंत्रता संग्राम में दिए गए योगदान को भूल भी जाएं, तो भी उनके द्वारा स्थापित मानवीय मूल्यों का महत्व कभी कम

नहीं हो सकता। गांधीजी ने अपने जीवन में त्याग का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह केवल वस्त्रों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह उनके संपूर्ण जीवन दृष्टिकोण का प्रतीक था, जिसमें सादगी, संयम और सेवा का भाव प्रमुख था।

आप सभी जानते हैं कि गांधीजी के राजनीतिक गुरु न्यायमूर्ति गोखले थे। उन्होंने गांधीजी जी को यह सलाह दी थी कि राजनीति में सक्रिय होने से पहले पूरे भारत का भ्रमण करें, देश को निकट से समझें, उसकी वास्तविक परिस्थितियों को जानें और उसके बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचें। गांधीजी ने इस सलाह को अत्यंत गंभीरता से लिया और पूरे भारत का व्यापक भ्रमण किया। इस यात्रा के दौरान उन्हें एक महत्वपूर्ण सत्य का बोध हुआ कि भारत में गरीबी अत्यधिक है, बेरोजगारी व्यापक है और अज्ञानता भी गहराई तक फैली हुई है। इन समस्याओं को समझने के बाद गांधीजी ने केवल उपदेश देने का मार्ग नहीं अपनाया, बल्कि स्वयं अपने जीवन में परिवर्तन करके समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि यदि गरीबी से लड़ना है, तो सबसे पहले अपनी आवश्यकताओं को सीमित करना होगा। इसी विचार से प्रेरित होकर उन्होंने संकल्प लिया कि वे केवल उतने ही वस्त्र धारण करेंगे, जितने शरीर ढकने के लिए आवश्यक हों। उन्होंने अपने भव्य वस्त्रों का त्याग कर दिया और साधारण धोती व चादर को ही अपना परिधान बना लिया, जिससे वे आम जनता के और अधिक निकट हो सके। इसी प्रकार गांधीजी ने समाज के अन्य पक्षों पर भी सूक्ष्म दृष्टि डाली।

उन्होंने देखा कि घरों में महिलाएं रसोई के कार्यों में अत्यधिक समय व्यतीत करती हैं, जिसके कारण वे सार्वजनिक जीवन और सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले पातीं। इस स्थिति को समझते हुए गांधीजी ने अपने जीवन में सादगी को और अधिक अपनाया और भोजन को भी अत्यंत सरल बनाने का संकल्प लिया। उन्होंने सीमित और साधारण आहार को अपनाया, ताकि यह संदेश समाज तक पहुंचे कि जीवन की आवश्यकताएं जितनी कम होंगी, उतना ही व्यक्ति स्वतंत्र और सक्रिय रह सकेगा। उनका यह प्रयास केवल व्यक्तिगत अनुशासन नहीं था, बल्कि समाज में समानता और सहभागिता को बढ़ावा देने का एक माध्यम भी था। ऐसे महात्मा गांधीजी केवल उपदेश देने वाले नेता नहीं थे, बल्कि अपने जीवन को ही एक प्रयोगशाला बनाकर सत्य और नैतिकता के सिद्धांतों को जीने वाले महान पुरुष थे। उन्होंने बचपन से ही सत्य के प्रति अटूट निष्ठा रखी और जीवन के प्रत्येक चरण में स्वयं को निरंतर परिष्कृत करने का प्रयास किया।

ऐसा नहीं है कि गांधीजी जन्म से ही महात्मा थे। उनका जीवन भी एक सामान्य मनुष्य की तरह ही प्रारंभ हुआ था। उन्होंने स्वयं अपनी आत्मकथा में स्वीकार किया है कि उनसे भी जीवन में त्रुटियां हुईं किंतु गांधीजी की महानता इस बात में नहीं है कि उन्होंने कभी गलती नहीं की, बल्कि इस बात में है कि उन्होंने अपनी गलतियों को स्वीकार किया, उनसे सीखा और उन्हें दोहराने से

स्वयं को दृढ़ता से रोका। यही उनकी सत्य के प्रति निष्ठा थी। जब भी वे किसी निष्कर्ष पर पहुंचते थे, तो उस पर पूरे जीवन अडिग रहते थे। उन्होंने अपने जीवन में ऐसा कोई मूल्य, कोई सिद्धांत या कोई आदर्श प्रस्तुत नहीं किया, जिसे उन्होंने स्वयं आचरण में न उतारा हो। वे पहले स्वयं उस मार्ग पर चलते थे, और उसके बाद ही समाज को उस दिशा में चलने का आह्वान करते थे। राजनीति में सक्रिय रहते हुए भी उनका जीवन एक त्यागी, तपस्वी और संत के समान था। यही कारण है कि उन्होंने जो मानवीय मूल्य भारतीय समाज और विश्व को दिए, वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। मैंने महाराष्ट्र टाइम्स के पूर्व संपादक गोविंद तलवलकर की एक पुस्तक "व्यक्ति और वाङ्मय" में गांधीजी पर लिखा एक लेख पढ़ा, जिसमें उन्हें "महात्मा गांधीजी एक शोकांत नायक" कहा गया है। इसका आशय यह है कि गांधीजी के सभी प्रयोग पूर्णतः सफल नहीं रहे, और न ही उनके सभी विचारों को समाज या राजनीति ने पूर्ण रूप से स्वीकार किया।

आज भी न तो कांग्रेस पूरी तरह उनके विचारों पर चलती है, और न ही भारत का शासन तंत्र। किंतु यह हमारे लिए चिंतन का विषय है कि जो मूल्य हमारे जीवन को दिशा दे सकते थे, जो हमें प्रकाश प्रदान कर सकते थे, जिन्हें अपनाकर हम एक श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकते थे, उन्हीं को हम पीछे छोड़ते चले गए। परिणामस्वरूप आज हम पुनः जातिवाद, धर्म के नाम पर विभाजन, हिंसा, वर्चस्ववाद और अनेक गंभीर सामाजिक समस्याओं में उलझते जा रहे हैं।

गोविंद तलवलकर जी ने अपनी पुस्तक में दो महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने लिखा है कि गांधीजी का आश्रम ही वास्तव में उनके सपनों का भारत था। गांधीजी ने "मेरे सपनों का भारत" नामक अपनी रचना में जिस समाज की कल्पना की, उसमें समानता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। उनका स्पष्ट मानना था कि जब तक समाज में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक असमानताएं समाप्त नहीं होतीं, तब तक एक समतामूलक समाज की स्थापना संभव नहीं है। इस विचार को उन्होंने केवल सिद्धांत के रूप में नहीं रखा, बल्कि अपने आश्रम में उसका व्यवहारिक प्रयोग भी किया। गांधीजी जी के आश्रम में विभिन्न क्षेत्रों के लोग आते–जाते रहते थे।

राजनीतिक क्षेत्र के अनेक प्रमुख नेता जैसे पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद और सरदार वल्लभभाई पटेल वहां आते थे। इसी प्रकार महिलाओं में सरोजिनी नायडू और राजकुमारी अमृत कौर जैसी प्रमुख हस्तियां भी आश्रम से जुड़ी थीं। अंतरराष्ट्रीय स्तर के पत्रकार, जैसे लुई फिशर, भी आश्रम में आते थे और उन्होंने अपने अनुभवों को "ए वीक विद महात्मा गांधीजी" जैसी प्रसिद्ध पुस्तक में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार गांधीजी का आश्रम एक खुले और समावेशी समाज का प्रतीक था, जहां सभी को आने–जाने की स्वतंत्रता थी। किंतु इसी संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात यह भी सामने आती है कि आश्रम में कुछ ऐसे लोग भी रहते थे जो शारीरिक या मानसिक रूप से अस्वस्थ थे या समाज के हाशिए पर खड़े थे। इस बात को लेकर कुछ लोगों ने आपत्ति भी जताई। राजकुमारी अमृत कौर और पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे कुछ समकालीनों

को यह लगा कि ऐसे लोगों का आश्रम में रहना उचित नहीं है। यहां तक कि राजकुमारी अमृत कौर ने एक बार पत्र लिखकर यह सुझाव भी दिया कि गांधीजी को ऐसे लोगों को आश्रम में स्थान देना बंद कर देना चाहिए। किंतु गांधीजी जी का दृष्टिकोण इससे बिल्कुल भिन्न था। वे कहते थे कि उनका आश्रम उन लोगों के लिए भी है, जिन्हें समाज ने उपेक्षित कर दिया है। वे इसे अपंगों, वंचितों और मानसिक रूप से अस्वस्थ लोगों का भी आश्रम मानते थे। इस विचार को लेकर कई बार विवाद भी हुए, यहां तक कि कुछ निकट सहयोगियों को आश्रम छोड़ना पड़ा। लेकिन गांधीजी अपने सिद्धांत पर अडिग रहे। उनका मानना था कि समाज केवल स्वस्थ, समर्थ और सक्षम लोगों से नहीं बनता, बल्कि उसमें दुर्बल, वंचित, विकलांग और उपेक्षित लोग भी समान रूप से शामिल होते हैं। यदि हम एक आदर्श समाज की कल्पना करते हैं, तो उसमें इन सभी वर्गों को समान सम्मान और स्थान मिलना चाहिए। यही गांधीजी के मानवतावादी दृष्टिकोण की सबसे बड़ी विशेषता थी।

आज हम देखते हैं कि जो लोग गरीबी में जीवन यापन कर रहे हैं, जो अशिक्षित हैं, जिनके पास जीवन के लिए पर्याप्त साधन नहीं हैं, ऐसे लोगों के प्रति न तो शासन–प्रशासन की योजनाएं पर्याप्त संवेदनशील दिखाई देती हैं और न ही समाज के संपन्न वर्ग का दृष्टिकोण उतना समावेशी दिखता है, जितना होना चाहिए। वास्तविकता यह है कि समाज में कमजोर, वंचित, विकलांग और उपेक्षित वर्ग के लिए स्थान निरंतर सीमित होता जा रहा है। किंतु महात्मा गांधीजी का दृष्टिकोण इससे बिल्कुल भिन्न था। उन्होंने अपने आश्रम में ही नहीं, बल्कि अपने समस्त आंदोलनों में भी इन सभी वर्गों को समान रूप से स्थान दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि गांधीजी की मानवता में कितनी गहरी आस्था थी। वे केवल सक्षम और शक्तिशाली लोगों के नेता नहीं थे, बल्कि वे समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को भी अपने साथ लेकर चलने वाले महापुरुष थे।

आज समाज में जो असमानता और अमानवीयता दिखाई देती है, उसके संदर्भ में यदि हम गांधीजी के आश्रम के प्रयोग को देखें, तो वह एक महान मानवीय प्रयोग प्रतीत होता है। अस्पृश्यता के विषय में भी गांधीजी का दृष्टिकोण अत्यंत स्पष्ट और क्रांतिकारी था। उन्होंने अस्पृश्यता को मानवता पर लगा हुआ कलंक बताया और इसे समाप्त करने के लिए अपने जीवन में अनेक प्रयोग किए। उन्होंने यह संकल्प लिया कि वे उन्हीं विवाहों में सम्मिलित होंगे, जिनमें एक पक्ष सवर्ण और दूसरा दलित होगा, और उन्होंने इस संकल्प का पूर्णतः पालन भी किया। यह उदाहरण इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि गांधीजी के समय में जो जातीयता और अस्पृश्यता विद्यमान थी, उसका स्वरूप आज भी समाज में कहीं न कहीं जीवित दिखाई देता है। अतः हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपनी अगली पीढ़ी को जाति, धर्म, ऊंच–नीच और भेदभाव के ये संस्कार हस्तांतरित नहीं करेंगे, बल्कि एक समतामूलक और मानवीय समाज के निर्माण की दिशा में प्रयास करेंगे।

गांधीजी के जीवन से जुड़ा एक और प्रसंग उल्लेखनीय है कि जब कस्तूरबा गांधीजी और महादेवभाई देसाई की पत्नी एक ऐसे मंदिर में गईं, जहां अस्पृश्यों का प्रवेश वर्जित था, तो गांधीजी को यह अत्यंत अनुचित लगा। उन्होंने कस्तूरबा को इस बात के लिए डांटा और स्वयं भी आत्मदंड का अनुभव किया। इस घटना से स्पष्ट होता है कि गांधीजी के लिए धर्म केवल कर्मकांड नहीं था, बल्कि वह आचरण का विषय था। वे स्वयं को सनातन हिंदू कहते थे, किंतु उन्होंने कभी भी बाहरी आडंबर या कर्मकांड को महत्व नहीं दिया। उनका मानना था कि धर्म हमारे व्यवहार में प्रकट होना चाहिए, न कि केवल अनुष्ठानों में। आज के समय में हम देखते हैं कि धर्म का स्वरूप अक्सर कर्मकांड, उत्सव और कभी–कभी उन्माद तक सीमित हो जाता है, जिससे समाज में विभाजन और पर्यावरण को भी हानि पहुंचती है। गांधीजी ने धर्म का उपयोग लोगों को जोड़ने, उनमें सकारात्मक परिवर्तन लाने और सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए किया। वर्तमान समय की अनेक समस्याओं का मूल कारण उपभोगवाद है। गांधीजी ने "हिंद स्वराज" में इस विषय पर गहन विचार प्रस्तुत किए हैं। आज हम शारीरिक और मानसिक समस्याओं से जूझ रहे हैं, असमानताएं बढ़ रही हैं, एक वर्ग के पास जीवन की मूल आवश्यकताओं का अभाव है और दूसरे वर्ग के पास अत्यधिक संसाधनों का संचय है। यह विषमता समाज में अशांति और असंतुलन को जन्म देती है। ऐसे में शांतिपूर्ण सहजीवन की कल्पना कठिन हो जाती है। हमें यह समझना होगा कि भारतीय समाज की मूल प्रकृति सहिष्णुता रही है, किंतु विभिन्न परिस्थितियों और प्रभावों के कारण हम असहिष्णुता की ओर बढ़ते जा रहे हैं।

गांधीजी ने अपने जीवन से हमें सहिष्णुता की एक महान विरासत दी है। नोआखाली का उदाहरण इसका प्रमाण है, जहां देश स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था, वहीं गांधीजी दंगों से पीड़ित लोगों के बीच जाकर शांति स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी वहां रहकर लोगों को साहस और विश्वास प्रदान किया। यह उनका सहिष्णुता का महान यज्ञ था, जो उनके जीवन के अंतिम क्षणों तक चलता रहा। अतः हमें उनके इस त्याग और तपस्या को स्मरण रखते हुए यह समझना चाहिए कि राजनीति केवल साधन है, साध्य नहीं। हमें समाज में विभाजन की प्रवृत्तियों से दूर रहकर सामाजिक और धार्मिक सहिष्णुता को बनाए रखना होगा। जातिवाद और उससे उत्पन्न अमानवीय प्रथाओं का उन्मूलन ही वास्तविक आधुनिकता है। इसके लिए हमें अंतर्जातीय और अंतर्धार्मिक विवाह जैसे सकारात्मक कदमों को प्रोत्साहित करना चाहिए। आज समाज में जो भी हिंसा और लोकतांत्रिक मूल्यों का पतन दिखाई देता है, उसका मूल कारण भेदभाव ही है। अतः एक जागरूक नागरिक के रूप में हमारा कर्तव्य है कि हम इन भेदभावों को समाप्त करने के लिए विचार भी करें और उसके अनुरूप आचरण भी करें।

आधुनिक समस्याओं का एक मूल कारण उपभोगवाद भी है, इसलिए हमें संयमित जीवनशैली अपनानी चाहिए। चाहे स्त्री–पुरुष असमानता हो या अमीर–गरीब के बीच की विषमता,

इन सभी को समाप्त करने के लिए हमें सजग और सक्रिय होना होगा। अंततः मानवता ही हमारा सर्वोच्च लक्ष्य होना चाहिए। महात्मा गांधीजी ने इसे अपने जीवन का आदर्श बनाया और हर परिस्थिति में मानवता को ही प्राथमिकता दी।

उनके जीवन के अनेक प्रसंग यह सिद्ध करते हैं कि उन्होंने बार–बार व्यक्तिगत इच्छाओं और आकांक्षाओं का त्याग कर व्यापक समाज के हित को चुना। उनका मानना था कि जब तक समस्त समाज के लोगों के पास सम्मानपूर्वक जीवन जीने के साधन उपलब्ध नहीं होंगे, तब तक कोई भी व्यक्ति अकेले सच्चे सुख और आनंद का अनुभव नहीं कर सकता। इसलिए यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने साथ–साथ पूरे समाज में शांति, करुणा और स्नेह बनाए रखने का प्रयास करें और संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य करें। केवल महात्मा गांधीजी ही नहीं, बल्कि अन्य विचारकों ने भी मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए अपने सिद्धांत प्रस्तुत किए, किंतु गांधीजी की विशेषता यह थी कि उन्होंने अपने प्रत्येक सिद्धांत को अपने जीवन में उतारकर जिया। उनके द्वारा प्रतिपादित एकादश व्रत–जैसे अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य–के माध्यम से उन्होंने यह संदेश दिया कि मनुष्य को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना चाहिए, क्योंकि केवल इंद्रियसुख को ही जीवन का लक्ष्य मानना मानवीयता के विरुद्ध है। उन्होंने यह भी बताया कि त्याग, संयम और आत्मनियंत्रण ही सच्चे सुख के मार्ग हैं। यदि हम अपनी संपत्ति, समय और श्रम का कुछ अंश समाज के अन्य लोगों के लिए समर्पित करें, तो समाज में संतुलन, शांति और सुव्यवस्था स्थापित हो सकती है।

मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए सबसे पहले हमें भूख और भय से मुक्ति सुनिश्चित करनी होगी, शोषण का अंत करना होगा और सभी प्रकार के भेदभावों को समाप्त करने की दिशा में प्रयास करना होगा। साथ ही हमें यह भी समझना होगा कि केवल मनुष्यों के प्रति ही नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति भी हमारी जिम्मेदारी है। इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति तभी संभव है जब हम अपने अति–उपभोग पर नियंत्रण रखें और संतुलित जीवन अपनाएं। महात्मा गांधीजी ने अपने पूरे जीवन में इन सिद्धांतों का पालन किया, इसलिए उन्हें एक महान मानवतावादी विचारक के रूप में जाना जाता है। उनका नाम उन महापुरुषों की श्रेणी में लिया जाता है जिन्होंने मानवता के उत्थान के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया।

ऐसा जीवन में कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें महात्मा गांधीजी का योगदान न रहा हो। गांधीजी जी केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं, बल्कि पृथ्वी, सृष्टि और प्रकृति के प्रति भी गहन संवेदनशीलता रखते थे। ऐसा महान व्यक्तित्व हमारे बीच रहा, यह हमारा सौभाग्य है। यद्यपि वे आज शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु अपने विचारों, कार्यों और आंदोलनों के माध्यम से वे आज भी जीवित हैं। विशेषतः दक्षिण अफ्रीका में उनके द्वारा चलाया गया सत्याग्रह आंदोलन, जिसने वर्णभेद के विरुद्ध एक सशक्त चेतना जगाई, आज भी मानवता के इतिहास में एक प्रेरणास्रोत के

रूप में स्थापित है। गांधीजी जी ने हमें नैतिकता, स्वावलंबन और सत्यनिष्ठ जीवन का मार्ग दिखाया।

उनका दृढ़ विश्वास था कि रामराज्य की स्थापना के लिए सत्य आवश्यक है और सत्य की प्राप्ति केवल अहिंसा के मार्ग से ही संभव है। यहाँ 'रामराज्य' किसी व्यक्ति विशेष या सत्ता का प्रतीक नहीं, बल्कि एक आदर्श व्यवस्था का द्योतक है, जहाँ न्याय, समानता और नैतिकता का वर्चस्व हो। अतः आज आवश्यकता है कि हम गांधीजी जी के विचारों को पुनः स्मरण करें, उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करें और अपने आचरण के माध्यम से समाज में स्थापित करें। समस्त मानव समाज सुख, शांति और समृद्धि की ओर अग्रसर हो। इसी भावना के साथ मैं अपना व्याख्यान समाप्त करती हूं। मेरे विचारों को सुनने के लिए आप सभी का हृदय से धन्यवाद।

अध्यक्षीय उद्बोधन

दिनांक - 20-11-2025

माननीया डॉ. निवेदिता वर्मा
वरिष्ठ शिक्षाविद्, डॉ. अंबेडकर पीठ,
सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन

सादर नमस्कार। सर्वप्रथम कर्मयोगी श्री कृष्णमंगल सिंह कुलश्रेष्ठ जी को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ, जिनके जीवन और कर्मों ने इस भौतिकवादी युग में भी सद्भावना के विचारों को जीवंत बनाए रखा। भारतीय ज्ञानपीठ संस्थान से मेरा दीर्घकालीन जुड़ाव रहा है और मैंने व्याख्यानमाला मे इस मंच को हमेशा ही सामाजिक चेतना के सशक्त माध्यम के रूप में अनुभव किया है। यह व्याख्यानमाला वर्षों से समाज में संवाद, जागरूकता, महिला शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सद्भाव जैसे मूल्यों को स्थापित करने का सतत प्रयास करती रही है। समय के साथ स्वरूप और अधिक व्यापक हुआ है और उद्देश्य एवं प्रतिबद्धता भी अधिक सशक्त हुई है।

आज का विषय "गांधी और मानवतावाद" अत्यंत प्रासंगिक है और इसकी मुख्य वक्ता वरिष्ठ शिक्षाविद , शैलजा बारूरे जी ने इस विषय पर अत्यंत समग्र और सारगर्भित उद्बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने महात्मा गांधी के दर्शन के लगभग प्रत्येक महत्वपूर्ण पक्ष को वर्तमान संदर्भ में स्पष्ट करते हुए उसकी उपयोगिता को रेखांकित किया। उनके विचारों में गहराई भी थी और समकालीन समाज के लिए स्पष्ट दिशा भी।

"गांधी और मानवतावाद" विषय पर मुझे 1986 में तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी के भाषण के अंश स्मरण हो रहे हैं, जिसमें उन्होंने एक गहरा प्रश्न उठाया था—क्या हमें सचमुच गांधी जी को माला पहनाने का अधिकार है? क्या हम उनके बताए मार्ग पर चल पा रहे हैं? और उन्होंने स्वयं ही कहा था कि कहीं न कहीं हम गांधी जी के साथ अन्याय कर रहे हैं, उनके नाम का उपयोग तो कर रहे हैं, पर उनके विचारों को जीवन में नहीं उतार पा रहे। आज, लगभग चार दशक बाद भी यह प्रश्न उतना ही प्रासंगिक है। क्या हमारी गांधी के प्रति आस्था बढ़ी है, घटी है या हमने उन्हें केवल 2 अक्टूबर और 30 जनवरी तक सीमित कर दिया है? इसका उत्तर आज भी हमारे सामने स्पष्ट रूप से नहीं है। यदि हम वर्तमान परिदृश्य पर दृष्टि डालें तो पाएंगे कि हिंसा, आतंकवाद और उग्रवाद निरंतर बढ़ रहे हैं। आर्थिक और राजनीतिक साम्राज्यवाद भी नए—नए रूपों में सामने आ रहा है। ऐसे समय में गांधी जी के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। गांधी जी को इस सहस्त्राब्दी का महानतम व्यक्तित्व माना गया है, और वे एक युगपुरुष के रूप में स्थापित हैं। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे अपने आचरण से अपने विचारों को सिद्ध करते थे। उनकी प्रेरणा का प्रमुख स्रोत रही, जो उन्हें हर संकट, दुविधा और निराशा के समय नई ऊर्जा और मार्गदर्शन प्रदान करती थी। यही कारण है कि गांधी जी का जीवन केवल

विचार नहीं, बल्कि एक जीता–जागता दर्शन बन गया, जो आज भी हमें सही दिशा दिखाने में सक्षम है।

वर्तमान विश्व परिदृश्य की अस्थिरता, आशंकाएँ, दुविधाएँ और चिंताएँ जिस प्रकार बढ़ रही हैं, ऐसे समय में भगवत गीता का मानवतावादी दृष्टिकोण ही हमें सही मार्ग दिखा सकता है। आज विश्व को उसी गांधीवादी गीता की आवश्यकता है, जो निराशा और भय से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सके। आज बाजारवाद हावी है, प्रतिस्पर्धा ने मानवीय संवेदनाओं को पीछे छोड़ दिया है और भोगवाद ने नैतिक मूल्यों को ढक लिया है। पश्चिमी प्रभाव के कारण हमारी संस्कृति, सभ्यता और परंपराओं के मूल्यों में भी परिवर्तन आया है। यह नहीं कि गांधी का मानवतावाद समाप्त हो गया है, वह आज भी विद्यमान है, किन्तु उसकी आत्मा–मानवीय संवेदना, प्रतिबद्धता और व्यवहारिकता–का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। गांधी जी ने सदैव हृदय परिवर्तन और नैतिक जागरण के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की बात कही, क्योंकि उनके अनुसार थोपे गए परिवर्तन कभी स्थायी नहीं हो सकते। इसलिए उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से ही स्थायी और मूलभूत परिवर्तन का मार्ग बताया। गांधी के लिए धर्म का अर्थ था "सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय", किन्तु आज धर्म का स्वरूप सीमित और परिवर्तित हो गया है। जहाँ पहले धर्म का आधार सदाचार, शुद्ध आचरण, भाईचारा और सौहार्द्र था, वहीं आज वह अनेक स्थानों पर औपचारिकता और व्यवसाय का रूप लेता दिखाई देता है। जबकि गांधी के मानवतावादी चिंतन में धर्म समानता, नैतिकता और सामाजिक समरसता का आधार है। दुर्भाग्य से आज ये उच्च विचार अधिकतर भाषणों और चर्चाओं तक सीमित रह गए हैं, उनके व्यवहारिक रूप में अनुप्रयोग की कमी स्पष्ट अनुभुति होती है।

गांधी जी ने "सर्वे भवन्तु सुखिनः" के आदर्श को अपने जीवन में उतारा और प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का स्वरूप देखा, इसलिए उनके लिए हर व्यक्ति समान सम्मान का अधिकारी था। आज केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व को गांधी के इसी व्यावहारिक मानवतावाद की आवश्यकता है–ऐसा मानवतावाद जिसमें स्व–अनुशासन, स्व–अवलोकन और स्व–आचरण होय जिसमें प्रेम, करुणा, सेवा, नैतिकता, सम्मान, सामाजिक न्याय और ईमानदारी समाहित हो। क्योंकि मानवीय चेतना पारस्परिकता के सिद्धांत पर ही जीवित रहती है। गांधी के मानवतावाद की नींव सत्य और अहिंसा पर आधारित थी, और सत्य उनके जीवन का मूल आधार था। उन्होंने सत्य को केवल कहा नहीं, बल्कि अंत तक जिया, और आज जो उनकी उपलब्धियाँ हमारे सामने हैं, वे वास्तव में उनके भीतर निहित उसी सत्यबल का परिणाम हैं। उनकी सत्यनिष्ठा में साध्य और साधन की पूर्ण पवित्रता निहित थी।

गांधीजी के जीवन का आधार सत्य और अहिंसा थे, जिनमें उनकी अटूट आस्था विद्यमान

रही। उन्होंने सत्य को ईश्वर का पर्याय माना और उसकी प्राप्ति के लिए अहिंसा को ही एकमात्र मार्ग स्वीकार किया, जो उनके मन, वचन और कर्म–तीनों में समान रूप से प्रकट होता था। आज के विनाशकारी अस्त्र–शस्त्रों के युग में मानवता के सामने दो ही मार्ग शेष हैं–या तो हम अहिंसा को अपनाएँ या अपने अस्तित्व के विनाश को स्वीकार करें। गांधी जी का मानवता पर अटूट विश्वास था। वे मानवता को एक सागर के समान मानते थे, जिसमें यदि कुछ बूंदें गंदी भी हो जाएँ, तो पूरा सागर दूषित नहीं होता।

अब यह हमें स्वयं सुनिश्चित करना है कि हमने गांधी के मानवतावाद को कितना मलिन किया है और उसे शुद्ध करने का दायित्व किस प्रकार निभाएँगे। निर्णय समय करेगा, किन्तु कर्म हमें करना होगा। तभी 2 अक्टूबर, 30 जनवरी और ऐसी व्याख्यानमालाओं की सार्थकता सिद्ध होगी। हमें गांधी की भाँति कर्मवीर बनना होगा, अपनी चेतना की आवाज के अनुरूप अपने कर्मक्षेत्र का चयन करना होगा और पुरुषार्थ के साथ, विनम्रता एवं विवेक के सहारे अपने दायित्वों का निर्वहन करना होगा। तभी हम गांधी के मानवतावाद की दिव्य रश्मियों को मानवता में प्रसारित कर सकेंगे। इसी सद्भावना के साथ आप सभी का हृदय से धन्यवाद।

ए आई युग में सामाजिक सारोकार एवं न्याय के उपादान

दिनांक - 21-11-2025

न्यायमूर्ति माननीय श्री अनिल शुक्ला जी
पूर्व अध्यक्ष, शुल्क नियामक समिति, छत्तीसगढ़

उपस्थित दर्शकों का सादर अभिवादन करते हुए सर्वप्रथम मैं ख्याति प्राप्त कवि एवं चिंतक डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की पंक्तियों से अपनी बात प्रारंभ करना चाहूँगा – "क्या हार में क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत मैं, संघर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही, वरदान माँगूँगा नहीं''।

आज का विषय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अर्थात कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उसके न्यायपालिका में उपयोग से संबंधित है। यह विषय जितना आधुनिक है उतना ही महत्वपूर्ण भी है, इसलिए इसके मूल स्वरूप को संक्षेप में समझना आवश्यक है, ताकि आगे हम न्यायपालिका में इसके प्रयोग को बेहतर ढंग से समझ सकें।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का विकास अनेक वैज्ञानिकों के योगदान से हुआ और समय के साथ यह तकनीक मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग के रूप में विकसित होकर ऐसी स्थिति में पहुँच गई है जहाँ यह डाटा, एल्गोरिथ्म और कंप्यूटिंग शक्ति के आधार पर स्वयं सीखकर निर्णय लेने में सक्षम हो गई है। सरल शब्दों में कहें तो एआई मनुष्य के व्यवहार को समझकर कार्य करने वाली एक बुद्धिमान प्रणाली है जो जटिल समस्याओं का समाधान तेजी और सटीकता के साथ कर सकती है।

आज चिकित्सा क्षेत्र में इसके माध्यम से रोगों की पहचान अधिक सटीक हो रही है और भविष्य में संभावित बिमारियों का अनुमान भी लगाया जा रहा है, वहीं मौसम विज्ञान में यह पूर्वानुमान देने में सक्षम है कि कब और कितनी वर्षा होगी, जिससे किसान अपनी फसलों की योजना पहले से बना लेते हैं और आधुनिक तकनीकों जैसे ड्रोन के माध्यम से कृषि कार्य अधिक प्रभावी हो गए हैं। इसी प्रकार कंप्यूटर विजन और रोबोटिक्स के माध्यम से उद्योगों में उत्पादन क्षमता बढ़ी है और एक जैसे कार्य कम समय में अधिक दक्षता से संपन्न हो रहे हैं, शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में भी एआई ने जानकारी को त्वरित और संक्षिप्त रूप में उपलब्ध कराकर कार्यों को सरल बना दिया है। वित्तीय क्षेत्र में यह धोखाधड़ी की पहचान करने और बाजार के रुझानों का विश्लेषण करने में सहायक है, वहीं अंतरिक्ष और रक्षा क्षेत्र में भी इसकी भूमिका निरंतर बढ़ रही है, जिससे स्पष्ट है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आज जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध हो रहा है, और इसी व्यापक उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए अब यह आवश्यक हो जाता है कि हम न्यायपालिका जैसे संवेदनशील क्षेत्र में इसके संभावित उपयोग पर विचार करें।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसकी सेल्फ लर्निंग क्षमता है, किंतु इसके लिए सही और प्रमाणिक डाटा अत्यंत आवश्यक है क्योंकि त्रुटिपूर्ण डाटा से प्राप्त परिणाम भी गलत हो सकते हैं। इसके साथ ही इसके उपयोग से समय की बचत और कार्यों में सटीकता तो आती है, परंतु डाटा की गोपनीयता, रोजगार पर प्रभाव और साइबर अपराध जैसी

चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जैसे फर्जी प्रोफाइल बनाना, छवि का दुरुपयोग करना या भ्रामक जानकारी फैलाना।

इसके अतिरिक्त यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि यदि एआई के माध्यम से किसी व्यक्ति के बारे में आपत्तिजनक सामग्री प्रस्तुत होती है तो उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी, यह भविष्य का एक गंभीर विधिक प्रश्न है। इसलिए यह आवश्यक है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग पूरी सावधानी और नैतिकता के साथ किया जाए, क्योंकि यह मानव जीवन को सरल बनाने का एक प्रभावी साधन तो है, किंतु मानव की भावनाओं और नैतिक मूल्यों का पूर्ण विकल्प नहीं बन सकता।

इन्हीं आधारों को ध्यान में रखते हुए हम न्यायपालिका में इसके उपयोग की संभावनाओं को समझने का प्रयास करेंगे।

सर्वप्रथम कानूनी शोध के क्षेत्र में यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है, जहां न्यायाधीश, अधिवक्ता और शोधार्थी इसके माध्यम से त्वरित रूप से आवश्यक सामग्री प्राप्त कर रहे हैं, पहले जहां किसी केस लॉ को खोजने के लिए अनेक पुस्तकों का अध्ययन करना पड़ता था, वहीं अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से वह कार्य तुरंत संभव हो गया है। इसके अतिरिक्त केस मैनेजमेंट और न्यायालयीन प्रक्रिया के प्रबंधन में भी इसका उपयोग किया जा सकता है ।

न्यायालयों में अनुवाद और लिप्यांतरण के कार्य में भी एआई सहायक बन रहा है, उच्चतम न्यायालय में इस प्रकार के प्रयोग प्रारंभ हो चुके हैं, जहां विभिन्न भाषाओं में दिए गए निर्णयों और दस्तावेजों का त्वरित अनुवाद संभव हो रहा है, जिससे कार्य की दक्षता बढ़ती है, सटीकता में सुधार होता है और त्रुटियों की पहचान करना भी सरल हो जाता है, साथ ही मैनुअल कार्य में कमी आने से समय और खर्च दोनों की बचत होती है। किन्तु इसके साथ यह संभावना भी बनी रहती है कि यदि डाटा त्रुटिपूर्ण है तो उसके आधार पर अनुचित परिणाम सामने आ सकते हैं, इसके अतिरिक्त एआई आधारित निर्णयों में पारदर्शिता और स्पष्टीकरण का अभाव भी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है, तथा अत्यधिक निर्भरता से मानवीय संवेदनाओं और न्यायाधीश के अनुभव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि न्यायिक प्रक्रिया में केवल साक्ष्य ही नहीं बल्कि गवाह की भाव–भंगिमा, व्यवहार और आचरण भी कई बार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही यदि समस्त सूचनाएं डाटा के रूप में संरक्षित होती हैं तो गोपनीयता का जोखिम भी बना रहता है, अतः आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को अपनाने के लिए आवश्यक सावधानियां अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, इसके लिए एआई गवर्नेंस फ्रेमवर्क विकसित किया जाना चाहिए तथा न्यायालयों में इसके उपयोग के लिए स्पष्ट दिशा–निर्देश निर्धारित होने चाहिए, निष्पक्षता और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए स्वतंत्र ऑडिट की व्यवस्था आवश्यक है और गोपनीयता की सुरक्षा को भी सुदृढ़ किया जाना चाहिए, साथ ही कानूनी शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है।

भारत के संदर्भ में अभी कई चुनौतियां विद्यमान हैं, जिनमें न्यायिक प्रक्रियाओं में औपचारिक ढांचे का अभाव, अत्यधिक निर्भरता का जोखिम और एआई के प्रशिक्षण की कमी प्रमुख

हैं। यदि सावधानीपूर्वक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग न्यायालयीन कार्यों में किया जाए, विशेषकर उन मामलों में जो डाटा आधारित हैं जैसे संपत्ति विवाद, मोटर दुर्घटना दावे और नेगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट्स से संबंधित प्रकरण, तो इनका त्वरित निपटारा संभव हो सकता है, जिससे न्यायालय का समय बचेगा और जटिल तथा गंभीर मामलों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जा सकेगा, क्योंकि वर्तमान में निचली अदालतों से लेकर उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय तक सभी स्तरों पर लंबित प्रकरणों का दबाव बना हुआ है।

न्यायाधीशों की संख्या की अपेक्षा उनके समक्ष लंबित मामलों की संख्या अत्यधिक है और उनके त्वरित निराकरण के लिए वर्तमान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अतिरिक्त कोई प्रभावी विकल्प स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता।

इस संदर्भ में कुछ प्रकरण भी उल्लेखनीय हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि न्यायालयों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग सहायक उपकरण के रूप में प्रारंभ हो चुका है। उदाहरणस्वरूप एक मामले में, जिसमें एक कर्मचारी को सेवा से पृथक किया गया था और उसे पर्याप्त कारणों की जानकारी नहीं दी गई थी, न्यायालय ने उपलब्ध तथ्यों और तकनीकी साधनों की सहायता से मामले का परीक्षण करते हुए प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों को प्राथमिकता दी। इसी प्रकार वर्ष 2023 में पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति अनूप चितकारा द्वारा निर्णय प्रक्रिया के दौरान आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित उपकरण का संदर्भ लिया गया, जिसने इस दिशा में एक नई संभावनाओं को संकेत दिया।

भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में भी न्यायपालिका द्वारा एआई के उपयोग की दिशा में प्रयास बढ़ रहे हैं, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका में कुछ प्रकरणों में एआई आधारित अनुसंधान उपकरणों का उपयोग देखा गया है, वहीं यूनाइटेड किंगडम में न्यायालयों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग संबंधी दिशा–निर्देश जारी किए गए हैं, जिससे इसके व्यवस्थित और जिम्मेदार उपयोग की रूपरेखा स्पष्ट होती है। चीन सहित कुछ अन्य देशों में भी न्यायालयीन प्रक्रियाओं को अधिक दक्ष और त्वरित बनाने के लिए तकनीकी साधनों, विशेष रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, का प्रयोग धीरे–धीरे बढ़ रहा है। इन सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस न्यायपालिका में निर्णय का विकल्प नहीं, बल्कि एक सहायक साधन के रूप में उभर रहा है, जो न्यायिक प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी, त्वरित और प्रभावी बनाने में योगदान दे सकता है।

मैं यह आशा और विश्वास व्यक्त करता हूँ कि आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस न्यायपालिका की कार्यप्रणाली को और अधिक सुदृढ़, त्वरित एवं न्यायसंगत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। अंत में मैं उपस्थित सभी दर्शकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपनी बात को विराम देता हूँ।

अध्यक्षीय उद्बोधन

दिनांक - 21-11-205

न्यायमूर्ति माननीय श्री गौतम चौरडिया
अध्यक्ष राज्य उपभोक्ता सेवा आयोग छत्तीसगढ

नमस्कार, अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला समिति उज्जैन द्वारा आयोजित इस समारोह में श्री शिवमंगल सिंह सुमन की स्मृति में आयोजित व्याख्यानमाला का यह 23वां आयोजन है और मुझे प्रसन्नता है कि मैं आप सभी के बीच इस कार्यक्रम में उपस्थित हूं।

आज के इस अवसर पर माननीय न्यायमूर्ति अनिल शुक्ला साहब, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विषय में अत्यंत सारगर्भित और तथ्यपूर्ण विचार रखे, जिस तैयारी और गहन जानकारी के साथ उन्होंने यह बताया कि आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस किस प्रकार हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों–चिकित्सा, कृषि, वित्त तथा न्यायालयीन कार्यवाही में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, वह अत्यंत प्रेरक है।

मुझे अपने बचपन की एक कॉमिक्स याद आती है, जिसे मैंने लगभग 40–45 वर्ष पहले पढ़ा था, जिसमें यह कल्पना की गई थी कि कंप्यूटर और रोबोट के माध्यम से एक समय ऐसा आएगा जब मशीनें पूरे संसार पर नियंत्रण कर लेंगी, उस समय यह बात मुझे आश्चर्यजनक लगती थी कि भला ऐसा कैसे संभव हो सकता है, परंतु आज जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के वर्तमान स्वरूप को देखता हूं तो लगता है कि उस लेखक की कल्पना धीरे–धीरे साकार होती दिखाई दे रही है। निस्संदेह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में कुछ खतरे भी हैं, परंतु वे इसका एक पक्ष मात्र हैं, इसके साथ–साथ इसमें अनेक ऐसी संभावनाएं और अच्छाइयां भी हैं जो समाज के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं, जैसा कि अभी अनिल शुक्ला साहब ने भी अपने उद्बोधन में स्पष्ट किया।

यद्यपि मेरा मूल विषय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नहीं है और उपभोक्ता आयोग से जुड़े होने के कारण मुझे उपभोक्ताओं से संबंधित विषय पर अपने विचार रखने हैं, तथापि दो–तीन मिनट में मैं इस संदर्भ में एक अनुभव साझा करना चाहूंगा कि कल रात्रि मैंने परीक्षण के रूप में चेट जीपीटी का उपयोग किया और अनजाने में एक शब्द टाइप कर दिया, जिसके आधार पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने मुझे महिला समझकर उत्तर देना प्रारंभ कर दिया, इससे यह स्पष्ट होता है कि मानव का स्थान मानव ही ले सकता है, कोई अन्य नहीं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को बनाने वाला भी मानव ही है और इसका तात्पर्य यही है कि भविष्य में चाहे यह तकनीक कितनी भी उन्नत क्यों न हो जाए, यह मानव का स्थान पूर्णतः नहीं ले सकती, क्योंकि मानव के भीतर संवेदनाएं हैं, नैतिकता है और जो विश्लेषणात्मक क्षमता ईश्वर ने उसे प्रदान की है, उससे श्रेष्ठ कुछ भी नहीं हो सकता, अंततः कंप्यूटर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोट सभी मानव द्वारा निर्मित हैं, अतः हमें यह विचार करना चाहिए कि आने वाले समय में इसका उपयोग किस प्रकार

मानव और समाज के हित में किया जा सकता है।

मैं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के संदर्भ में यह विचार कर रहा था कि उपभोक्ता आयोग और उपभोक्ता फोरमों में इसका उपयोग किस प्रकार उपयोगी हो सकता है, इसी क्रम में मैंने चेट जीपीटी पर एक विषय टाइप किया जिसमें एक एयरलाइंस द्वारा उपभोक्ता को विधिवत बोर्डिंग पास जारी होने के बाद भी विमान में चढ़ने की अनुमति नहीं दी गई और उसके कारण उसे जो हानि हुई उसके समाधान के संबंध में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया, मुझे प्रसन्नता हुई कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने अत्यंत विस्तृत और स्पष्ट रूप से इसे सेवा में कमी बताया तथा यह भी समझाया कि इसे कैसे सुधारा जा सकता है, उपभोक्ता के पास कौन–कौन से उपाय उपलब्ध हैं, वह किन–किन मंचों पर और किस प्रकार अपनी शिकायत दर्ज कर सकता है, यहां तक कि अंत में यह विकल्प भी दिया गया कि यदि चाहें तो वह शिकायत का प्रारूप भी तैयार कर सकता है, इससे स्पष्ट है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस निरंतर उन्नत होता जा रहा है और भविष्य में यह और अधिक सक्षम होकर समस्याओं के समाधान में विश्लेषणात्मक और सटीक सहायता प्रदान करेगा।

उपभोक्ता फोरम एक ऐसा मंच है जहां न केवल देश में बल्कि विश्व स्तर पर भी कार्य हो रहा है और उपभोक्तावाद के बढ़ने के साथ–साथ उपभोक्ता संबंधी समस्याएं भी तेजी से बढ़ रही हैं, वर्तमान में यह भी देखने में आता है कि व्यापारी वर्ग अधिक लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग इस प्रकार कर रहा है कि वह उपभोक्ताओं की सोच, उनकी रुचि, उनकी आवश्यकताओं और भविष्य की संभावित जरूरतों तक का आकलन कर लेता है, उदाहरण के रूप में यदि हम किसी वस्तु जैसे टी–शर्ट की खोज किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म या ऑनलाइन साइट पर करते हैं तो उसके बाद अनेक स्थानों से उसी प्रकार के उत्पादों के विज्ञापन लगातार हमारे मोबाइल पर आने लगते हैं, चाहे वह फेसबुक हो, यू ट्यूब हो या अन्य प्लेटफॉर्म, इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव के मनोविज्ञान को समझने और प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर चुका है, जिसके कारण आवश्यकता, इच्छा और अनावश्यक इच्छाओं के बीच अंतर करना कठिन होता जा रहा है।

स्वयं के अनुभव से भी यह प्रतीत होता है कि जब किसी वस्तु को खरीदने का विचार आता है और उसके विकल्प खोजे जाते हैं तो अनेक विकल्प सामने आते हैं, एक बार खरीदने के बाद भी उसी प्रकार के अन्य विकल्प बार–बार प्रस्तुत किए जाते हैं, जिससे कभी–कभी हम कम कीमत या आकर्षण के कारण पुनः खरीदारी कर लेते हैं, जबकि वास्तविकता में उसकी आवश्यकता नहीं होती, इस प्रकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उपभोक्ताओं के भीतर नई आवश्यकताओं का सृजन भी कर रहा है और उन्हें उनकी वास्तविक जरूरतों से परे जाकर उपभोग की ओर प्रेरित कर रहा है।

यदि मशीनें हमारे मस्तिष्क को नियंत्रित करने की स्थिति में आने लगें तो यह अत्यंत

गंभीर विषय है, जैसा कि मैंने पूर्व में उल्लेख किया कि लगभग 40–45 वर्ष पूर्व पढ़ी गई एक कॉमिक्स में यह कल्पना की गई थी कि रोबोट और कंप्यूटर आधारित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने अपनी एक पूरी सेना तैयार कर ली और विश्व पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए युद्ध प्रारंभ कर दिया, उस समय यह केवल कल्पना प्रतीत होती थी, किंतु आज के परिवेश में जब हम चारों ओर दृष्टि डालते हैं तो ऐसा वातावरण बनता दिखाई दे रहा है जहां हिंसा, आतंक और अस्थिरता के कारण मानवता स्वयं संकट में है। यदि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का थोड़ा सा भी दुरुपयोग हो जाए तो यह पूरे विश्व के लिए खतरा उत्पन्न कर सकता है, जैसे एक छोटे से उदाहरण में मैंने बताया कि केवल एक शब्द के आधार पर मशीन ने धारणा बना ली, उसी प्रकार यदि किसी असंतुलित मानसिकता वाले व्यक्ति के हाथ में यह तकनीक आ जाए और वह इसका दुरुपयोग करे, विशेषकर उस स्थिति में जब भविष्य में युद्ध केवल धरती तक सीमित न रहकर अंतरिक्ष तक पहुंच जाएं, जहां स्पेस वार या स्टार वार जैसी संभावनाएं वास्तविक रूप ले सकती हैं, तब सुरक्षा की अवधारणा ही बदल जाएगी।

आने वाले समय में जल जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को लेकर भी संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है और युद्ध के नए आयाम ऐसे स्थानों तक पहुंच सकते हैं जहां सामान्य मानव के लिए सुरक्षित रहना कठिन हो जाएगा, वर्तमान में परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग अपने संसाधनों की सुरक्षा के लिए कर रहे हैं, परंतु यदि यही तकनीक आतंकवादी तत्वों या ऐसे व्यक्तियों के हाथों में पहुंच जाए जो अपने स्वार्थ के लिए मानवता को संकट में डालने से भी पीछे न हटें, तो इसका दुरुपयोग अत्यंत भयावह परिणाम ला सकता है, इसलिए इस संभावना को नकारा नहीं जा सकता। इसके साथ ही उपभोक्ता फोरम के संदर्भ में यदि देखें तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उपभोक्ताओं के लिए एक उपयोगी साधन भी सिद्ध हो रहा है, यदि किसी व्यक्ति को कोई वस्तु खरीदनी है तो वह विभिन्न प्लेटफॉर्म्स पर अपनी आवश्यकता दर्ज कर सकता है और उसे अत्यंत विश्लेषणात्मक जानकारी प्राप्त हो सकती है, जिससे वह विभिन्न विकल्पों की तुलना कर यह निर्णय ले सकता है कि किस मूल्य पर कौन सी वस्तु अधिक उपयुक्त है, उसकी गुणवत्ता क्या है और किन मानकों के आधार पर तुलना करनी चाहिए, इस प्रकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उपभोक्ताओं को सशक्त बनाते हुए उन्हें बेहतर निर्णय लेने में सहायता प्रदान कर रहा है तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न उपलब्ध विकल्पों की स्पष्ट जानकारी उपलब्ध करा रहा है।

आज जो डाटा बेस की तैयारियां हो रही हैं, उस परिप्रेक्ष्य में यह कहना कठिन हो गया है कि हम अपनी प्राइवेसी को पूर्णतः सुरक्षित रख पा रहे हैं, वास्तव में हमारी गोपनीयता निरंतर खतरे में है, यहां तक कि हमारा निजी स्थान भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं कहा जा सकता क्योंकि विभिन्न तकनीकी माध्यमों के जरिए हमारी गतिविधियों से संबंधित सूचनाएं संग्रहित की जा रही हैं, हाल के संदर्भों में यह भी सामने आता है कि हमारे घरों में लगे इंटरनेट उपकरण और डिजिटल सिस्टम्स हमारे परिवेश से संबंधित डाटा एकत्र कर दूरस्थ सर्वरों तक पहुंचा रहे हैं, जिससे यह

स्पष्ट होता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल तकनीकों के माध्यम से हमारी व्यक्तिगत जानकारियां, हमारी रुचियां, हमारा व्यवहार, यहां तक कि हमारे स्वास्थ्य संबंधी संकेत भी कहीं न कहीं संचित हो रहे हैं, जिनका उपयोग भी संभव है और दुरुपयोग भी, इसलिए उपभोक्ताओं के लिए सतर्क रहना अत्यंत आवश्यक हो गया है। आज अनेक बैंकिंग फ्रॉड केवल सीमित जानकारी के आधार पर किए जा रहे हैं, जैसे मोबाइल नंबर, आधार या पैन से संबंधित सूचनाएं, जिन्हें लोग सहज रूप से साझा कर देते हैं और फिर उसी के आधार पर उनके बैंक खातों तक अवैध पहुंच बनाकर धनराशि का दुरुपयोग किया जाता है।

ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि हमें किस सीमा तक अपनी जानकारी साझा करनी है और किस प्रकार सावधानी रखनी है। उपभोक्ताओं के लिए एक बड़ी चुनौती यह भी है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करके आकर्षक प्रस्ताव और शर्तें प्रस्तुत की जाती हैं, जिन्हें लोग बिना पूरी तरह पढ़े स्वीकार कर लेते हैं और अनजाने में जोखिम के क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हैं, इसलिए किसी भी सेवा या उत्पाद का उपयोग करने से पूर्व उसके नियमों और शर्तों को समझना अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में ई–खरीदारी के माध्यम से भी अनेक प्रकार के धोखाधड़ी के मामले सामने आ रहे हैं, जहां फर्जी वेबसाइट्स के जरिए भुगतान ले लिया जाता है या गलत उत्पाद भेजे जाते हैं, ऐसे में उपभोक्ताओं को यह समझना होगा कि कौन सा प्लेटफॉर्म विश्वसनीय है, कौन सरकारी है, कौन अधिकृत है और कौन संदिग्ध या स्पैम हो सकता है, जब तक यह समझ विकसित नहीं होगी तब तक ठगी की घटनाएं जारी रहेंगी। साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नियमन के लिए अभी विभिन्न स्तरों पर प्रयास चल रहे हैं, कई देशों ने इसके लिए बजट और नीतियां निर्धारित की हैं तथा नियामक संस्थाओं के गठन की दिशा में कदम उठाए हैं, भारत में भी इस दिशा में विचार–विमर्श जारी है और निकट भविष्य में ऐसे कानून, नियम और प्राधिकरण विकसित किए जा सकते हैं जो इसके उपयोग को नियंत्रित कर सकें तथा दुरुपयोग करने वालों तक पहुंचने में सहायक हों।

वर्तमान परिस्थिति में यह स्वीकार करना होगा कि हमारे खाते, हमारी व्यक्तिगत पहचान और हमारे परिवार से संबंधित सूचनाएं पूर्णतः सुरक्षित नहीं हैं, इसलिए यह मानकर चलना चाहिए कि जो कुछ भी हम डिजिटल माध्यमों पर करते हैं, वह किसी न किसी रूप में रिकॉर्ड हो सकता है, अतः उपभोक्ताओं के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे आधुनिक युग की भाषा–कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक्स, डाटा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस–को समझें, उससे जुड़ें और उसका ज्ञान प्राप्त करें, क्योंकि यही जागरूकता उन्हें सुरक्षित रख सकती है।

जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग कृषि, चिकित्सा, वित्त जैसे क्षेत्रों में अत्यंत लाभकारी है, वहीं इसका उपयोग आतंकवाद और आपराधिक गतिविधियों में भी होने की संभावना बनी हुई है, आज जीपीएस जैसी तकनीकों के माध्यम से किसी व्यक्ति के स्थान की जानकारी प्राप्त कर उसे लक्षित किया जा सकता है, और विश्व में इस प्रकार की घटनाएं सामने भी आ रही हैं, इसलिए यह समय सावधानी, समझ और संतुलित उपयोग का है, जिससे हम इसके लाभ प्राप्त कर सकें और संभावित खतरों से स्वयं को सुरक्षित रख सकें।

इस विषय को जानने और समझने की आवश्यकता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लाभ क्या हैं और इसकी सीमाएं या दुष्परिणाम क्या हैं, और इन्हीं के आधार पर उपभोक्ताओं को चाहिए कि वे उपभोक्ता आयोग में अपनी शिकायत दर्ज करने, अपील प्रस्तुत करने, प्रक्रिया समझने तथा संबंधित न्यायिक उदाहरणों और साइटेशंस को जानने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभावी उपयोग करें। विधि के क्षेत्र में भी, जैसा कि माननीय अनिल शुक्ला साहब ने बताया, न्यायालयीन कार्य में इसकी उपयोगिता अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषकर उन मामलों में जहां विषय समान प्रकृति के होते हैं, जैसे बैंकिंग या रियल एस्टेट से संबंधित प्रकरण, जिनमें तथ्यों और परिस्थितियों में समानता पाई जाती है, ऐसे मामलों में सब्जेक्ट–वाइज विश्लेषण कर बेंचमार्क जजमेंट तैयार किए जा सकते हैं, जिससे स्पीडी जस्टिस के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

इसके साथ ही पूर्व में दिए गए निर्णयों का अध्ययन, उनके विषय, परिस्थितियां और आधार समझना भी अब अत्यंत सरल हो गया है, उदाहरण के लिए यदि किसी हत्या के मामले का अध्ययन करना हो तो उसके विभिन्न प्रकार–जैसे हथियार से, चाकू से या विष द्वारा– के आधार पर संबंधित न्यायालयों, विशेषकर उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों को एक ही मंच पर संकलित रूप में देखा जा सकता है, जिससे प्रकरण की तैयारी अधिक सुदृढ़ और व्यवस्थित हो जाती है। इस प्रकार न्यायपालिका के लिए, और विशेषकर उपभोक्ता आयोग के लिए, जो कि अर्ध–न्यायिक संस्था होते हुए भी न्याय प्रदान करने का कार्य करता है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

मैं उपभोक्ताओं से यह भी कहना चाहूंगा कि उपभोक्ता न्यायालय का सहारा लेना आज समय की आवश्यकता बन गया है और किसी छोटे मूल्य के विवाद को भी केवल इसलिए नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि उसकी राशि कम है, क्योंकि प्रत्येक अधिकार का संरक्षण आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप एक प्रकरण में रेलवे के एसी डिब्बे में यात्रा कर रहे एक यात्री के सूटकेस को चूहों द्वारा क्षतिग्रस्त कर दिया गया, जिसमें उसकी सामग्री नष्ट हो गई, उस स्थिति में उपभोक्ता को क्षतिपूर्ति दिलाई गई, इसी प्रकार जहां किसी व्यक्ति की वस्तु की चोरी हुई और यह पाया गया कि संबंधित विभाग द्वारा पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था नहीं की गई थी, वहां भी क्षतिपूर्ति प्रदान की गई, तथा चिकित्सा लापरवाही के मामलों में भी उपभोक्ता आयोग द्वारा न्याय प्रदान किया जा रहा है।

रियल एस्टेट के मामलों में कब्जा देने में विलंब होने पर, गुणवत्ता के अनुरूप कार्य न करने पर अथवा समय पर कार्य पूर्ण न करने की स्थिति में उपभोक्ताओं को क्षतिपूर्ति दिलाई जाती है, इसलिए मैं मानता हूं कि नई पीढ़ी और यहां उपस्थित प्रबुद्ध जन इस स्थिति में हैं कि वे स्वयं ज्ञान अर्जित करने के साथ–साथ अन्य लोगों को भी प्रशिक्षित कर सकते हैं और समाज में यह जागरूकता फैला सकते हैं कि अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना आवश्यक है, अब वह समय नहीं रहा कि हम अपने अधिकारों को छोड़ दें, क्योंकि ऐसा करने से धोखाधड़ी करने वालों के हौसले और बढ़ते हैं। उपभोक्ता आयोगों का मूल उद्देश्य उपभोक्ताओं के अधिकारों का संरक्षण

करना है और प्रत्येक उपभोक्ता को यह अधिकार प्राप्त है कि वह यह सुनिश्चित करे कि उसे जो वस्तु या सेवा प्रदान की जा रही है, वह निर्धारित गुणवत्ता, मात्रा और मूल्य के अनुरूप है या नहीं, यदि इसमें कोई कमी पाई जाती है तो वह उपभोक्ता सेवा में कमी के अंतर्गत आता है और उसके लिए न्याय प्राप्त किया जा सकता है। यदि समाज सजग नहीं होगा और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं रहेगा तो गुणवत्ता–विहीन सेवाएं और धोखाधड़ी करने वाले तत्व निरंतर बढ़ते जाएंगे।

उदाहरणस्वरूप एक प्रकरण में एक व्यक्ति ने एक महंगी कार खरीदी, किंतु छह महीने तक उसका रजिस्ट्रेशन नहीं हो सका क्योंकि संबंधित कंपनी ने आवश्यक औपचारिकताएं और दस्तावेज पूर्ण नहीं किए थे, परिणामस्वरूप वह व्यक्ति अपनी खरीदी हुई कार का उपयोग भी नहीं कर सका, यह स्पष्ट रूप से सेवा में कमी का मामला था और उसमें उपभोक्ता को क्षतिपूर्ति दिलाई गई। ऐसे अनेक प्रकरण सामने आते हैं जो यह दर्शाते हैं कि जागरूकता आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि ठगी के तरीके भी निरंतर बदलते जा रहे हैं, पहले जहां जेब काटने जैसी घटनाएं होती थीं, वहीं आज बैंक खातों को हैक कर आर्थिक नुकसान पहुंचाया जा रहा है, गलत सूचनाएं देकर लोगों से उनकी निजी जानकारी प्राप्त की जाती है और उनके खातों से धनराशि निकाल ली जाती है।

एक प्रकरण में एक सेवानिवृत्त कर्मचारी ने अपनी पूरी जीवनभर की बचत लगभग 36 लाख रुपये अपने खाते में जमा की थी, किंतु एक भ्रामक संदेश के माध्यम से उसे भ्रमित कर उससे आवश्यक जानकारी और ओटीपी प्राप्त कर लिया गया और कुछ ही समय में उसकी संपूर्ण राशि उसके खाते से निकाल ली गई, इस प्रकार की घटनाएं अत्यंत गंभीर हैं और यह दर्शाती हैं कि थोड़ी सी असावधानी कितना बड़ा नुकसान पहुंचा सकती है। ऐसी स्थिति में यह भी समझना आवश्यक है कि हर मामला उपभोक्ता आयोग के अंतर्गत नहीं आता और कुछ मामलों में आपराधिक प्रक्रिया के माध्यम से ही न्याय प्राप्त करना होता है। अतः जागरूकता आज समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यह केवल ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षित वर्ग में भी जानकारी का अभाव देखने को मिलता है, जिसके कारण वे भी अनेक बार ठगी का शिकार हो जाते हैं, इसलिए आवश्यक है कि हम सभी इन विषयों को समझें, सतर्क रहें और अपने अधिकारों के प्रति सजग बनें।

इसलिए उपभोक्ता कानूनों के संबंध में व्यापक जागरूकता फैलाना अत्यंत आवश्यक है और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का समुचित उपयोग करते हुए यह भी समझना जरूरी है कि इसका प्रयोग कहां करना है और कहां नहीं करना है।

मैं मानता हूं कि अनिल शुक्ला साहब ने इस विषय को अत्यंत दक्षता और गहराई से प्रस्तुत किया, उन्होंने अपने उद्‌बोधन में इस विषय के लगभग सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को स्पर्श किया, यद्यपि तकनीकी पक्ष इतने व्यापक हैं कि विशेषज्ञ ही उनका पूर्ण विश्लेषण कर सकते हैं, फिर भी आज की स्थिति में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की चर्चा किए बिना आगे बढ़ना संभव नहीं

है। वर्तमान में उपभोक्ता आयोग की अधिकांश प्रक्रियाएं ई–फाइलिंग और ई–हियरिंग के माध्यम से संचालित हो रही हैं और यह बताते हुए प्रसन्नता होती है कि कई राज्यों में राज्य आयोग तथा जिला आयोगों में यह व्यवस्था प्रभावी रूप से लागू की जा चुकी है, जिससे अब किसी भी व्यक्ति को न्यायालय में भौतिक रूप से उपस्थित होने की आवश्यकता काफी हद तक कम हो गई है, फाइलिंग की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए हेल्प डेस्क स्थापित किए गए हैं जहां से सहायता लेकर कोई भी व्यक्ति अपनी शिकायत दर्ज कर सकता है और आवश्यक होने पर मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकता है। अतः यह आवश्यक है कि व्यक्ति स्वयं आगे बढ़कर इन सुविधाओं का उपयोग करना सीखे, क्योंकि यदि ई–फाइलिंग और ई–हियरिंग की प्रक्रिया को नहीं समझा जाएगा तो शिकायत दर्ज करना भी कठिन हो जाएगा,

आज के समय में कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक्स और डाटा की भाषा को समझना अत्यंत आवश्यक हो गया है और जो व्यक्ति इसे नहीं समझेगा वह समय की दृष्टि से पीछे रह जाएगा। उपभोक्ता आयोग का उद्देश्य उपभोक्ताओं के अधिकारों का संरक्षण करना है और आज लगभग हर क्षेत्र–चाहे वह कृषि से संबंधित बीज और बीमा हो, रियल एस्टेट, बैंकिंग, वित्त या ऑटोमोबाइल क्षेत्र–इन कानूनों के दायरे में आता है। वर्तमान समय में त्वरित न्याय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कार्य किया जा रहा है और विभिन्न राज्यों में मामलों के शीघ्र निपटारे के प्रयास किए जा रहे हैं, यद्यपि कार्यभार अधिक होने और कोविड काल के कारण कुछ मामलों में विलंब हुआ है, फिर भी प्रयास है कि उपभोक्ता मामलों का निपटारा यथासंभव कम समय में किया जाए।

सरकार की भी यह जिम्मेदारी है कि रिक्त पदों को समय पर भरे और उपभोक्ता कानूनों के प्रति जनजागरण बढ़ाए, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के साथ–साथ शहरी क्षेत्रों, विधि के विद्यार्थियों, प्राध्यापकों और अधिवक्ताओं को भी इसमें सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए, क्योंकि वे इस माध्यम से समाज को बड़ी राहत दिला सकते हैं। उपभोक्ता आयोग की एक विशेषता यह भी है कि यहां फीस संरचना सरल और अपेक्षाकृत न्यूनतम है, छोटे दावों में शुल्क नहीं लिया जाता और बड़े दावों में भी सीमित शुल्क के साथ न्याय प्राप्त किया जा सकता है, प्रक्रिया भी सरल है जहां शपथपत्र और दस्तावेजों के आधार पर मामलों का निराकरण किया जाता है, जिससे आम व्यक्ति के लिए न्याय सुलभ हो जाता है। बड़ी संख्या में मामलों का निपटारा उपभोक्ता फोरम के माध्यम से किया जा चुका है और इसने सिविल न्यायालयों पर पड़ने वाले भार को भी कम किया है, इसलिए उपभोक्ता आयोग एक अत्यंत उपयोगी और प्रभावी व्यवस्था के रूप में स्थापित हुआ है, जिसे आधुनिक तकनीक के साथ और अधिक सुदृढ़ बनाने के प्रयास केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा किए जा रहे हैं, और जहां भी आवश्यकता हो वहां संबंधित अधिकारी, कर्मचारी और तकनीकी सहयोगी सहायता के लिए तत्पर हैं, अतः यह आवश्यक है कि जनता इस व्यवस्था को समझे, इसका उपयोग करे और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सजग होकर आगे आए।

इन आयोगों में कहीं कार्य की गति धीमी हो सकती है और कहीं अधिक तेज भी हो सकती है, विशेषकर बड़े राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश में जहां मामलों की संख्या बहुत अधिक है वहां स्वाभाविक

रूप से कुछ विलंब हो सकता है, परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि हम अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना छोड़ दें, क्योंकि यदि हम अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं रहेंगे तो गलत प्रवृत्ति के लोगों को प्रोत्साहन मिलेगा, इसलिए आवश्यक है कि उपभोक्ता आयोगों का सहयोग करें, उनके माध्यम से अपनी बात रखें और न्याय प्राप्त करने का प्रयास करें, इसमें किसी प्रकार का विशेष जोखिम नहीं है और प्रक्रिया भी अत्यंत सरल है, जिसे सामान्य व्यक्ति स्वयं भी पूरा कर सकता है, इसके लिए वकील की अनिवार्यता नहीं है, निर्धारित प्रारूप उपलब्ध हैं जिनको भरकर कोई भी व्यक्ति अपनी शिकायत दर्ज कर सकता है।

अतः अधिक समय न लेते हुए मैं माननीय अनिल शुक्ला साहब के प्रति आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस विषय को अत्यंत प्रभावी और सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया, यद्यपि मैं उतनी तैयारी के साथ उपस्थित नहीं हो पाया, फिर भी मेरा प्रयास रहा कि अपने अनुभवों के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण बातें आपके समक्ष रख सकूं। यदि किसी को भविष्य में किसी प्रकार की आवश्यकता हो तो हमारी वेबसाइट, टेलीफोन और मोबाइल के माध्यम से संपर्क किया जा सकता है, जहां मार्गदर्शन भी प्राप्त किया जा सकता है और आवश्यक सहायता भी दी जा सकती है, यह एक सामूहिक प्रयास है जिसमें हम सभी की सहभागिता आवश्यक है।

अंत में, मैं उपस्थित सभी प्रबुद्ध जनों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं तथा शिवमंगल सिंह सुमन जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला समिति के सभी पदाधिकारियों, सहयोगियों और इस कार्यक्रम में सम्मिलित सभी सहभागियों को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। जय हिंद, जय भारत।

श्री गुरु तेग बहादुर जी के मानवीय आदर्श

दिनांक - 22-11-2025

माननीय रणजीतसिंह अरोरा
प्रख्यात साहित्यकार एवं उद्योगपति

प्यारे दर्शकों वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह। भारतीय ज्ञानपीठ उज्जैन, जो भारतीय सांस्कृतिक चेतना, वैचारिक परंपरा और साहित्यिक अस्मिता का गौरवशाली तीर्थस्थल है, ऐसी महान संस्था के पितृपुरुष कर्मयोगी स्वर्गीय श्री कृष्ण मंगल सिंह कुलश्रेष्ठ जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला का यह अनुकरणीय और निरंतर आयोजन न केवल उत्कृष्ट साहित्य की मर्यादा को स्थापित कर रहा है, बल्कि समूचे भारतीय बौद्धिक समाज का मान भी बढ़ा रहा है। आज हम इतिहास के उस दिव्य और निर्णायक अध्याय के समक्ष उपस्थित हैं, जहां किसी एक धर्म, एक समुदाय या एक भूभाग का नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता की अंतरात्मा को जागृत करने वाली वह ज्योति अंकित है, जिसे संसार श्री गुरु नानक देव साहिब जी की नौवीं ज्योति श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के रूप में जानता है।

सिख परंपरा का यह अद्वितीय सौभाग्य रहा है कि इसके गुरुओं ने केवल उपदेश नहीं दिए, बल्कि उन उपदेशों को अपने जीवन में उतारकर, यहां तक कि अपने प्राणों का बलिदान देकर उन्हें सिद्ध किया और उसी गौरवशाली परंपरा में नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का व्यक्तित्व मानवीय आदर्शों का सर्वोच्च प्रतिमान बनकर हमारे समक्ष उपस्थित है।

वर्तमान वर्ष 2025 का महत्व इस कारण और भी बढ़ जाता है कि यह वर्ष गुरु साहिब की 350वीं शहादत स्मृति के रूप में मनाया जा रहा है, और कुछ वर्ष पूर्व 2021 में हमने उनका 400वां प्रकाश पर्व अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया था, अब वही कालखंड हमें उनके शहादत संदेश का पुनः स्मरण करा रहा है ताकि यह समझा जा सके कि धर्म और मानवता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान भी दिया जा सकता है। आज के इस व्याख्यान में हम केवल उनके जीवन का वर्णन नहीं कर रहे हैं, बल्कि उस मूल प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास कर रहे हैं कि किन आधारों पर श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को मानवता की अंतरात्मा का रक्षक कहा जाता है, क्या केवल उनकी शहादत ही इसका कारण है ? नहीं, उनकी शहादत तो एक परिणाम थी, उससे पूर्व उनके जीवन की वह व्यापक दृष्टि, मानवीय आदर्श, धर्मनिरपेक्ष चिंतन, करुणा से परिपूर्ण जीवनशैली, लोककल्याण की भावना, त्याग और उनके जीवन के विविध आयाम ही वह आधार हैं जिन्हें समझे बिना उनकी शहादत का वास्तविक अर्थ अधूरा रह जाएगा।

आज की यह व्याख्यानमाला उन्हीं मानवीय आदर्शों की एक क्रमबद्ध यात्रा है, जिसमें हम गुरु साहिब के जीवन प्रसंगों को केवल कथा के रूप में नहीं, बल्कि शाश्वत मानवीय मूल्यों के दस्तावेज के रूप में समझने का प्रयास करेंगे और निश्चय ही उनका प्रकाश एक दिव्य उत्तरदायित्व का प्रथम संकेत है।

सिख परंपरा में चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी ने अपनी वाणी में गुरु जन्म प्रकाश की महिमा को इस प्रकार व्यक्त किया है–'सा धरती भई हरियावली जिथे मेरा सतगुरु बैठा आए, से

जन भय हरियावले जिन मेरा सतगुरु देख्या जाए, धन धन पिता धन धन कुल धन धन सो जननी जिन गुरु जिया माई'–अर्थात वह दिन, वह माता–पिता और वह कुल धन्य है जिसने गुरु को जन्म दिया। इसी दिव्य भाव के अनुरूप पांच बैसाख 1678 विक्रमी, अर्थात 1 अप्रैल 1621 रविवार के अमृतवेले ब्रह्म मुहूर्त का वह सौभाग्यशाली क्षण था जब नौवीं पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का प्रकाश हुआ। उसी समय श्री गुरु हरगोविंद साहिब जी दरबार साहिब अमृतसर में संगत के साथ आसा की वार का कीर्तन श्रवण कर रहे थे, तभी एक सेवादार ने उपस्थित होकर यह शुभ समाचार सुनाया, जिसे सुनकर संगत आनंद से झूम उठी और कीर्तन उपरांत सभी ने गुरु जी को बधाइयां अर्पित कीं।

जब गुरु हरगोविंद साहिब जी गुरु के महल पहुंचे तो बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरुदास जी और भाई विधिचंद जी भी उनके साथ थे, गुरु जी ने नवजात शिशु को अपने हाथों में लेकर प्रेमपूर्वक देखा और विनम्रता से उसके समक्ष शीश नवाया, पंथ प्रकाश ग्रंथ के अनुसार जब इस व्यवहार का कारण पूछा गया तो गुरु जी ने भविष्यवाणी की कि यह बालक दीन–दुखियों का रक्षक, संकटों का नाश करने वाला और अत्याचारियों का विनाश करने वाला होगा, इसी भाव से प्रेरित होकर उन्होंने उसका नाम 'तेग बहादुर' रखा। इस प्रकार 1 अप्रैल 1621 के उस पावन प्रभात में समस्त संगत आनंद और उल्लास से परिपूर्ण होकर एक–दूसरे को बधाइयां दे रही थी, क्योंकि मानवता की ढाल और सत्य धर्म के रक्षक का अवतरण हो चुका था। यद्यपि कुछ ऐतिहासिक स्रोतों में बाल्यकाल में उनका नाम 'त्यागमल' भी उल्लेखित मिलता है, किंतु 'तेग बहादुर' नाम ही प्रारंभ से प्रचलन में रहा और विशेष तथ्य यह भी है कि दसों गुरुओं में एकमात्र ऐसा नाम जो फारसी प्रभाव लिए हुए है, वह श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का ही है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी में 'तेग' का संकेत इस प्रकार मिलता है–जा तु भावे तेग वगावे सिर मुंडी कट जावे–जिसमें 'तेग' का अर्थ खड्ग या कृपाण है, और 'तेग देग ते जग में दो चले' का भाव यह है कि दीन की रक्षा और अत्याचार का प्रतिकार, ये दोनों गुण उनके व्यक्तित्व में प्रारंभ से ही विद्यमान थे।

उनका बाल्यकाल स्नेह और ममता में बीता, उनकी बड़ी बहन बीबी वीरो उन्हें अत्यंत स्नेह करती थीं, कहा जाता है कि उन्होंने बाल्यकाल में कभी रोकर दूध की मांग नहीं की, जो उनके स्वभावगत संयम और वैराग्य का प्रारंभिक संकेत था। एक प्रसंग में जब श्री गुरु हरगोविंद जी तख्त पर विराजमान थे, तब बालक तेग बहादुर खेलते–खेलते उनकी गोद में जाकर बैठ गए और उनके पीरी वाले गातरे को कसकर पकड़ लिया, गातरा वह पट्टा होता है जो कंधे से कमर तक लटकाया जाता है और जिस पर तलवार धारण की जाती है, गुरु जी ने उसे छुड़ाने का प्रयास किया किंतु बालक ने और दृढ़ता से पकड़ लिया, तब गुरु हरगोविंद साहिब जी भावविभोर होकर बोले कि पुत्र, समय आने पर तुम्हें यह तेग चलानी भी पड़ेगी और सहनी भी पड़ेगी, यह वचन मानो भविष्य का उद्घोष था, और यही कारण है कि गुरु साहिब के त्याग और तप का प्रथम संकेत केवल चार वर्ष की आयु में ही दृष्टिगोचर होने लगा था।

सन 1625 में जब बड़े भ्राता भाई गुरुदत्ता जी के विवाह आनंद कारज का अवसर आया, उस समय चार वर्ष के बालक तेग बहादुर जी को सुंदर वस्त्र और आभूषण पहनाए गए, परंतु

बारात के प्रस्थान के समय उन्होंने एक निर्धन और वस्त्रहीन बालक को ठंड में ठिठुरते देखा, कारण पूछने पर उस बालक ने कहा कि हमारे पास तो दो वक्त की रोटी भी नहीं है, वस्त्र कहां से लाएं, यह सुनते ही बालक तेग बहादुर जी ने तत्काल अपने वस्त्र और आभूषण उतारकर उसे पहना दिए, उस समय जब पूरा परिवार विवाह के उत्सव में आनंदित था, तब उनके लिए सच्चा आनंद इस बात में था कि किसी निर्धन का तन ढक गया, इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि जिस बालक ने चार वर्ष की आयु में किसी गरीब का तन ढका, उसी ने आगे चलकर संपूर्ण धर्म की रक्षा हेतु अपना शीश अर्पित कर दिया। बाल्यकाल में ही भावी गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को गुरमत विद्या और जीवन संस्कारों की शिक्षा के लिए रामदास स्थित विद्यालय में भेजा गया, जहां बाबा बुड्ढा जी, जो दरबार साहिब के प्रथम मुख्य ग्रंथी रहे, निवास और सेवा करते थे, लगभग चार से दस वर्ष की आयु तक आपने वहीं गुरुमुखी, गुरबाणी और प्रारंभिक सीख इतिहास का गहन अध्ययन किया, बाबा बुड्ढा जी के सात्विक जीवन, नितनेम, खेती–किरत और 'दसवंत' की परंपरा–अर्थात अपनी कमाई का दसवां हिस्सा लोककल्याण में समर्पित करना–ने आपके अंतर्मन में सेवा, समर्पण और निष्काम भाव के संस्कारों को दृढ़ किया। इसके पश्चात आपकी शिक्षा का दायित्व सिख परंपरा के महान विद्वान भाई गुरुदास जी को सौंपा गया, जिन्होंने आदि ग्रंथ की वाणियों के माध्यम से आपको अध्यात्म, भाषा, तर्क, इतिहास और व्यवहारिक ज्ञान के उच्च संस्कार प्रदान किए, साथ ही भाई बाबक जी से आपको गुरमत संगीत की शिक्षा प्राप्त हुई, जिसमें रबाब, सारंगी, सिरंदा जैसे तंत्री वाद्य तथा विभिन्न रागों का अभ्यास सम्मिलित था, आगे चलकर आपने स्वयं राग जयजयवंती का सृजन कर गुरमत संगीत परंपरा में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी कालखंड में भाई जेठा जी और भाई गुरुदास जी के मार्गदर्शन में आपको लोहगढ़ किले में सैन्य शिक्षा दी गई, जिसमें तलवारबाजी, तीरंदाजी, घुड़सवारी और युद्ध नीति का प्रशिक्षण शामिल था, इस प्रकार आध्यात्मिकता और शौर्य का संतुलित विकास इस बात का प्रतीक था कि दीन की रक्षा और अत्याचार के प्रतिकार दोनों ही जीवन के अनिवार्य आयाम हैं, इसके साथ ही आपने व्यवहारिक सेवा के रूप में चिकित्सा ज्ञान भी अर्जित किया और लाहौर तथा अन्य केंद्रों में रोगियों की सेवा कर मानवता के प्रति अपने करुणामय दृष्टिकोण को चरितार्थ किया।

यह आपका मानवीय आदर्श था कि साधन, शिक्षा, सेवा और सुरक्षा–ये चारों जीवन की उत्तरदायित्वपूर्ण धारा के अभिन्न अंग हैं, और बाल्यकाल का सबसे गहरा संस्कार वैराग्य तथा संयम ही होता है, भावी गुरु श्री तेग बहादुर साहिब जी के जीवन में भी प्रारंभ से ही इनका सशक्त प्रभाव दिखाई देता है, जब दो वर्ष बड़े भ्राता बाबा अटल जी का अकस्मात देहांत हुआ और उसी वर्ष माता गंगा जी का भी परलोक गमन हो गया, तब इन घटनाओं ने उनके कोमल हृदय पर गहरा प्रभाव डाला, दादी माता गंगा जी की गोद में पले–बढ़े स्नेह से वैराग्य तक की यह यात्रा उनके अंतर्मन को निरंतर तपाती रही, इसी काल में बाबा श्रीचंद जी, जो श्री गुरु नानक देव साहिब जी के पुत्र और उदासी संप्रदाय के संस्थापक थे तथा जो गुरु तेग बहादुर साहिब जी से विशेष स्नेह रखते थे, उनके प्रस्थान ने भी उनके भीतर संसार की अस्थिरता और विरक्ति का बोध और अधिक गहरा कर दिया।

लगभग दस वर्ष की आयु में महान ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी का भी देहांत हुआ, जिन्होंने

सिख धर्म के प्रारंभिक छह गुरुओं का साक्षात दर्शन किया, पांच गुरुओं को अपने करकमलों से गद्दी पर विराजमान किया, छठे गुरु श्री हरगोविंद साहिब जी को मीरी–पीरी की कृपाण अर्पित की और स्वयं गुरु तेग बहादुर जी के प्रारंभिक शिक्षा मार्गदर्शक रहे, उनके देह त्याग ने मानो गुरु साहिब के अंतर्मन में वैराग्य का अंतिम संस्कार पूर्ण कर दिया, इन सभी घटनाओं को उन्होंने अकाल पुरुष की रजा मानकर सहज स्वीकार किया, यही कारण है कि उनकी वाणी में वैराग्य, संसार की अस्थिरता और मृत्यु की स्वीकृति का तेजस्वी संदेश बार–बार प्रकट होता है–चिंता ता की कीजिए जो अनहोनी होय, यह मारग संसार को नानक स्थिर नहीं कोय –

बाल्यावस्था में ही जगत की नश्वरता को पहचानकर जो जीवन भीतर से निर्भय, मोह रहित और स्वीकारपूर्ण बनता है, वही आगे चलकर न्याय और धर्म का ध्वजवाहक बनता है, और यही वैराग्य आगे चलकर उन्हें अत्याचार के सामने निर्भय होकर खड़े होने की शक्ति प्रदान करता है। यदि श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के मानवीय आदर्शों को व्यवहार में देखना हो तो उनकी व्यापक यात्राओं को समझना आवश्यक है, जिनका उद्देश्य किसी एक धर्म का प्रचार नहीं, बल्कि मानव कल्याण, सामाजिक उत्थान और आत्मसम्मान का जागरण था, उन्होंने पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, असम और उड़ीसा तक लगभग पच्चीस हजार मील की यात्राएं कीं, जहां–जहां उनके चरण पड़े, वहां लोगों ने केवल धर्म नहीं बल्कि जीवंत मानवता को जागृत होते देखा, इसी संदर्भ में एक उदाहरण उल्लेखनीय है कि जब वे अपने धर्म प्रचार के दौरान हकीमपुर पहुंचे और वहां से लगभग दस किलोमीटर आगे एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां स्वाभाविक रूप से शुद्ध जल का स्रोत, पलाश का वृक्ष और एक ऊंचा टीला विद्यमान था, तो उन्होंने वहीं अपना निवास स्थापित किया, धीरे–धीरे उस स्थान पर निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ और दूर–दूर से संगत दर्शन हेतु आने लगी, जब लोगों ने निवेदन किया कि उस क्षेत्र में पीने के जल की गंभीर समस्या है, तब गुरु साहिब ने बिना विलंब मानवीय आदर्शों को केंद्र में रखते हुए लोककल्याण का कार्य प्रारंभ किया।

माता नानकी जी के वचनों और जनसामान्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आपने अपनी दसवंद की राशि से स्वयं 84 कुओं का निर्माण कराया, उस समय एक कुएं का निर्माण भी बड़ा परोपकार माना जाता था, ऐसे में 84 कुओं का निर्माण गुरु जी की करुणा, लोककल्याण की भावना और दृढ़ संकल्प का अद्वितीय उदाहरण है, इसी स्थान पर माता गुजरी जी के नाम से एक कुआं भी बनवाया गया जो आज भी संरक्षित है। जब स्थानीय संगत को ज्ञात हुआ कि गुरु जी यहां एक नया नगर बसाना चाहते हैं तो एक श्रद्धालु सिख ने अपनी 775 एकड़ भूमि इस कार्य हेतु समर्पित कर दी, गुरु जी ने इस नगर का नाम 'चक गुरु का' रखा, जो आज भी अपनी विरासत के साथ जीवित है और वहीं स्थित गुरुद्वारा गुरु पल्ला साहिब उस गौरवशाली इतिहास का साक्षी है, जहां गुरु जी के घोड़ों की खंडियां बनती थीं और उनके अवशेष आज भी सुरक्षित रखे गए हैं, यह स्थान केवल एक निवास नहीं था बल्कि श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की लोककल्याण, जल संरक्षण, न्यायप्रियता और दूरदर्शिता का जीवंत उदाहरण था। इसी स्थान से आगे बढ़ते हुए गुरु जी ने धर्म प्रचार यात्राओं को निरंतर जारी रखा ताकि मानवता, सेवा और धर्म के बीज व्यापक रूप से स्थापित किए जा सकें।

सन 1644 में श्री गुरु हरगोविंद साहिब जी की आज्ञा से गुरु तेग बहादुर साहिब जी माता नानकी जी और माता गुजरी जी सहित बाबा बकाला में विराजमान हुए और लगभग 21 वर्षों के उपरांत 1665 में पुनः कीरतपुर साहिब लौटे, इस बीच गुरु परंपरा में लोककल्याण की परंपराएं निरंतर चलती रहीं, गुरु हरराय साहिब जी ने भी बाग–बगीचों, जीव–जंतुओं के संरक्षण और निशुल्क औषधालय स्थापित कर सेवा की परंपरा को आगे बढ़ाया। 19 जून 1665 को गुरु जी सह परिवार ग्राम सहोटा के एक ऊंचे टीले पर पहुंचे, जहां दीवान सजे, कीर्तन हुआ और कड़ा प्रसाद वितरित किया गया, यहीं मोहरीगढ़ की नींव रखकर एक नए नगर की स्थापना का कार्य आरंभ हुआ, जिसकी आधारशिला भाई गुरुदत्ता जी ने रखी और गुरु जी ने स्वयं इस नगर का नाम 'चक नानकी' रखा, जो माता नानकी जी की स्मृति को समर्पित था।

गुरु जी नगर निर्माण के कुशल ज्ञाता थे, उन्होंने पूर्ववर्ती गुरुओं द्वारा बसाए नगरों और दरबार साहिब अमृतसर की संरचना का अध्ययन कर एक संतुलित और समावेशी योजना तैयार की, जिसमें किसी प्रकार का जातिगत भेदभाव नहीं था, इस नगर में बाजार, धर्मशाला, आवास, व्यापार और सामूहिक जीवन व्यवस्था को समानता और सेवा के आधार पर स्थापित किया गया, मसंदों के माध्यम से आह्वान किया गया कि जो भी इच्छुक हो वह यहां आकर बस सकता है, परिणामस्वरूप दूर–दूर से लोग अपने परिवार और आवश्यक सामग्री के साथ यहां बसने लगे, 24 घंटे गुरु का लंगर चलता रहा, कारीगर आए, व्यवसाय प्रारंभ हुए और शीघ्र ही वह निर्जन क्षेत्र एक सजीव मानव बस्ती में परिवर्तित हो गया।

इन सभी प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि गुरु तेग बहादुर साहिब जी केवल आध्यात्मिक गुरु ही नहीं थे, बल्कि एक उत्कृष्ट नगर योजनाकार, लोकसेवी, प्रकृति प्रेमी और समतामूलक समाज व्यवस्था के प्रेरणास्रोत भी थे, उन्होंने केवल उपदेश नहीं दिए बल्कि अपने आचरण से समाज निर्माण का आदर्श प्रस्तुत किया, रोगियों की सेवा की, अंधविश्वास और कुरीतियों का विरोध किया, अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध चेतना जागृत की, उनकी यात्राएं केवल प्रवचन नहीं थीं बल्कि जीवन की समस्याओं का मानवीय समाधान थीं, उन्होंने यह सिद्ध किया कि संसार को बदलने के लिए केवल शक्ति नहीं, बल्कि पीड़ित के द्वार तक पहुंचना ही सच्चा धर्म है और जब तक धर्म मनुष्य के घावों को स्पर्श न करे तब तक वह पूर्ण नहीं होता।

इन यात्राओं ने आगे चलकर वह पृष्ठभूमि निर्मित की जिसके कारण गुरु साहिब की शहादत कोई आकस्मिक घटना नहीं रही, बल्कि वह उनके सजग, विचारपूर्ण और मानवीय कर्तव्य की स्वाभाविक परिणति बन गई। उस समय औरंगजेब का अत्याचार निरंतर बढ़ रहा था और उसकी कट्टर धर्मांधता इस सीमा तक पहुंच चुकी थी कि वह अपने मत के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म का अस्तित्व सहन नहीं करता था, उसने प्रजा के समक्ष यह कठोर विकल्प रख दिया था कि इस्लाम स्वीकार करो अथवा मृत्यु को स्वीकार करो, परिणामस्वरूप तलवार के बल पर लोगों का जबरन धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था और विभिन्न धर्मों के अनुयायियों का जीवन अत्यंत कष्टपूर्ण हो गया था, समूचे देश में भय और अत्याचार का वातावरण व्याप्त हो गया था।

ऐसी विकट परिस्थिति में कश्मीर के ब्राह्मण पंडित कृपाराम जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल बाबा बकाला पहुंचा और गुरु तेग बहादुर साहिब जी से विनम्र निवेदन किया कि

उन्हें औरंगजेब के अत्याचार से बचाया जाए, तब गुरु साहिब ने कहा कि यदि कोई महान आत्मा अपने प्राणों का बलिदान दे तो धर्म की रक्षा संभव है, उसी समय समीप खड़े बाल गोविंद राय, जिनकी आयु लगभग नौ वर्ष छह माह थी, ने भावुक होकर कहा कि पिताजी आपसे बढ़कर महान कौन हो सकता है, यह क्षण इतिहास में अद्वितीय था जब एक पुत्र ने अपने पिता को अपने ही धर्म के लिए नहीं बल्कि अन्य के धर्म की रक्षा हेतु शहादत के लिए प्रेरित किया। इसके पश्चात गुरु साहिब ने कश्मीरी पंडितों के माध्यम से औरंगजेब को यह संदेश भिजवाया कि यदि गुरु तेग बहादुर इस्लाम स्वीकार कर लें तो वे सभी भी धर्म परिवर्तन कर लेंगे, यह सुनकर औरंगजेब ने तत्काल उनकी गिरफ्तारी का आदेश दिया, किंतु गुरु साहिब स्वयं ही अपने कुछ चुनिंदा साथियों–भाई सतीदास जी, भाई मतीदास जी और भाई दयाला जी–के साथ निडर भाव से दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गए, जहां उन्हें बंदी बनाकर अमानवीय यातनाएं दी गईं।

9 नवंबर 1675 को दिल्ली के चांदनी चौक में भाई सतीदास जी ने धर्म परिवर्तन से स्पष्ट इंकार किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें रुई में लपेटकर जीवित जला दिया गया, परंतु उन्होंने मुस्कुराते हुए शहादत को स्वीकार किया। अगले दिन 10 नवंबर 1675 को भाई मतीदास जी को स्तंभ से बांधकर आरी से चीर दिया गया, पर वे अंतिम क्षण तक निर्भय होकर जपजी साहिब का पाठ करते रहे और हंसते–हंसते अपने प्राण अर्पित कर दिए, उसी दिन भाई दयाला जी को उबलते जल में डालकर शहीद कर दिया गया। ये तीनों गुरु साहिब के परम श्रद्धालु, निकट सहयोगी और साहसी संगति थे, जिनका त्याग उनके पारिवारिक शौर्य की परंपरा का प्रतीक था, उनके पूर्वज भी गुरु हरगोविंद साहिब जी की सेना में रहते हुए मुगल अत्याचार के विरुद्ध शहीद हो चुके थे। इस प्रकार 9 और 10 नवंबर 1675 की ये बलिदान गाथाएं सिख इतिहास में आत्मोत्सर्ग, अटल आस्था और मानवीय गरिमा की अमिट मिसाल बन गईं, उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपना शीश तो दे दिया, परंतु अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया और इस प्रकार धर्म की परंपरा को शाश्वत सत्य में रूपांतरित कर दिया।

चांदनी चौक दिल्ली में औरंगजेब के प्रतिनिधियों ने नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के समक्ष तीन विकल्प रखे, पहला विकल्प था कि कोई चमत्कार प्रस्तुत करें, दूसरा विकल्प था कि इस्लाम धर्म स्वीकार करें और तीसरा विकल्प था कि अन्यथा मृत्यु के लिए तैयार रहें। समस्त देश की निगाहें गुरु जी के निर्णय पर टिकी थीं। उन्होंने इंसानियत की जमीर और मानवीय आदर्शों को बचाने हेतु तीसरा मार्ग, अर्थात स्वैच्छिक शहादत को स्वीकार किया। सर्वशक्तिमान गुरु जी चाहें तो चमत्कार दिखा सकते थे, परंतु उन्होंने अपनी शहादत के माध्यम से अत्याचार के विरोध और धार्मिक स्वतंत्रता का शाश्वत संदेश दिया। विश्व इतिहास में यह अनुपम उदाहरण है कि दूसरे के धर्म की रक्षा के लिए स्वयं प्राण अर्पित किए जाएं। गुरु जी ने अपनी शहादत की चादर से मानवीय अंतरात्मा को ढक लिया, जिसे कवि ने इस प्रकार शब्दांकित किया है – 'तेग बहादुर के चलत भयो जगत में शोक, है है सब जग भयो, जय जय जय सुर लोक।' धरती पर शोक था और देवलोक में जय–जयकार, यह घटना मानवीय आदर्शों और बलिदान की सर्वोच्च मिसाल बन गई।

गुरु जी ने धर्म स्वतंत्रता और मानवता की रक्षा युद्ध जीतकर नहीं, बल्कि अपनी शहादत

देकर की। निश्चित ही गुरु साहिब की शहादत के बाद धर्म बचा, समाज बचा, पर उससे भी बड़ा मानव गरिमा और स्वतंत्रता का अधिकार जीवित बचा।

गुरु साहब ने यह सिद्ध किया कि केवल तलवार से संसार नहीं बदलता और केवल त्याग से भी नहीं, बल्कि जब शक्ति और करुणा एक साथ आदर्शों के लिए खड़ी होती हैं तभी इतिहास आदर्श बनता है। इतिहास में युद्ध जीतने वाले अनेक मिलेंगे, पर मानवता की रक्षा के लिए स्वयं को समर्पित करने वाला केवल एक धन्य धन श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी हैं। गुरु जी के परम भक्त भाई लखी शाह बंजारा जी ने उनके धड़ को सम्मानपूर्वक उठाकर अपने घर को अग्नि समर्पित कर अंतिम संस्कार किया, आज वही स्थान गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब के रूप में उनकी पावन स्मृति का प्रतीक है। वहीं भाई जेता जी गुरु जी का शीश सुरक्षित रूप से आनंदपुर साहिब लेकर पहुंचे, जहां दशम पिताश्री गुरु गोविंद सिंह जी ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा – रंगरेटा गुरु का बेटा।

यह सम्मान शहीद परंपरा का गौरव सूत्र बन गया। गुरु जी ने स्पष्ट कर दिया कि सत्ता का अहंकार और अत्याचार चिरस्थायी नहीं होते, केवल दया, धर्म और न्याय के मार्ग पर चलकर ही विश्व शांति संभव है। तिमिर घना होगा, तमा लंबी होगी, पर तमस से विहान रुका है क्या, ज्ञान के विहान का विधान रुका है क्या, इंसानियत की जमीर का पहरेदार रुका है क्या, मिट गए मिटाने वाले गुरुओं के ज्ञान के सम्मुख, शमशीर के वार से धर्म का विहान रुका है क्या। इन पंक्तियों का संदेश स्पष्ट है कि शस्त्र बल क्षणभंगुर है पर गुरु जी की शहादत शाश्वत है। गुरु तेग बहादुर साहिब जी ने शिक्षा, संगीत और युद्धकला का समन्वय प्रस्तुत किया, लोक कल्याणकारी यात्राओं द्वारा सामाजिक और धार्मिक जागरण किया तथा अपनी शहादत से मानवीय आदर्शों को अमर कर दिया, इसी कारण वे वास्तव में इंसानियत की जमीर के रखवाले के रूप में सम्मानित हैं।

उनकी 350वीं शहादत वर्ष की स्मृति समस्त मानवता को धर्म स्वतंत्रता, सहिष्णुता और सेवा भाव का प्रकाश देती रहेगी, मानवीय आदर्शों के प्रेरक श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को कोटि–कोटि नमन।

अध्यक्षीय उद्बोधन

दिनांक - 22-11-2025

माननीय डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा
प्रख्यात साहित्यकार एवं विचारक

सबसे पहले तो मैं भारतीय ज्ञानपीठ के पितृपुरूष कर्मयोगी श्री कृष्ण मंगल सिंह जी कुलश्रेष्ठ की पावन स्मृति को प्रणाम करता हूं, जिन्होंने सद्भावना के इस अखिल भारतीय वैचारिक महायज्ञ का सूत्रपात किया। कवि कुल गुरू डा शिवमंगल सिंह जी सुमन की स्मृति को नमन करता हूं जिनकी प्रेरणा से यह महायज्ञ प्रारंभ हुआ। और भारतीय ज्ञानपीठ परिवार का अभिंनदन भी करता हूं कि उन्होंने सदभावना के महायज्ञ की पवित्र ज्योति को लगातार प्रज्वलित रखा है।

"गुरू तेग बहादुर जी के मानवीय आदर्श!" अपने उद्बोधन में बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी आज के विद्वान वक्ता रणजीत सिंह जी अरोरा ने दी। उन्होंने गुरूदेव के जीवन की विभिन्न घटनाओं के आधार –प्रसंगों के आधार पर उनके आदर्शों को रेखांकित किया। इस महत्वपूर्ण शोध पूर्ण व्याख्यान के लिए वे बधाई के पात्र हैं। साधुवाद के पात्र है। अभिनंदन के पात्र है।

जब कोई व्यक्ति अपने कर्म से, अपने आचरण से ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करता है जो मनुष्य जाति के हित मे होता है। जो ,समाज के लिए एक सीख बन जाता है, एक संदेश बन जाता है उसे हम आदर्श कहते हैं, और वह आदर्श प्रेरक भी होता है जो हमे प्रेरणा देता रहता है। और अनुकरणीय भी । जिसका अनुकरण अनुसरण कर हम भी उस व्यक्ति की तरह जीवन को सफल और सार्थक बना सकते हैं। गुरू तेग बहादुर जी ने अपने जीवन में जो आदर्श अपने कर्म से अपने आचरण से स्थापित किए हैं वे एक संदेश है जो प्रेरक भी हैं और अनुकरणीय भी। रणजीत जी ने उन आदर्शों की विस्तृत जानकारी दी है।

एक आदर्श संवेदनशीलता का आदर्श जैसा रणजीत जी ने भी अपने व्याख्यान में बताया कि कैसे बिना कपडों के एक गरीब बालक को देखकर उनकी संवेदनाएं उमड़ती हैं और वे अपने वस्त्र और आभूषण उतार कर उस बालक को दे देते हैं।

एक आदर्श आज्ञा कारिता का भी है कि कैसे मात्र 14 वर्ष की उम्र में गुरू तेग बहादुर अपने पिता की आज्ञा से शाहजहां की सेना के विरूद्ध युद्ध में भाग लिया। इसी युद्ध में उन्होंने तलवारबाजी का ऐसा प्रदर्शन किया कि गुरू हरगोबिंद जी ने उनका नाम तेगबहादुर रख दिया। पहले उनका नाम त्यागमल था। तेग का अर्थ होता है तलवार। ओर फिर जब पिता गुरू हरगोबिंद जी ने तेग बहादुर जी को गुरू नहीं बनाया वरन अपने पौत्र हरिराय जी को गुरू बनाया। और गुरूदेव को ग्राम बकाला जाने की आज्ञा दी तो गुरूदेव ने पिता की आज्ञा का पालन किया और अपनी मां और पत्नी के साथ बकाला चले गए। बकाला एक गांव था जा अमृतसर से कुछ किमी दूर था। रणजीत जी ने अपने उदबोधन में गुरूदेव के वैराग्य की बात की है।

जब उनके दो भाइयों,दो गुरूओं और दादी की मृत्यु होती है तो उनमें वैराग्य भाव जाग

उठता है। तब भी वे वैराग्य का आदर्श स्थापित करते हैं। पर उनका वैराग्य जीवन से संन्यास वाला वैराग्य नहीं, वरन कमल के फूल जैसा वैराग्य था। कमल का फूल जल में रहकर भी जल से निर्लिप्त रहता है वैसे ही वे संसार में रहकर सांसारिक माया –मोह से निर्लिप्त हो जाते हैं। वैराग्य का यह अर्थ नहीं कि मनुष्य परिवार को छोड़ दे। संन्यास ले ले। वनों –पहाड़ों में तपस्या करने चला जाए। वरन संसार में रहकर संन्यासी का जीवन जीना यह सबसे बड़ा वैराग्य है जो आदर्श गुरू तेग बहादुर जी ने स्थापित किया।

एक और आदर्श गुरूदेव ने स्थापित किया जीवित मुक्ति का। जिसकी ओर रणजीत जी ने संकेत किया है। मुक्ति दो प्रकार की होती है जीवन मुक्ति जो मृत्यु के बाद प्राप्त होती है और जीवित मुक्ति जो जीवित अवस्था मे ही प्राप्त होती है।जब मनुष्य काम क्रोध, मद, मोह आदि विकारों से दूर रहता है तो उसका आत्मिक विकास होता है वह सहज अवस्था में आ जाता है। और उसे जीवित मुक्ति प्राप्त होती है। गुरूदेव भी जीवन भर इन विकारों से दूर रहे। उन्होने कोई कामना नहीं की उन्होने गुरू पद की की कोई कामना नही की। वे चाहते तो सातवे या आठवे गुरू बन सकते थे। पर उनकी कोई कामना नही थी।

क्रोध – वे हमेशा शांत रहते थें कभी क्रोध नहीं करते थे। एक बार एक विरोधी ने उन पर गोली चलाकर उनकी हत्या का प्रयास किया। गुरूदेव बाल –बाल बच गए। बाद में उस अपराधी को पकड लिया गया। पर गुरूदेव ने उसे क्षमा कर दिया। ऐसे ही गुरू बनने के बाद जब वे पहली बार स्वर्ण मंदिर गए तो स्वर्ण मंदिर के दरवाजे उनके लिए बंद कर दिए गए। पर उन्हें तब भी क्रोध नहीं आया।

मद – उन्हें कभी इस बात का मद या अहम नहीं था कि वे सिख पंथ की गुरू परम्परा के हैं गुयओं वंशज है। 21 वर्षों तक बकाला में उन्होंने एकांत साधना की वहां किसी को पता ही नहीं था कि गुरू परिवार का कोई व्यक्ति यहां रहता है।

मोह – न उन्हें गुरू पद का कोई मोह था न अपने परिवार का धर्म के प्रचार प्रसार के लिए वे यात्राएं करते थे। जब विवाह के 34 वर्ष बाद उन्हें पुत्र गुरू गोबिंद सिंह की प्राप्ति हुई उस समय वे ढाका में थे। पुत्र का जन्म पटना में हुआ था। धर्म के प्रति वे इतने समर्पित थें कि उन्होंने पुत्र जन्म के बाद भी अपनी धर्म जाग्रति यात्रा जारी रखी और अपने पुत्र को जन्म के 5 वर्ष बाद देखा।

इस तरह वे काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि मनोविकारों से दूर थे, जिससे उनका आत्मिक विकास हुआ और जीवित अवस्था में ही उन्होंने मुक्ति प्राप्त कर आदर्श स्थापित किया। गुरूदेव के जीवन का सबसे बडा आदर्श है त्याग और बलिदान का आदर्श जिसकी बहुत ही विस्तृत चर्चा रणजीत जी ने अपने व्याख्यान में की है, और जिसके लिए गुरूदेव को हिंद की चादर कहा जाता है।

रणजीत जी ने बताया कि कैसे तेग बहादुर धर्म की रक्षा के लिए आत्म बलिदान देते है। वह बलिदान से भी बड़ा था आत्म बलिदान। जब उन्होंने कश्मीरी ब्राहमणों से कहा कि जाओं औरंगजेब से कह दो कि यदि गुरू तेग बहादुर इस्लाम स्वीकार कर लेते हैं तो हम सब भी धर्म

परिवर्तन कर लेंगे। वे जानते थे यह मुगल बादशाह को खुली चुनौती थी। इसका परिणाम भी वे जानते थे। इसीलिए गुरूदेव का बलिदान, बलिदान नहीं नहीं आत्म बलिदान है।

कल्पना कीजिए कैसे एक शिष्य को उबलते हुए गर्म पानी में डाल कर शहीद किया होगा। केसे दूसरे शिष्य को रूई में लपेट कर जीवित जला दिया गया होगा। और कैसे तीसरे शिष्य के शरीर को खड़े आरे से चीर कर दो भाग किए होंगे।

तीन शिष्यों को उनकी आंखों के सामने बर्बरता पूर्वक शहीद कर दिया जाता है ताकि गुरूदेव भयभीत हो जाएं और इस्लाम कबूल कर लें ! पर नहीं अपने शिष्यों शहादतों से उनका निश्चय और अधिक दृढ होता है। और फिर इस्लाम न कबूल करने पर उनका शीश धड़ से अलग कर दिया जाता है।

त्याग और बलिदान का इससे बड़ा आदर्श और क्या हो सकता है ? कि धर्म की रक्षा के लिए संस्कृति की रक्षा के लिए कोई अपने प्राणों की आहूति दे दे। विश्व के इतिहास की यह पहली और अंतिम घटना है। कि किसी ने धर्म के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया हो। न भूतो न भविष्यति! इस बलिदान द्वारा भी गुरूदेव ने दो आदर्श स्थापित किए

गुरूओं के लिए आदर्श! धर्म के लिए आदर्श। गुरू का कार्य सिर्फ ज्ञान देना, प्रवचन देना, उपदेश देना ही नहीं हैं वरन समय की मांग पर धर्म की रक्षा के लिए ,संस्कृति की रक्षा के लिए, राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना बलिदान देने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। और धर्म का अर्थ केवल मानवीय गुणों को धारण करना ही नहीं है वरन अनीति का अन्याय का अत्याचार का और अधर्म का विरोध करना प्रतिरोध करना भी धर्म है।

इस तरह गुरू तेग बहादुर ने अपने जीवन में कई मानवीय आदर्श स्थापित किये। जो हमारे लिए प्रेरक भी हैं और अनुकरणीय भी। लांग फैलों की कविता का अंश है

lives of greatman reminds us /that we can make our lives sublime
leave departing behind us /foot prints on the sand of time

जैसे गुरूदेव के आदर्श है। पदचिन्ह हैं

एक बार फिर मैं भारतीय ज्ञानपीठ को इस महत्वपूर्ण सद्भावना व्याख्यानमाला के आयोजन की बधाई देता हूं। ऐसे आयोजन होते रहना चाहिए। ये समाज में चेतना जाग्रत करते है। अपनी विरासत से परिचित कराते है। ज्ञान वर्द्धन करते है। समाज को नई दिशा और दशा प्रदान करते हैं है और स्वस्थ सजग सशक्त समाज की रचना का आधार सिद्ध होते हैं।

मैं भारतीय ज्ञानपीठ का आभार व्यक्त करता हूं कि इस महान वैचारिक महायज्ञ में आज मुझे भी समिधा अर्पित करने का अवसर प्रदान किया गया और आप सभी प्रबुद्ध श्रोताओं का भी आभार व्यक्त करता हूं

धन्यवाद।

आप नही बदलेंगे तो प्रकृति आपको बदल देगी

दिनांक - 23-11-2025

पद्म भूषण माननीय श्री अनिल प्रकाश जोशी
प्रसिद्ध पर्यावरणविद्

सभी मित्रों को मेरा सादर प्रणाम। मैं डॉ. अनिल जोशी उत्तराखंड हिमालय से बोल रहा हूं और आज अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यान माला का हिस्सा बनना मेरे लिए सम्मान की बात है। ऐसे समय में इस प्रकार के विषयों पर चर्चा करना, जो हमें आने वाले समय के लिए चिंतित भी करें, साधे भी और हमारी समझ को बेहतर बनाएं, अत्यंत आवश्यक है। मैं इसे इस रूप में रखना चाहूंगा कि आप अपने–अपने स्तर पर पिछले 20 वर्षों को याद करें। इन 20 वर्षों में आपने अपने जीवन में, अपने आसपास, अपने शहर और पूरे विश्व में अनेक बदलाव देखे होंगे। आपने यह भी अनुभव किया होगा कि एक ही प्रजाति, जिसे अंग्रेजी में ह्यूमन स्पीशीज और वैज्ञानिक रूप से होमोसेपियंस कहा जाता है, उसने अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। यह प्रयास दो स्तरों पर हुए–एक, अपना जीवन बेहतर बनाने के लिए और दूसरा, दूसरों से आगे निकलने के लिए। यह प्रतिस्पर्धा जहां तक बेहतरी के लिए है, वहां तक उचित है, लेकिन जब यह दूसरे को छोटा करने और उस पर अपनी मंशा थोपने तक पहुंच जाती है, तब यह चिंता का विषय बन जाती है। इसी प्रवृत्ति के कारण देशों का गठन हुआ–अमेरिका, चीन, ऑस्ट्रेलिया जैसे अनेक राष्ट्र विकसित हुए। परंतु यदि हम केवल पिछले 20 वर्षों को ही देखें, तो हमें समझ में आता है कि दुनिया में बहुत कुछ बदला है और उन बदलावों में सबसे बड़ा परिवर्तन, जिस पर हमने अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया, वह है प्रकृति के स्वभाव में हो रहा बदलाव।

इन 20 वर्षों ने हमारे पिछले 400–500 वर्षों के विकास का निचोड़ हमारे सामने रख दिया है। जिस प्रकार मनुष्य ने अपने लिए संसार को बेहतर बनाने का प्रयास किया, उसी का परिणाम आज इस रूप में सामने आ रहा है कि पूरी पारिस्थिति का स्वभाव बदलता जा रहा है। पिछले वर्ष की बात करें तो प्रचंड गर्मी ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया था, लगभग 180 देश सीधे प्रभावित हुए थे। लेकिन ठीक एक वर्ष बाद वही जून का महीना इतना सामान्य रहा कि उसे पारंपरिक अर्थों में गर्मी कहना भी कठिन हो गया। इसी प्रकार वर्षा, जिसका हमारे देश में सदैव स्वागत रहा है, जो हमारे सांस्कृतिक और भावनात्मक जीवन का हिस्सा रही है, जिसका वर्णन हमारे गीतों और साहित्य में बड़े ही सौंदर्यपूर्ण ढंग से हुआ है, वह भी अब अपने पुराने स्वरूप में नहीं रही। कभी "बरखा बहार आई" जैसे गीत मानसून के आगमन का प्रतीक होते थे, लेकिन आज परिस्थितियां बदल चुकी हैं। अब बारिश का समय, स्वरूप और प्रभाव सब बदल गया है। इस वर्ष को ही देखें–अक्टूबर समाप्त होने को है, नवंबर की तैयारी है, फिर भी वर्षा का सिलसिला जारी है।

पिछले वर्ष जहां गर्मी ने मार दी थी, वहीं इस बार बारिश ने संकट खड़ा कर दिया है। लगातार कुछ वर्षों से हम देख रहे हैं कि वर्षा का पैटर्न बदल गया है। पहले सितंबर के मध्य तक

वर्षा समाप्त हो जाती थी, लेकिन अब अक्टूबर और नवंबर तक जारी रहती है। हाल ही में इलाहाबाद और बनारस जैसे क्षेत्रों में बादल छाए रहे, वर्षा हुई और वहां धान की फसल को भारी नुकसान पहुंचा। इससे पहले पंजाब में लगभग चार लाख हेक्टेयर की फसल एक ही झटके में नष्ट हो गई थी। उत्तराखंड हिमालय सहित पूरे हिमालय क्षेत्र की जो स्थिति बनी है, वह भी हमारे सामने है। यह सब संकेत हैं कि प्रकृति के साथ हमारे संबंधों में जो असंतुलन आया है, उसे समझने और सुधारने की आवश्यकता है।

चलिए, यदि हम देश से बाहर निकलकर विश्व पर दृष्टि डालें तो हाल के घटनाक्रम और भी चिंताजनक दिखाई देते हैं। कुछ समय पूर्व एक बड़े चक्रवात ने फिलीपींस, थाईलैंड और चीन को प्रभावित किया, और हाल ही में समुद्र से उठे 'मोखा' चक्रवात ने तमिलनाडु सहित अनेक क्षेत्रों को गंभीर रूप से प्रभावित किया। प्रश्न यह उठता है कि यह सब अचानक क्यों बदल रहा है?

पिछले वर्ष की प्रचंड गर्मी, उसके बाद असामान्य वर्षा और फिर मौसम के इस असंतुलन को यदि सीधे शब्दों में कहें तो यह प्रकृति का एक प्रकार का दंड प्रतीत होता है, जो हमारे ऊपर पड़ने लगा है। अब यदि हम अपने इतिहास को देखें, तो हम प्रायः मुस्लिम इतिहास, हिंदू राजाओं का इतिहास, मोहनजोदड़ो या सिंधु सभ्यता जैसे विषय पढ़ते हैं, परंतु दुर्भाग्य यह है कि हमने पृथ्वी के निर्माण और मनुष्य के विकास के वास्तविक इतिहास पर कभी गंभीर दृष्टि नहीं डाली। यदि हम प्रकृति के व्यवहार को उसके प्रारंभिक काल से लेकर आज तक समझते और पढ़ते, तो शायद हम यह जान पाते कि हमारी गलतियां कहां हैं।

स्थिति को इस प्रकार समझिए कि आज दुनिया में लगभग 80 हजार जिराफ ही बचे हैं, जबकि उनका अस्तित्व मनुष्य से कहीं पुराना है। इसी प्रकार गैंडे और अन्य अनेक जीव, जिनका इतिहास हमसे पहले का है, धीरे–धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। पेड़–पौधे, जंगल–ये सब हमारे अस्तित्व से पहले के हैं और इन्होंने ही हमें जन्म दिया, पाला–पोसा और आगे बढ़ाया, लेकिन आज परिदृश्य पूरी तरह बदल चुका है। आज स्थिति यह है कि जिराफ जहां मात्र 80 हजार के आसपास रह गए हैं, वहीं मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं के लिए गाय, भैंस, बकरी और भेड़ों की संख्या लगभग दो अरब तक पहुंचा दी है। हमने जिन जीवों को अपने उपयोग के लिए आवश्यक समझा, उन्हें बढ़ाया और अन्य जीवों को नष्ट होने के लिए छोड़ दिया। इसी प्रकार भेड़िये, जिनकी संख्या आज लगभग दो लाख रह गई है, जबकि दूसरी ओर लगभग 40 करोड़ पालतू कुत्ते मनुष्य द्वारा पाले जा रहे हैं और इसके अतिरिक्त लाखों आवारा कुत्ते सड़कों पर हैं। यह सब मनुष्य की ही देन है–उसने अपनी आवश्यकताओं के अनुसार जीवों को पालतू बनाया और उनका संतुलन बिगाड़ दिया।

आज स्थिति यह है कि समाज का एक बड़ा वर्ग कुत्तों को पालना अपने शौक और प्रतिष्ठा का विषय मानता है, जहां एक–एक कुत्ते की कीमत लाखों में आंकी जाती है, जबकि वे जीव जिनका प्रकृति के संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान था, उनकी संख्या लगातार घटती जा रही है। चिंपैंजी और एप्स, जिन्हें मानव का पूर्वज माना जाता है, उनकी संख्या आज लगभग ढाई लाख रह

गई है, जबकि मनुष्य, जो उन्हीं से विकसित हुआ है, उसकी संख्या बढ़कर लगभग 8 बिलियन तक पहुंच चुकी है। यह आंकड़े अपने आप में बहुत कुछ कह देते हैं।

अब बताइए कि मनुष्य ने अपने लिए संसाधन जुटाने की प्रक्रिया कैसे शुरू की। यदि हम सरल रूप में देखें तो लगभग 10,000 वर्ष पूर्व जब तथाकथित सभ्यता, जिसे हम कृषि के रूप में जानते हैं, प्रारंभ हुई, तब मनुष्य ने सबसे पहला काम क्या किया? जंगल काटे और खेती शुरू की। अर्थात काटने और नष्ट करने की प्रक्रिया वहीं से आरंभ हो गई थी। इसके बाद जब खेती विकसित हुई तो बसावट की आवश्यकता पड़ी और मनुष्य ने और अधिक जंगल काटे। प्रश्न यह है कि हम किसके घरों में अतिक्रमण कर रहे थे? हम स्वयं भी तो उसी प्रकृति का हिस्सा थे। जब हम जंगलों से भोजन एकत्र करते थे, तब हम उसी व्यवस्था के अंग थे, लेकिन जैसे ही तथाकथित सभ्यता आई, वह एक प्रकार का 'क्रिमिनलाइजेशन' बन गई, जिसमें हमने अन्य सबको समाप्त कर अपने लिए बेहतर जीवन बनाने का प्रयास किया।

धीरे–धीरे गांव, शहर और आधुनिक संरचनाएं बनती चली गईं और आज दुनिया इस स्थिति तक पहुंच गई है कि उस समय जहां कुछ मिलियन बकरियां, भेड़ें और मुर्गियां थीं, आज उनकी संख्या अरबों में पहुंच गई है। अब विचार कीजिए कि वे अन्य प्रजातियां, जो पृथ्वी की ही उपज थीं और जिनका प्रकृति के संतुलन में योगदान था, वे समाप्त होती चली गईं, जबकि मनुष्य ने अपनी संख्या और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार पाले गए जीवों की संख्या अत्यधिक बढ़ा दी। इसका सीधा बोझ पृथ्वी पर पड़ा है, क्योंकि अन्य जीव प्रकृति से जितना लेते थे, उतना लौटाते भी थे, जबकि मनुष्य ने केवल लिया, भोगा और संचय किया।

आगे बढ़ते हुए इतिहास को देखें तो 1600–1700 के आसपास विश्व के सबसे समृद्ध क्षेत्र अफ्रीका और एशिया माने जाते थे, क्योंकि उस समय अर्थव्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित थी। परंतु 1700 के बाद जब वैज्ञानिक क्रांति आई और उसका नियंत्रण यूरोप और अमेरिका के हाथों में गया, तब उन्होंने विज्ञान और तकनीक के माध्यम से संसाधनों का दोहन कर स्वयं को सबसे समृद्ध बना लिया। 1830 में ब्रिटेन में पहली रेल चली और उसके बाद भारत में व्यापक रेल नेटवर्क इसलिए विकसित किया गया ताकि कोयला और अन्य संसाधनों का परिवहन कर औद्योगिक क्रांति को गति दी जा सके। इसी प्रकार फ्रांस और अन्य देशों ने भी यही मार्ग अपनाया। वास्तव में यह मनुष्य ही है जिसने जातियां बनाईं, देश बनाए, शहर खड़े किए और प्रकृति से अलगाव पैदा किया, और आज उसी का परिणाम है कि हम वैश्विक तापवृद्धि और जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्याओं के सामने खड़े हैं। यह सब हमारी सुविधा जुटाने की प्रवृत्ति का परिणाम है।

अब स्थिति यह है कि हम बहुत कुछ नियंत्रित कर सकते हैं, लेकिन प्रकृति को नहीं। बड़े–बड़े वैज्ञानिक देश भी मिलकर इन बदलते मौसमों और अनियंत्रित वर्षा को रोक नहीं पा रहे हैं। विज्ञान के आधार पर भी इसे पूरी तरह नियंत्रित करना संभव नहीं है, क्योंकि प्रकृति सर्वोच्च है। इसी कारण ब्रह्म ज्ञान भी प्रकृति से जुड़ा हुआ है, जो सामूहिकता और समानता का संदेश देता

है। मनुष्य का वर्तमान ज्ञान चाहे कितना भी विकसित हो जाए, वह अभी उस स्तर तक नहीं पहुंच पाया है, क्योंकि प्रकृति का मूल स्वभाव संतुलन और समन्वय है, और वही हमें सीखना आवश्यक है।

प्रकृति के व्यवहार से हमने वास्तव में कुछ नहीं सीखा। एक पेड़ सबको समान रूप से देता है–वह न हिंदू जानता है, न मुसलमान, न क्रिश्चियन, न बौद्धय वह सबको छाया देता है, सबको फल देता है, जो कुछ उसके पास है वह बिना भेदभाव के बांट देता है। असमानता का विचार उसमें नहीं होता, यह तो हमने घेराबंदी करके "मेरा पेड़दृतेरा पेड़" बना दिया। इसी प्रकार नदी को देखिए, वह सबको जल देती है, जीवन देती है, वह यह नहीं कहती कि यह मेरा है या तेरा है। पर मनुष्य ने अंततः क्या किया? पहले प्रकृति के अन्य जीवों को नष्ट किया और अब मनुष्य स्वयं मनुष्य को नष्ट करने पर उतर आया है। आज विश्व में जो युद्ध चल रहे हैं–अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत–पाक संबंध, इजराइल और गाजा, यूक्रेन और रूस–ये सब क्या हैं? यह मनुष्य द्वारा मनुष्य के विनाश की प्रक्रिया है। और कहीं न कहीं यह भी प्रकृति का एक संकेत है कि जब मनुष्य अत्यधिक सक्षम हो जाता है, तो उसका हृदय और बुद्धि दोनों भटकने लगते हैं, और वह दूसरों को अपने अधीन करना चाहता है। लेकिन हम यह भूल गए कि मनुष्य पर मनुष्य का प्रभुत्व तो संभव हो सकता है, पर प्रकृति पर नहीं।

प्रकृति हम सब से ऊपर है, उसका अपना स्वतंत्र व्यवहार है। अब स्थिति यह है कि जब हम स्वयं को संभालते हुए नहीं दिख रहे, जब संवेदनशीलता के लिए हमारे भीतर स्थान नहीं बच रहा, तब यह मान लेना चाहिए कि प्रकृति भी हमें अनंत काल तक क्षमा करने वाली नहीं है। ये जो छोटे–छोटे संकेत हैं–मौसम के बदलते स्वरूप–ये साधारण नहीं हैं। इनके प्रभाव खेती पर पड़ रहे हैं, स्वास्थ्य पर पड़ रहे हैं और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर गहरा असर डाल रहे हैं। हर फसल, हर वृक्ष का अपना एक प्राकृतिक चक्र होता है, जो मौसम के अनुरूप चलता है, और आज उन सभी चक्रों पर चोट पहुंच रही है और आगे भी पहुंचेगी। जिस मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए इन सबका दोहन किया, वही अब देखेगा कि ये प्रणालियां उसका साथ देने को तैयार नहीं होंगी। आज दुनिया की हजारों नदियां सूख चुकी हैं और पानी अब या तो बाढ़ के रूप में दिखाई देता है या सूखे के रूप में। हमने तकनीक के माध्यम से बहुत उपाय सोचे–कहीं से पानी लाना, जमीन के भीतर से निकालना, नदियों का दोहन करना–परंतु अबएक–एक करके ये सभी साधन साथ छोड़ते जा रहे हैं।

हम सब जानते हैं कि परिस्थितियां क्या हैं ? इसलिए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आने वाले समय में हमारा अस्तित्व कितना सुरक्षित है। शायद उतना नहीं, जितना हम मानते हैं, क्योंकि हमने वह समझ विकसित ही नहीं की, जो आवश्यक थी। हमने शिक्षा दी, विज्ञान सिखाया, नई पीढ़ी तैयार की, लेकिन प्रकृति की समझ विकसित नहीं कर पाए। हमने प्रकृति के विज्ञान को नहीं समझा और न ही अपने अस्तित्व की मूल कहानी को ठीक से जाना।

देखिए, यह कितनी विचित्र बात है कि जब पृथ्वी के इतिहास को गहराई से देखा गया तो

यह सामने आया कि पृथ्वी पर जीवन दो बार लगभग समाप्त हो चुका है—एक बार लगभग 25 करोड़ वर्ष पहले और दूसरी बार लगभग 6 करोड़ वर्ष पहले। उस समय प्रकृति पृथ्वी को एक नई अवस्था में तैयार कर रही थी। आश्चर्य की बात यह है कि वह तैयारी एक ऐसी प्रजाति के लिए थी, जो प्रकृति और पृथ्वी को समझ सके, और उसी क्रम में मनुष्य का जन्म हुआ। 25 करोड़ वर्ष पहले की घटना को "ग्रेट डाइंग" कहा जाता है, जिसमें अधिकांश जीवन समाप्त हो गया, और 6 करोड़ वर्ष पूर्व एक विशाल उल्कापिंड के टकराने तथा डेक्कन क्षेत्र में ज्वालामुखीय गतिविधियों के कारण भी व्यापक विनाश हुआ। इन घटनाओं के बाद पृथ्वी पर जीवन ने पुनः विकसित होना शुरू किया और इसी क्रम में मनुष्य की प्रजाति का उद्भव हुआ।

यह भी उल्लेखनीय है कि आज जिस प्रजाति को हम मनुष्य या होमोसेपियंस कहते हैं, ऐसी अनेक मानव प्रजातियां कभी अस्तित्व में थी—लगभग दो हजार प्रकार—जिनमें अलग—अलग नाम और स्वरूप थे, जैसे होमो इरेक्टस, होमो हैबिलिस आदि, जो अफ्रीका, यूरोप और अन्य क्षेत्रों में विकसित हुए। समय के साथ इन प्रजातियों के बीच संघर्ष हुआ और अंततः वही प्रजाति बची जिससे हम सब संबंधित हैं, और आज के वैज्ञानिक अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि विश्व के सभी मनुष्यों में मूलतः एक साझा डीएनए संबंध है, अर्थात हम सब एक ही स्रोत से निकले हैं। अब यदि हम इसे एक सरल उदाहरण से समझें, तो पृथ्वी का निर्माण लगभग 4.6 बिलियन वर्ष पूर्व हुआ। यदि हम इस पूरे समय को 46 वर्षों के बराबर मान लें, तो इस 46 वर्ष की "पृथ्वी" ने अपने जीवन के अंतिम चरण में, मानो अधेड़ अवस्था में, मनुष्य को जन्म दिया। जिस प्रकार किसी मां को प्रसव के समय अत्यधिक पीड़ा होती है, उसी प्रकार प्रकृति ने भी इस प्रजाति को जन्म देने में लंबी प्रक्रिया और संघर्ष झेला। मनुष्य को विशेष रूप से बुद्धि इसलिए दी गई थी कि वह स्वयं को समझे, अपने संबंधों को समझे, संसार को समझे और संतुलन के साथ आगे बढ़े, लेकिन हुआ इसके विपरीत—इस प्रजाति ने अन्य जीवों को नष्ट किया, प्रकृति का संतुलन बिगाड़ा।

यदि किसी एक जीव की हत्या होती है, तो वह केवल एक प्राणी का अंत नहीं होता, बल्कि उसके साथ जुड़ा पूरा पारिस्थितिक योगदान भी समाप्त हो जाता है। इस दृष्टि से अन्य जीवों का विनाश प्रकृति के लिए गहरा आघात है। अब इसी उदाहरण को आगे बढ़ाते हुए यदि हम मानें कि 46 वर्षों की इस पृथ्वी ने मनुष्य को केवल "चार घंटे" पहले जन्म दिया है, तो यह समझना आसान हो जाता है कि मनुष्य का अस्तित्व कितना हाल का है। और आश्चर्य की बात यह है कि इन चार घंटों में भी औद्योगिक क्रांति केवल अंतिम 35—40 मिनट में आई, और इन्हीं कुछ मिनटों में मनुष्य ने पृथ्वी के लाखों वर्षों के संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित कर दिया। कहने का तात्पर्य है कि पृथ्वी का इतिहास बहुत लंबा है। मनुष्य तो बहुत देर से आया है, लेकिन उसने बहुत अल्प समय में अत्यधिक हस्तक्षेप कर पृथ्वी के स्वाभाविक संतुलन को संकट में डाल दिया है।

मनुष्य अपने अहंकार में यह भूल गया कि उसका प्रकृति पर कोई नियंत्रण नहीं है। उसने वृक्षों को काटा, नदियों को नष्ट किया, तालाबों को खत्म किया, वन्य जीवों का विनाश किया और

अब उसी का परिणाम सामने आ रहा है कि प्रकृति मानो हमें साधने की तैयारी कर रही है। प्रकृति मां के समान है, इसलिए पहले वह संकेत देती है—कभी गर्मी के रूप में, कभी तपन के रूप में, कभी वर्षा और आपदाओं के रूप में—मानो समझा रही हो कि सब कुछ नियंत्रण में नहीं है। यदि हम अब भी समझ जाएं तो ठीक है, अन्यथा स्थिति स्पष्ट है कि हमारा अस्तित्व ही संकट में पड़ सकता है। इस बार यदि कोई विनाश होता है तो उसके लिए प्रकृति नहीं, बल्कि स्वयं मनुष्य जिम्मेदार होगा। पहले जब पृथ्वी पर दो बार बड़े विनाश हुए थे, वह प्रकृति का स्वाभाविक परिवर्तन था, लेकिन इस बार हम स्वयं पृथ्वी को अपने लिए अयोग्य बना रहे हैं।

सत्य यह है कि हमें पृथ्वी को नहीं, बल्कि स्वयं को बचाने की आवश्यकता है। जब पहले भी बड़े विनाश हुए, तब भी प्रकृति समाप्त नहीं हुई, उसने केवल अपने स्वरूप को बदला और नई परिस्थितियों के अनुरूप जीवन को पुनः विकसित किया। आज भी यदि मनुष्य अपने व्यवहार से असंतुलन पैदा करेगा, तो प्रकृति अपने तरीके से संतुलन स्थापित करेगी और उसका प्रभाव हम पर ही पड़ेगा। चक्रवात, भूकंप, बाढ़—ये सभी उसी के संकेत हैं, जो एक झटके में हजारों—लाखों जीवन समाप्त कर सकते हैं। वास्तविकता यह है कि हम सब कुछ जानते हुए भी अपनी समझ का उपयोग केवल अपने लाभ के लिए करते हैं, जबकि प्रकृति और पृथ्वी के व्यवहार के प्रति हमारी समझ लगभग शून्य है, और यही शून्यता आगे चलकर हमारे अस्तित्व को भी शून्य कर सकती है।

इतिहास बताता है कि बड़े विनाशों के बाद भी कुछ प्रजातियां बचीं क्योंकि उन्होंने परिस्थितियों के साथ स्वयं को ढाल लिया, लेकिन आज का मनुष्य अपनी आवश्यकताओं और विलासिताओं के कारण इतना निर्भर और कमजोर हो चुका है कि वह प्रकृति के रौद्र रूप का सामना नहीं कर पाएगा। इसलिए यह समय चेतने का है— अहंकार छोड़कर समझ विकसित करने का, क्योंकि अहंकार कभी स्थायी नहीं होता और मनुष्य तो प्रकृति के सामने अत्यंत छोटा है।

अतः आज आवश्यकता है कि हम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसी समझ विकसित करें जिसमें हम केवल विज्ञान के माध्यम से भोग न करें, बल्कि प्रकृति के विज्ञान को समझकर जोड़ने का कार्य करें – अपने को, वन्य जीवों को, जंगलों को, जल को, नदियों को। मनुष्य द्वारा निर्मित विज्ञान जहां भोगवादी सभ्यता को बढ़ाता है, वहीं प्रकृति का विज्ञान हमें जोड़ने के संस्कार देता है। सभ्यता और संस्कार में यही मूल अंतर है—सभ्यता भोग पर आधारित है, जबकि संस्कार जोड़ने पर आधारित हैं। यही संदेश मैं आप तक पहुंचाना चाहता हूं, और अब यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएं। आप सभी को प्रणाम और धन्यवाद।

अध्यक्षीय उद्बोधन

दिनांक - 23-11-2025

पद्मश्री जयरामजी
प्रसिद्ध नृत्याचार्य

सद्भावना व्याख्यानमाला के सभी दर्शकों को नमस्कार । हमें गर्व है कि हमारी भारतीय संस्कृति, अत्यंत समृद्ध, विविध और बहुआयामी है। हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता अनेक रूपों में अभिव्यक्त होती है और हर रूप अपने आप में विशेष महत्व रखता है। भारतीय संस्कृति इतनी व्यापक है कि इसके बारे में जितना कहा जाए उतना कम है।

हमारे देश में अनेक प्रकार के प्रोफेशन और परंपराएं हैं, और हर क्षेत्र में कला और संस्कृति की अपनी विशिष्ट पहचान है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति को इंद्रधनुष की तरह माना जाता है, जिसमें अनेक रंग मिलकर एक सुंदर समग्रता का निर्माण करते हैं। इस विविधता में एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है–शास्त्रीय नृत्य, शास्त्रीय संगीत और शिल्प कला, जो हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर के प्रमुख आधार हैं। विशेष रूप से शास्त्रीय नृत्य की बात करें तो भारत में लगभग आठ से नौ प्रमुख शास्त्रीय नृत्य रूप प्रचलित हैं, जो अलग–अलग राज्यों और क्षेत्रों से विकसित हुए हैं।

दक्षिण भारत में आंध्र प्रदेश का कुचिपुड़ी, तमिलनाडु का भरतनाट्यम, केरल का कथकली और मोहिनीअट्टम, कर्नाटक की परंपराएं, वहीं पूर्वोत्तर में मणिपुर का मणिपुरी नृत्य और ओडिशा का ओडिसी नृत्य, तथा उत्तर भारत में कथक नृत्य प्रमुख रूप से प्रसिद्ध हैं। इन सभी नृत्य शैलियों की अपनी अलग शैली, भाव–भंगिमा और प्रस्तुति की विधि है, लेकिन इनका मूल भाव एक ही है– आध्यात्मिकता और ईश्वर के प्रति समर्पण।

शास्त्रीय नृत्य का आधार हमारे प्राचीन वेदों और शास्त्रों से जुड़ा हुआ है, जैसे ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद, जिनसे संगीत और नृत्य की परंपराएं विकसित हुईं। सामवेद से संगीत की उत्पत्ति मानी जाती है और उसी के साथ नृत्य भी धार्मिक और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का माध्यम बना। इसलिए हमारे शास्त्रीय नृत्य मुख्य रूप से भगवान और देवी–देवताओं के जीवन, लीलाओं और भावों को अभिव्यक्त करते हैं। प्राचीन समय में देवदासी परंपरा भी इसी का एक महत्वपूर्ण अंग थी, जहां देवदासियां मंदिरों में भगवान की सेवा, पूजा और आराधना के रूप में नृत्य प्रस्तुत करती थीं। बाद में समय के साथ यह परंपरा बदलती गई और देवदासियां राजदरबारों में राजनर्तकी के रूप में प्रस्तुत होने लगीं। आगे चलकर नृत्य मंदिरों और राजदरबारों से निकलकर जनसामान्य के बीच पहुंचा और सार्वजनिक मंचों पर प्रस्तुत किया जाने लगा। इस प्रकार समय के साथ नृत्य की परंपराओं में परिवर्तन हुआ, लेकिन उसका मूल भाव–भक्ति, सौंदर्य और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति–आज भी उसी प्रकार जीवित है।

इसमें से शास्त्रीय नृत्य का अर्थ क्या है? शास्त्रीय नृत्य को हमारे देश में पंचम वेद कहा

गया है। मान्यता है कि सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा ने चारों वेद–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद–से तत्व लेकर नाट्यशास्त्र की रचना की, जिसे पंचम वेद के रूप में जाना जाता है। इस नृत्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मनुष्य के जीवन को दिशा देना, उसके भीतर परिवर्तन लाना और दैनिक जीवन के व्यवहार को संस्कारित करना है।

नाट्यशास्त्र को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा इसी विचार से विकसित हुई, ताकि लोग देखकर सीखें और अपने जीवन में सुधार ला सकें। भगवान ब्रह्मा ने यह नाट्यशास्त्र भरत मुनि को प्रदान किया और उन्हें इसे व्यवहारिक रूप में समाज तक पहुंचाने का दायित्व दिया। इसके बाद भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र का अध्ययन कर अपने शिष्यों को इसका प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया और तभी से यह परंपरा निरंतर चलती आ रही है। प्रारंभ में यह नृत्य मुख्य रूप से भगवान और देवी–देवताओं की कथाओं पर आधारित था, जिसमें उनकी लीलाओं और चरित्रों को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता था। बाद में जब राजाओं का शासन स्थापित हुआ तो उन्होंने इस नृत्य को मंदिरों से बाहर लाकर अपने दरबारों में भी प्रस्तुत करने का आदेश दिया, जिससे देवदासी परंपरा मंदिरों से निकलकर राजदरबारों तक पहुंची। धीरे–धीरे यह नृत्य आम जनता के बीच भी आने लगा और सार्वजनिक मंचों पर प्रस्तुत किया जाने लगा।

शास्त्रीय नृत्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि इसमें मानव जीवन की दैनिक गतिविधियों, भावनाओं और घटनाओं को भी नृत्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है, जिसे कथात्मक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें विभिन्न कथाओं को कोरियोग्राफी के माध्यम से रूपायित कर दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है, जैसे भगवान शिव, पार्वती, विष्णु और माता लक्ष्मी से जुड़ी कथाएं। इस कला को आगे बढ़ाने में अनेक महान गुरुओं का योगदान रहा है, जिन्होंने ग्रंथों की रचना की और अपने शिष्यों को यह विद्या सिखाई। भारत में इस परंपरा को आगे बढ़ाने के दो प्रमुख माध्यम रहे हैं। गुरु–शिष्य परंपरा और परिवार परंपरा। गुरु–शिष्य परंपरा में गुरु अपने शिष्यों को प्रशिक्षित कर इस कला का प्रसार करते हैं, जबकि परिवार परंपरा में यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी एक ही परिवार के भीतर सिखाई और आगे बढ़ाई जाती है। इस प्रकार शास्त्रीय नृत्य केवल एक कला नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिक अभिव्यक्ति और जीवन दर्शन का महत्वपूर्ण अंग है, जो सदियों से निरंतर प्रवाहित हो रहा है।

ये शास्त्रीय नृत्य अनेक प्रकार के हैं। उत्तर भारत में शास्त्रीय नृत्य की प्रमुख शैली कथक है, जिसमें मुख्य रूप से लखनऊ घराना और जयपुर घराना प्रसिद्ध हैं। दक्षिण भारत में भी नृत्य की विभिन्न शैलियां विकसित हुईं, जिनमें समय के साथ अलग–अलग रूप और प्रस्तुति देखने को मिलती है। आंध्र प्रदेश का कुचिपुड़ी, तमिलनाडु का भरतनाट्यम, केरल का कथकली और मोहिनीअट्टम, ओडिशा का ओडिसी और मणिपुर का मणिपुरीकृये सभी शास्त्रीय नृत्य अपने–अपने राज्यों से उत्पन्न हुए हैं और आज भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं। भारत एक विशाल देश है, इसलिए यहां हर क्षेत्र में अलग–अलग रुचि और परंपराएं देखने को मिलती हैं, और जिन लोगों की रुचि शास्त्रीय नृत्य या शास्त्रीय संगीत में होती है, वे इसे निरंतर सीखते और आगे बढ़ाते आ

रहे हैं। इस परंपरा को बनाए रखने में परिवार परंपरा और गुरु–शिष्य परंपरा दोनों का महत्वपूर्ण योगदान है, और आज भी ये दोनों परंपराएं सक्रिय रूप से चल रही हैं। कई परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला को सहेज रहे हैं और गुरु अपने शिष्यों के माध्यम से इसका प्रचार–प्रसार कर रहे हैं।

भारत सरकार भी हमारी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है और इन कलाओं के प्रचार के लिए विभिन्न प्रकार की सहायता प्रदान करती है। इसके अलावा कई संस्थाएं और संगठन भी शास्त्रीय नृत्य और संगीत को आगे बढ़ाने के लिए कार्यक्रम आयोजित करते हैं और कलाकारों को मंच प्रदान करते हैं। मैंने स्वयं देश–विदेश में इस कला का प्रचार होते देखा है। आज के समय में शास्त्रीय नृत्य का दायरा बहुत व्यापक हो गया है। पहले लगभग सौ वर्ष पूर्व ये नृत्य मुख्यतः अपने–अपने राज्यों तक सीमित थे, लेकिन अब देश के हर कोने से विद्यार्थी विभिन्न शास्त्रीय नृत्य सीखने के लिए आते हैं। इतना ही नहीं, विदेशी लोग भी भारत आकर इन नृत्य शैलियों को सीख रहे हैं और अपने देशों में इसका प्रचार कर रहे हैं।

जब मैं रूस गया था, तब मैंने स्वयं देखा है कि वहां के लोग भारतीय शास्त्रीय नृत्य सीखकर उसका प्रदर्शन कर रहे थे। इसी प्रकार जापान में भी लोगों को भारतीय संस्कृति, शास्त्रीय नृत्य और संगीत सीखते और उसका प्रचार करते देखा गया है। यह हमारे देश की कला और संस्कृति की व्यापकता और प्रभाव का प्रमाण है। हमारे देश का साहित्य, कला और संस्कृति अत्यंत समृद्ध है और इसे जीवित रखने का श्रेय हमारे कलाकारों को जाता है, जो निरंतर इसे आगे बढ़ा रहे हैं।

अंत में मैं यही कहना चाहता हूं कि आज की व्यस्त जीवनशैली में भी हमें थोड़ा समय निकालकर इन कलाओं के लिए देना चाहिए। हमें संगीत सुनना चाहिए, शास्त्रीय नृत्य देखना चाहिए और अपने बच्चों को भी इनसे जोड़ना चाहिए। बच्चों को हमारी संस्कृति–जैसे शास्त्रीय नृत्य, संगीत, शिल्प कला और चित्रकला–सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए, ताकि हमारी यह अमूल्य विरासत आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित और जीवित रह सके।

हमारे देश में कई अच्छे संगठन भी हैं जो बच्चों को मंच देने, उन्हें समझाने और आगे लाने के लिए शास्त्रीय नृत्य और शास्त्रीय संगीत के कलाकारों को बुलाकर बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। आज की जो युवा पीढ़ी है, विशेषकर बच्चे, उनसे मैं यही कहना चाहता हूं कि भले ही स्कूल की पढ़ाई और होमवर्क बहुत अधिक हो, फिर भी थोड़ा सा समय निकालकर शास्त्रीय नृत्य और शास्त्रीय संगीत सीखना बहुत आवश्यक है। इससे बच्चों को केवल एक कला ही नहीं मिलती, बल्कि उनके भीतर हमारे संस्कार, हमारी संस्कृति और हमारी जड़ों की समझ विकसित होती है, जो उनके व्यक्तित्व के लिए बहुत जरूरी है।

हमारा देश कला और संस्कृति के मामले में अत्यंत समृद्ध है, और इसका थोड़ा सा भी ज्ञान बच्चों को एक मजबूत पहचान देता है। आगे चलकर जब बच्चे विदेश जाते हैं–चाहे वे आईएएस, आईपीएस या इंडियन फॉरेन सर्विस जैसे क्षेत्रों में जाएंकृतो उन्हें अपने देश की

संस्कृति, परंपरा और मूल्यों की जानकारी होना बहुत जरूरी है, ताकि वे गर्व से अपने देश का प्रतिनिधित्व कर सकें और दूसरों को बता सकें कि भारत की संस्कृति कितनी समृद्ध और व्यापक है।

आज के समय में यह भी देखा गया है कि बच्चे अपना बहुत अधिक समय मोबाइल और लैपटॉप पर बिताते हैं। यह सही है कि अब पढ़ाई का माध्यम भी बदल गया है और तकनीक का उपयोग बढ़ गया है, लेकिन हमें यह समझना होगा कि तकनीक का उपयोग केवल अच्छे कार्यों के लिए होना चाहिए। मोबाइल और लैपटॉप से हमें वही चीजें सीखनी चाहिए जो हमारे जीवन के लिए उपयोगी हों, बाकी अनावश्यक चीजों से दूरी बनाए रखनी चाहिए। पहले के समय में न तो मोबाइल थे और न ही लैपटॉप, फिर भी बच्चे पढ़ाई करते थे, अच्छे अंक लाते थे और जीवन में आगे बढ़ते थे। उस समय सीमित साधनों में भी अनुशासन और सीखने की इच्छा थी।

आज साधन अधिक हैं, इसलिए जिम्मेदारी भी अधिक है कि हम उनका सही उपयोग करें। मैंने अपने बचपन में वह समय भी देखा है जब ब्लैक एंड व्हाइट टीवी पहली बार आया था और लोग उसे देखकर बहुत खुश होते थे, जबकि आज अनगिनत चैनल और डिजिटल माध्यम उपलब्ध हैं। ऐसे में यह और भी जरूरी हो जाता है कि बच्चे अच्छे और उपयोगी कंटेंट को ही अपनाएं। अंततः हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारी भारतीय संस्कृति सदैव हमें संयम, सदाचार और विवेकपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

इस अवसर के लिए मैं आयोजनकर्ताओं का आभारी हूं जिन्होंने मुझे अपने विचार साझा करने का मौका दिया। मेरा जो थोड़ा सा ज्ञान और अनुभव है, उसी के आधार पर मैंने अपने विचार आपके सामने रखे। आप सभी का बहुत–बहुत धन्यवाद।

डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' स्मृति अ.भा. सद्भावना व्याख्यानमाला उज्जैन (म.प्र.) में विगत वर्षों में व्याख्यानमाला में पधारे विद्वान वक्ताओं की सूची

वर्ष 2003

क्र.	नाम वक्ता	स्थान
1.	श्री रघु ठाकुर	समाजवादी चिन्तक दिल्ली
2.	डॉ. सविता ईनामदार	अध्यक्ष, म. प्र. महिला आयोग, भोपाल
3.	श्री जयकृष्ण गौड़	प्रसिद्ध पत्रकार, कश्मीर
4.	डॉ. एस. एन. सुब्बाराव	गांधी विचारक एवं निदेशक रा.यु.यो. नई दिल्ली
5.	श्री रामगोपाल शर्मा	शिक्षाविद् प्राचार्य जैन शिक्षा महाविद्यालय, मंदसौर
6.	सुश्री डॉ. निर्मला देशपाण्डे	सर्वोदय चिंतक राज्य सभा सदस्य एवं अध्यक्ष रचनात्मक समा नई दिल्ली
7.	डॉ. सत्यनारायण जटिया	पूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार नई दिल्ली
8.	डॉ. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय	साहित्यकार, भोपाल
9.	प्रो. आर. बी. पुरोहित	इतिहासवेत्ता उदयपुर, राजस्थान
10.	प्रो. इम्तियाज अहमद	जे.एन.यू. दिल्ली
11.	श्री ध्रुव शुक्ल	जनसम्पर्क संचालनालय, भोपाल
12.	डॉ. महीपसिंह	प्रसिद्ध पत्रकार एवं लेखक दिल्ली
13.	डॉ. जेड. ए. निजामी	इतिहासविद् जामिया मिलिया विश्वविद्यालय दिल्ली
14.	न्यायमूर्ति श्री आर. डी. शुक्ला	अध्यक्ष, मानव अधिकार आयोग भोपाल
15.	श्री पी. वी. राजगोपाल	गांधी चिंतक, उपाध्यक्ष गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली
16.	प्रो. उर्मि शर्मा	हिन्दी साहित्य सेवी
17.	श्री गजानंद वर्मा	स्वतंत्रता संग्रमा सेनानी
18.	श्री विजयशंकर मेहता	वरिष्ठ पत्रकार
19.	श्री रामचन्द्र भार्गव	मंत्री, गांधी भवन ट्रस्ट भोपाल
20.	मौलाना हिफजुर्रहमान	धार्मिक नेता

वर्ष 2004

21.	डॉ. निर्मला देशपाण्डे	सांसद, गांधी विनोबा चिन्तक, नई दिल्ली
22.	श्री भरत छपरवाल	कुलपति देवी अहिल्या वि. वि., इंदौर
23.	श्री प्रभाष जोशी	वरिष्ठ पत्रकार समालोचक दिल्ली
24.	श्री अब्दुल भाई	अध्यक्ष अंतरभारती मदुरई, तमिलनाडु
25.	प्रो. व्ही. डी. मेहता	प्रसिद्ध अर्थशास्त्री, पूर्व डीन एवं विजिटिंग प्रो. बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल
26.	डॉ. शिवकुमार श्रीवास्तव	पूर्व कुलपति सागर वि.वि. म.प्र.
27.	प्रो. सदाशिव आर्य	महामंत्री अंतरभारती पुणे
28.	श्री संजय झा	डी.आई.जी, उज्जैन

29.	प्रो. रामजी सिंह	पूर्वकुलपति जैन विश्वभारती वि.वि. राजस्थान
30.	श्री आनंद मोहन माथुर	पूर्व महाधिवक्ता इंदौर
31.	श्री राकेश दीवान	पर्यावरणविद् इंदौर
32.	श्री सत्यपाल जी	महामंत्री दक्षिण एशिया बिरादरी नई दिल्ली
33.	डॉ. मोहन गुप्त	चिंतक लेखक, वेद विद्वान
		वर्ष 2005
34.	श्री महावीर प्रसाद	मंत्री ग्रामीण उद्योग भारत सरकार, नई दिल्ली
35.	श्री कैलाश नारायण सारंग	पूर्व सांसद एवं सम्पादक नवलोक भारत, भोपाल
36.	श्री जगदीश देवड़ा	गृह एवं शिक्षा राज्यमंत्री
37.	प्रो. रामराजेश मिश्र	कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
38.	सुश्री शोभना रानाडे	अध्यक्ष, गांधी राष्ट्रीय समिति पुणे
39.	डॉ. मधुपूर्णिमा कीश्वर	सम्पादिका मानुषी नई दिल्ली
40.	प्रो. अली जावेद	दिल्ली वि.वि., दिल्ली
41.	श्री तुषार गांधी	अध्यक्ष, गांधी फाउण्डेशन, मुंबई
42.	डॉ. उषा तिवारी	पूर्व प्राचार्य, गर्ल्स कॉलेज, इन्दौर
43.	प्रो. अख्तर–उल–वासे	जामिया मिलिया वि.वि., दिल्ली
44.	सुश्री शुभदा जहांगीरदार	समाज सेविका, मुम्बई
45.	श्री बालकवि बैरागी	कवि साहित्यकार एवं पूर्वसासंद, नीमच
46.	न्यायमूर्ति श्री नारायणसिंह आजाद	पूर्व अध्यक्ष, मानव अधिकार आयोग, भोपाल
47.	श्री रामचन्द्र राही	महामंत्री, केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि दिल्ली
48.	प्रो. पवनकुमार सिंह	निर्देशक, भारतीय प्रबंध संस्थान, इन्दौर
49.	श्री बालकृष्ण पासी	शिक्षाविद्, पूर्व प्राचार्य, शिक्षा महाविद्यालय, इन्दौर, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षा परिषद्
50.	श्री राजेन्द्रसिंह जी	जलक्रांति मेंगासेसे पुरस्कृत प्राप्त, जयपुर
		वर्ष 2006
51.	प्रो. ए. ए. अब्बासी	पूर्व कुलपति देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर
52.	मेजर जनरल डॉ. आर. एम. खरब	अध्यक्ष, भारतीय जीवतन्तु कल्याणबोर्ड, चेन्नई
53.	प्रो. अच्युतानन्द मिश्र	कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता वि.वि. भोपाल
54.	सुश्री मेघा पाटकर	प्रसिद्ध समाजसेवी नर्मदा आंदालेन की प्रणेता
55.	डॉ. सईदा हमीद	सदस्य, योजना आयोग भारत सरकार
56.	श्री सत्यनारायण साहू	निर्देशक प्रधानमंत्री कार्यालय, नई दिल्ली
57.	न्यायमूर्ति श्री डी. एम. धर्माधिकारी	अध्यक्ष, मानव अधिकार आयोग मध्यप्रदेश
58.	श्री मुरलीधर शाह	प्रख्यात समाज सेवक, धुले, महाराष्ट
59.	श्री सुन्दरलाल बहुगुणा	उत्तरांचल के गांधी, चिपको आंदोलन के प्रणेता

60.	श्री एल. व्ही. सप्तऋषि	पूर्व महानिदेशक कपार्ट, सह अध्यक्ष सी.एन.आर.आई., नई दिल्ली
		वर्ष 2007
61.	माननीय न्यायमूर्ति श्री विष्णु सदाशिव	महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश
62.	स्वामी अग्निवेश	पूर्व सांसद, अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं अध्यक्ष, बन्धुजा मजदूर मुक्ति मोर्चा, भारत
63.	डॉ. एस. एन. सुब्बराव	निदेशक, राष्ट्रीय युवा योजना, नई दिल्ली
64.	श्री चुन्नीभाई वैद्य	साबरमती आश्रम, अहमदाबाद (गुजरात)
65.	श्री सनत भाई मेहता	पूर्व वित्त मंत्री एवं चेरमेन, नर्मदा निगम (सरदार सरोवर परियोजना, गुजरात)
66.	श्री भूपालसिंह जी	कुलपति, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
67.	सुश्री आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा	प्राचार्या, पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी
68.	श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल	आयकर आयुक्त, उज्जैन
69.	श्री प्रभाकर भाई	मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट अहमदाबाद
70.	श्री श्रवणकुमार सिंह	प्राचार्य, पाटली पुत्र महाविद्यालय, पटना
71.	न्यायमूर्ति निसार अहमद	म.प्र. एवं छ.ग. के विद्य लोकपाल
72.	श्री हरिदेसाई	वरिष्ठ पत्रकार इण्डियन एक्सप्रेस/दैनिक संदेश अहमदाबाद
		वर्ष 2008
73.	प्रो. रजिया पटेल	प्रो. पटेल, इण्डियन इन्स्टीट्यूअ ऑफ एज्यूकेशन राजनीति विज्ञान की प्राध्यापक है। जनमुक्ति संघर्ष वाहिनी एवं रचना विकास ट्रस्ट के माध्यम से समाज परिवर्तन का कार्य कर रही है।
74.	प्रो. पी. के. वर्मा	शिक्षाविद
75.	प्रो. सिद्धार्थ भट्ट	श्री भट्ट वर्षों तक गुजरात विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान अहमदाबाद के प्राध्यापक रहे है। आप एक राष्ट्रीय विचारक, चिन्तक और साहित्यकार है।
76.	प्रो. नलीनी रेवाड़ीकर	प्राचार्य, माधवमहाविद्यालय, उज्जैन
77.	श्री रोमेश जोशी, इन्दौर	श्री जोशी, देश के वरिष्ठ पत्रकार है, आप साहित्य, व्यंग्य और कई प्रसिद्ध नाटकों के लेखक भी है।
78.	श्री बजरंग मुनि	श्री मुनि, नगर पालिका रामानुंज (छ.ग.) में अध्यक्ष रहे है था अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़) आपने जयप्रकाश नारायणजी के नेतृत्व में आंदोलन से सक्रिय भाग लिया। आप इस दौरान 19 माह तक जेल में रहे है। श्री मुनि, वर्तमान

		व्यवस्था के घोर विरोधी है।
79.	प्रो. एस.के. बिल्लोरे	उज्जैन
80.	प्रो. रामगोपाल	आप निदेशक, एम.आई.टी. मंदसौर है। पूर्व में आपने भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत रक्षा अनुसंधान विकास संगठन में निदेशक पद को सुशोभित किया है, आप पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के रक्षा प्रयोगशाला में सहयोगी रहे है।
81.	प्रो. सुभाषचन्द्रजी, नई दिल्ली	श्री सुभाषजी, इन्टर कल्चरल ओपन विश्वविद्यालय नीदरलेण्ड के एसोसिएट प्रोफेसर है तथा वर्ल्ड पीस एण्ड कल्चरल सेन्टर डज्जैन के अध्यक्ष है आपने अनेक देशों की यात्राएँ की है तथा विश्व शांति के लिये निरंतर कार्यरत है।
82.	प्रो. रवीन्द्र कुमार	प्रो. रवीन्द्र कुमार वर्तमान में सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला नई दिल्ली इग्नु, नई दिल्ली में इतिहास विभाग में प्राध्यापक है, आप महात्मा गांधीजी की विचारधारा से प्रभावित है।
		<u>वर्ष 2009</u>
83.	श्री गोविन्दाचार्यजी	प्रखर वक्ता एवं राष्ट्रीय चिंतक, नई दिल्ली
84.	श्री मुकुल कानिटकर	सचिव, अंतर्राष्ट्रीय विवेकानंद केन्द्र नई दिल्ली
85.	माननीय श्री पारस जैन	मंत्री, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति
86.	डॉ. सुरेश खेरनार (मुम्बई)	प्रसिद्ध सर्वोदयी चिन्तक
87.	श्री अब्दुल गफूर पारेख (नागपुर)	प्रसिद्ध उद्योगपति एवं प्रसिद्ध समाजसेवी
88.	श्रीमती शाहिना खतीब (नागपुर)	प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं प्रख्यात चिन्तक
89.	श्रीमती इशरत अली	मुख्यकाजी, इन्दौर
90.	पारस सकलेचा (दादा)	विधायक, रतलाम एवं संस्थापक युवाम
91.	श्री प्रीतपालसिंह (पुन्नू)	प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, करनाल हरियाणा
92.	श्री सुरेश आर. रामबरण	मोरिशस
93.	श्री धनप्रकाश गुप्त (नई दिल्ली)	सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली के वरिष्ठ अधिवक्ता एवं प्रसिद्ध साहित्यकार
94.	विशेष सानिध्य स्वामी सत्यस्वरूपानंदजी सरस्वती	—
95.	श्री शिवपाल सिंह अहलावत	कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
		<u>वर्ष 2010</u>
96.	संत श्री भय्यू महाराज	राष्ट्रीय संत, इंदौर
97.	सुश्री वैदेही पाण्डा	गांधीवादी, चिंतक
98.	जस्टिस श्री रमेशचन्द्र लाहोटी	पूर्व मुख्य न्यायाधीपति सर्वोच्च न्यायालय, भारत

99.	श्री किशोर भाई	संचालक, नवजीवन योग केन्द्र
100.	स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य	संस्थापक, हिन्दु–मुस्लिम एकता समिति, लखनऊ
101.	श्री अब्दुल रशीद शाहीन	पूर्व सांसद, बारामुला, कश्मीर
102.	श्री अब्दुल गयूर कुरैशी	पूर्व सांसद, न्यायमूर्ति
103.	डॉ. आर्यभूषण भारद्वाज	अध्यक्ष, गांधी इन एक्शन (दिल्ली)
104.	श्री पी.वी. राजगोपाल	अध्यक्ष, एकता परिषद दिल्ली
105.	श्री राजेश बादल	कार्यकारी निर्देशक टी.वी. चैनल राज्यसभा
106.	श्री सुनील गुप्ता	उपाध्यक्ष, समाजवादी जनपरिषद, होशंगाबाद
107.	प्रो. श्री सुदर्शन आयंगर	कुलपति गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
108.	प्रो. श्री धनंजय वर्मा	पूर्व कुलपति डॉ. हरिसिंह गौड़ वि.वि., सागर
		वर्ष 2011
109.	श्री शेख हुसैन	राष्ट्रीय मंत्री, अखिल भारतीय सर्वसेवा संघ
110.	सुश्री इन्दुमति काटदरे	पुर्नत्थान ट्रस्ट, अहमदाबाद
111.	उपेन्द्र जैन	आई.पी.एस. महानिरीक्षक पुलिस, उज्जैन संभाग
112.	श्रीमती फिरदोस पटेल	सामाजिक कार्यकर्ता, इंदौर
113	राष्ट्रीय संत श्री अवधेशदासजी महाराज	राष्ट्रीय संत
114.	माननीय श्री अनुराग बेहार	कुलपति, अजीज प्रेमजी विश्वविद्यालय, बैंगलोर
115.	प्रो. विजय चौपड़ा	पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
116.	श्री प्रकाशसिंह जी	पूर्व महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल नई दिल्ली
117.	डॉ. लियो रिबेलो	निदेशक, प्राकृतिक स्वास्थ्य केन्द्र, मुंबई
118.	श्री अनिल अग्रवाल	सदस्य, प्रेस कौन्सिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
119.	न्यायमूर्ति माननीय श्री एन.के. मोदी	न्यायाधीश, म.प्र. उच्च न्यायालय बैंच, इंदौर
120.	माननीय श्रीमती अर्चना चिटनीस	मंत्री, स्कूल शिक्षा म.प्र. शासन, भोपाल
121	माननीय श्री अरूण पाण्डेय	आई.ए.एस. आयुक्त, राजस्व, उज्जैन संभाग
		वर्ष 2012
122.	डॉ. शशि शर्मा	प्रसिद्ध समाज सेविका, मुम्बई
123.	श्री मोहन यादव	अध्यक्ष, म.प्र. पर्यटन विकास निगम
124.	श्री बाबूलाल जैन	उपाध्यक्ष, राज्य योजना आयोग
125.	डॉ. काजी एस. रहमान	अध्यक्ष, ऑल इंडिया दारूल कज़ा (म.प्र.)
126.	जनाब शादाब अहमद सिद्दिकी	प्रसिद्ध समाजसेवी, नरसिंहपुर
127.	श्री गौतम कोठारी	वरिष्ठ चार्टेड अकाउन्टेंट, इन्दौर
128.	श्री असीम सरोदे	प्रसिद्ध समाजसेवी एवम् एडव्होकेट, पूना
129.	श्री भगवान सहाय सैनी	विधायक, राजस्थान चौमुर क्षेत्र
130.	श्री अरूण पाण्डेय	आयुक्त– राजस्व संभाग उज्जैन

131.	प्रो. हरेन्द्र श्रीवास्तव	सेवानिवृत्त प्राध्यापक, गुड़गांव (हरियाणा)
132.	श्री प्रेमनारायणजी नागर	वरिष्ठ पत्रकार
133.	डॉ. रामप्रकाशजी शर्मा	प्रसिद्ध साहित्यकार एवम् सदस्य मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
134.	प्रो. साधु शरण सिंह सुमन	अहिंसा प्रशिक्षक केन्द्र बाढ़, पटना (बिहार)
135.	न्यायमूर्ति श्री दीपक वर्मा	पूर्व न्यायाधीश सर्वोच्च न्यायालय भारत नई दिल्ली
		वर्ष 2013
136.	श्री रघु ठाकुर	प्रख्यात समाजवादी चिंतक एवं विचारक, नई दिल्ली
137.	आर.सी. वर्मा	कार्यवाहक कुलपति, विक्रमविश्वविद्यालय, उज्जैन
138.	आचार्य पंकजजी	लेखक, कवि एवं साहित्यकार, देहरादून (उत्तराखंड)
139.	श्री रूपकिशोर शास्त्री	सचिव श्री सांदीपनी वैद्य विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन
140.	श्री प्रकाश शाह	सम्पादक, ''निरीक्षक विचार पत्र'', अहमदाबाद (गुजरात)
141.	श्री जयदीप कर्णिक	सम्पादक, वेब दुनिया, इंदौर
142.	श्री प्रेमनारायण नागरजी	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, शिवपुरी (म.प्र.)
143.	श्री मुजफ्फर हुसैन	वरिष्ठ पत्रकार एवं चिंतक, मुंबई
144.	न्यायमूर्ति श्री विष्णुसदाशिव कोकजे	(पूर्व राज्यपाल), हिमाचल प्रदेश
145.	डॉ. अंजेश कुमार	संस्थापक सचिव, संभावना (द होप) चैरिटेबल ट्रस्ट बाढ़, पटना (बिहार)
146.	डॉ. हरीश व्यास	सहायक प्राध्यापकः शा कालिदास कन्या महाविद्यालय, उज्जैन
147.	श्रीमती शाहिस्ता अम्बर	अध्यक्ष ऑल इंडिया मुस्लिम वुमन्स पर्सनल लॉ बोर्ड, लखनऊ (उ.प्र.)
148.	सुश्री राधाबहन भट्ट	अध्यक्ष, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
		वर्ष 2014
149.	श्री चुन्नीभाई वैद्य	प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक, गांधीआश्रम, अहमदाबाद, गुजरात
150.	मनीषा गौर	अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता, इन्दौर
151.	श्री कुमार प्रशांत	प्रसिद्धवादी गांधीवादी चिंतक, मुम्बई
152.	मौलाना वारसी साहब	मताना, उज्जैन
153.	श्रीमती रूमाना सिद्दीकी	अध्यक्ष, भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा, लखनऊ
154.	श्री असद सिद्दीकी	लखनऊ
155.	श्री रमेश ओझा	सामाजिक कार्यकर्ता एवं साहित्यकार, मुंबई
156.	श्री शाहिद सिद्दीकी	प्रधान संपादक, नईदुनिया (उर्दू) नई दिल्ली
157.	श्री शाबाद अहमद सिद्दीकी	नरसिंहपुर
158.	श्री सुरेश द्वादशीवार	प्रधान संपादक, लोकमत, नागपुर

159. डॉ. कल्पना पारूलेकर — पूर्व विधायक
160. श्री अनिलकुमार शास्त्री — अध्यक्ष, लाल बहादुर शास्त्री इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली
161. प्रो. जवाहर कौल — कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

वर्ष 2015

162. राष्ट्र संत श्री कमलमुनि 'कमलेश' — संत मुनि जी महाराज 'कमलेश', नई दिल्ली
163. डॉ. कमल ठकार — गांधीवादी, लातूर (महाराष्ट्र)
164. श्री सुनील शास्त्री — सुपुत्र स्व.श्री लालबहादुर शास्त्री, पूर्व प्रधानमंत्री, गुड़गांव (हरियाणा)
165. प्रो. सरोज कुमार — समाजसेवी, इन्दौर
166. डॉ. सी. जयशंकर बाबू — सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी
167. डॉ. जे.पी. गुप्ता — जिला एवं सत्र न्यायाधीश
168. श्री हेमंतकुमार जी — समाजसेवी, पटना (बिहार)
169. श्री हीरालाल श्रीमाली — उदयपुर (राजस्थान)
170. श्री श्याम कृष्ण पाण्डेय — इलाहाबाद (यूपी)
171. डॉ. शीलसन्धु पाण्डेय — कुलपति, कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
172. श्री अमीन पठान — अध्यक्ष राजस्थान क्रिकेट बोर्ड, जयपुर (राजस्थान)
173. पं. अवधेन्दु शर्मा — मुजफ्फर नगर, यूपी
174. श्री चौधरी मुन्नवर सलीम साहब — राज्यसभा सदस्य, नई दिल्ली

वर्ष 2016

175. डॉ. जवाहर कर्नावट — मुम्बई (महाराष्ट्र)
176. श्री कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ — संस्था अध्यक्ष, भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन
177. श्री युगराज जैन — संपादक, युगप्रवाह, मुम्बई
178. श्री रामयतन यादव — मकसुदपुर (बिहार)
179. सुश्री मणिमाला — पटपडगंज, दिल्ली
180. डॉ. सुगन वरण्ड — मुम्बई
181. श्री आनन्द मोहन माथुर — पूर्व महादिवक्ता, मध्यप्रदेश, इन्दौर
182. श्री पुष्पेन्द्र दुबे — समाजसेवी
183. श्री अशोक मोती — कार्यकारी संपादक सर्वोदय जगत (वाराणसी)
184. श्री बजरंग लाल अग्रवाल — रामानुगंज (छत्तीसगढ़)
185. श्री उमेश श्रीवास्तव — अहमदाबाद (गुजरात)
186. श्री प्रेमनारायण नागर — स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
187. पं.पू. गणिवर्य श्री रत्न कीर्ति विजय जी म.सा. — (गुजरात)
188. न्यायमूर्ति श्री वी.डी. ज्ञानी — अहमदाबाद (गुजरात)

वर्ष 2017

189. आचार्य हर्ष सागर म.सा. — गुजरात

190.	डॉ. मोहन गुप्त	पूर्व संभागीय कमिश्नर, उज्जैन
191.	डॉ.श्वेता जैन	डॉक्टरल फेलो, यूजीसी, नई दिल्ली
192.	श्री गोपाल पोरवाल	आई.टी. कमिश्नर, इन्दौर
193.	डॉ. सोहनराज तातेड़	प्रो. वर्ल्ड विश्वविद्यालय, यूएसए
194.	डॉ. क्षमा कौल	साहित्यकार, कश्मीर
195.	श्री दिवाकर नातू	अध्यक्ष सिंहस्थ प्राधिकरण, उज्जैन
196.	श्री शमशेर खान पठान	सेवानिवृत्त कमिश्नर, मुम्बई
197.	प्रो. विरूपाक्ष व्ही. जड्डीपाल	प्रोफेसर, महर्षि पाणिनि संस्कृत वि.वि.उज्जैन
198.	डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा	वरिष्ठ व्यग्ंयकार, उज्जैन
199.	श्री आनन्द मोहन माथुर	पूर्व महाधिवक्ता, म.प्र., इन्दौर
200.	सुश्री मीनाक्षी नटराजन	पूर्व सांसद, दिल्ली
201.	डॉ. विद्युत्प्रभा बहिन म.सा.	साध्वीजी, जोधपुर
202.	श्री के.पी.डोगरा	समाजसेवी, दिल्ली
		<u>वर्ष 2018</u>
203.	डॉ. एस.एन. सुब्बराव	वरिष्ठ गांधीवादी विचारक, नई दिल्ली
204.	श्री आनन्द मोहन माथुर	महाधिवक्ता मध्यप्रदेश, इन्दौर
205.	श्री के.पी. डोगरा	प्रबंध न्यासी, साई फाउण्डेशन इंडिया, नई दिल्ली
206.	श्री प्रेमनारायण नागर	वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, शिवपुरी
207.	ब्रिगेडियर पी.डी. तिवारी,	सेवानिवृत, भारतीय सेवा, नई दिल्ली
208.	डॉ. पूजा व्यास	निदेशक, आईसीपीआर, लखनऊ
209.	श्री सुनील कुमार पाण्डेय	प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
210.	श्री आर.के.पालीवाल	आई.टी. कमिश्नर, म.प्र. एवं छ.ग., भोपाल
211.	डॉ. राकेश कुमार गुप्ता	प्रोफेसर, पूर्णिमा यूनिवर्सिटी, जयपुर
212.	श्री मुकुन्द कुलकर्णी	वरिष्ठ समाजसेवी, इन्दौर
213.	डॉ. शैलेन्द्र पाराशर	शिक्षाविद्
214.	श्री राजेश बादल	वरिष्ठ पत्रकार, भोपाल
215.	श्री जगदीश उपासने	कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल
216.	आचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन म.सा.	जैन संत एवं समाज सुधारक थान्दला, मध्यप्रदेश
217.	श्री बजरंगलाल अग्रवाल संपादक,	ज्ञानतत्व पत्रिका, रामानुगंज, छत्तीसगढ़
218.	मुनिराज श्री विद्वद्रत्न जी म.सा.	संत एवं समाज सुधारक
		<u>वर्ष 2019</u>
219	श्रीमती शताब्दी पाण्डे	निदेशक,राष्ट्रीय महिला प्रमुख सहकार भारती, रायपुर
220	श्री शशिमोहन श्रीवास्तव	पूर्व अध्यक्ष, जिला सतर्कता समिति, लोकायुक्त, उज्जैन
221	श्री पं. फारूक रामायणी,	सर्वधर्म वक्ता, नरसिंहगढ़

222	श्री चिन्मय मिश्रा	प्रसिद्ध पत्रकार एवं चिंतक, इंदौर
223	हाजी श्री अरशान खान	सदस्य, राष्ट्रीय कार्यकारिणी अल्पसंख्यक विभाग, नई दिल्ली
224	श्री अख्तर खान अकेला	वरिष्ठ अधिवक्ता एवं पूर्व संपादक दैनिक जननायक, कोटा
225	श्री प्रकाश आर. अर्जुनवार	गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता, महाराष्ट्र
226	डॉ. शैलेन्द्र भारल	प्राध्यापक, कालिदास महाविद्यालय, उज्जैन
227	डॉ. सीताराम दुबे	प्राध्यापक, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी
228	डॉ. रमेश बाबू	प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
229	श्री जनक मेहता	प्रखर वक्ता एवं प्रसिद्ध साहित्यकार, इन्दौर
230	श्री अतुल देउलगांवकर	वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार, लातूर
231	न्यायमूर्ति श्री जे.पी. गुप्ता	न्यायमूर्ति मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय, जबलपुर
232	डॉ. बालकृष्ण शर्मा	कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
		वर्ष 2020
233	श्री अमर हबीब	समाजसेवी
234	श्री सदा विजय आर्य	समाजसेवी
235	श्री सत्य प्रकाश भारत	सदस्य भारत जोडो अभियान दिल्ली
236	डॉ. शिव चौरसिया	वरिष्ठ साहित्यकार
237	श्री सत्य रंजन धर्माधिकारी	निवृत्त न्यायमूर्ति, मुम्बई उच्च न्यायालय
238	डॉ. महेश शर्मा	प्राचार्य शासकीय कालीदास कन्या महाविद्यालय उज्जैन
239	डॉ. विश्वास पाटील	शिक्षाविद्, नंदुरबार, महाराष्ट्र
240	डॉ. शैलेन्द्र शर्मा	कुलानुशासक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
241	डॉ. सी. जयशंकर बाबू	अध्यक्ष हिन्दी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुडूचेरी
242	डॉ. बी. के. शर्मा	पूर्व संयुक्त संचालक शिक्षा, उज्जैन
243	डॉ. पल्लवी पाटील	शिक्षाविद् लातुर महाराष्ट्र
244	डॉ. पुष्पा चौरसिया	वरिष्ठ साहित्यकार
245	कुमार शुभमूर्ति	अध्यक्ष, भूदान यज्ञ समिति, महाराष्ट्र
246	डॉ. अखिलेश कुमार पांडेय	कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
		वर्ष 2021
247	श्रीमती सूरज डामोर	पूर्व IAS एवं कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट की राष्ट्रीय सचिव
248	प्रो. अखिलेश कुमार पांडेय	कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
249	श्रीमती संगीता देशमुख	शिक्षाविद् वसमत महाराष्ट्र
250	श्रीमती अलका भार्गव	अपर संचालक शासकीय परीक्षा प्रशिक्षण संस्थान, इंदौर
251	प्रीतेश भाई शुक्ला	संस्कृतविद् एसोसिएट प्रोफेसर आयुर्वेदिक अध्ययन एवं

		शोध केन्द्र आणंद (गुज)
252	डॉ. बालकृष्ण शर्मा	संस्कृतविद्, पूर्व कुलपति विक्रम वि.वि.,उज्जैन
253	सुभाष शास्त्री	शिक्षाविद् एवं साहित्यकार, सोलापुर (महा.)
254	डॉ. प्रशांत पौराणिक	कुलसचिव, विक्रम वि.वि.,उज्जैन
255	कंवलजीत सिंह ढिंडसा	समाजसेवी एवं पर्यावरणविद् लेहरागागा (पंजाब)
256	सतीश दवे	वरिष्ठ रंगकर्मी
257	पं. आंदशंकर व्यास	ख्यात ज्योतिषाचार्य, उज्जैन
258	श्री राममोहन राय	जनरल सेक्रेटरी गांधी गलोबल फेमेली
259	श्री प्रेमनारायण नागर	वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
260	लक्ष्मीकांत देशमुख	निवृत्त आई.ए.एस. तथा ख्यात मराठी लेखक (पूणे, महाराष्ट्र)
261	अनिल फिरोजिया	सांसद, उज्जैन–आलोट संसदीय क्षेत्र
		<u>वर्ष 2022</u>
262	श्री रणसिंह परमार	सचिव महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा
263	श्री यतिन्द्रसिंह सिसोदिया	निदेशक : सामाजिक शोध संस्थान, उज्जैन
264	श्री विष्णु नागर	पूर्व संपादक : कादंबनी, नवभारत टाईम्स
265	श्री बी.के. शर्मा	वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं साहित्यकार, पूर्व संयुक्त संचालक शिक्षा, उज्जैन
266	श्रीमती अपर्णा शुक्ल	वेद मर्मज्ञ एवं समाज सेविका, मुंबई
267	आचार्य देवकरण शर्मा	वेद मर्मज्ञ एवं शिक्षाविद्
268	श्री नीरज शर्मा	संस्कृतविद, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, मोहनलाल सुखाडिया वि.वि. उदयपुर
269	प्रो. विरूपाक्ष जड्डीपाल	सचिव, महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद–विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन
270	श्री सचिन दुर्गाडे	उपाध्यक्ष : आंतर–भारती, पुणे
271	क्रांतिकारी संत डॉ. अवधेशपुरी महाराज	महंत महानिर्वाणी अखाड़ा, उज्जैन
272	प्रो. प्रेम आनंद मिश्रा	अध्यक्ष : गांधी अध्ययन केन्द्र, गुजरात विद्यापीठ (अहमदाबाद)
273	डॉ. मोहन गुप्त	पूर्व कुलपति महर्षि पानीणी संस्कृत वि.वि. उज्जैन
274	डॉ. कृष्णकांत चतुर्वेदी	पूर्व निदेशक, कालिदास एकेदमी, उज्जैन
275	डॉ. अशोक भार्गव	आई.ए.एस. प्रशासनीक सदस्य एवं सचिव (शि.लि.प्रा.) नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण मध्यप्रदेश, भोपाल
		<u>वर्ष–2023</u>
276	डॉ विकास दवे	निदेशक मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी भोपाल
277	डॉ अखिलेश कुमार पांडेय	कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय,उज्जैन

278 माननीय श्री अमृत महाजन	वरिष्ठ नाट्यकर्मी समाजसेवी महाराष्ट्र
279 श्री प्रतिक सोनवलकर जी	संयुक्त आयुक्त म.प्र. प्रख्यात साहित्यकार
280 श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय	प्रख्यात कलाविद और इतिहास विद इन्दौर
281 माननीय .प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा	कुलानुशासक, विक्रम विश्वविद्यालय,उज्जैन
282 डॉ. जगदीश्वर चतुर्वेदी	वरिष्ठ शिक्षाविद् सेवानिवृत, प्राध्यापक हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता
283 श्री आनंद शर्मा	जिला शिक्षा अधिकारी, उज्जैन
284 माननीय श्री जी.डी. पारीख	पुर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश, मुंबई
285 श्री शशि मोहन श्रीवास्तव	पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधिश
286 ब्रह्मकुमारी पूनम बहन	प्रभारी प्रजापति ब्रह्ममकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, नागदा क्षेत्र
287 डॉ. प्रणव भारती	प्रसिद्वकहानीकार एवं उपन्यासकार, अहमदाबाद
288 श्री पांडूरंग नाडकर्णी	राष्ट्रीय अध्यक्ष आंतर भारती, गोवा
289 प्रोफेसर विजय कुमार सीजी	कुलपति महर्षि पाणिनी संस्कृत एवं वेदिक विश्वविद्यालय,उज्जैन

वर्ष–2024

290 प्रोफेसर चेतन सिंह सोलंकी	भारत के सोलर मैन एवं आईआईटी मुंबई के प्राध्यापक
300 माननीय डॉ. अर्पण भारद्धाज	कुलगुरु, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
301 प्रोफेसर सत्यकाम जोशी	निदेशक, सामाजिक अध्ययन केंद्र, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत
302 माननीय डॉ. सदानंद त्रिपाठी	संस्कृतविद,आचार्य,संस्कृत महाविद्यालय,उज्जैन
303 पद्मश्री उमाशंकर पांडेय	जल योद्धा के रूप में प्रसिद्ध पर्यावरणविद्
304 माननीय डॉ. हरिश व्यास	माधव विज्ञान महाविद्यालय, उज्जैन
305 माननीया श्रीमती अंजली कुलकर्णी	अध्यक्ष, आंतरभारती, पुणे
306 माननीया डॉ. नीता तपन चौरे	वरिष्ठ शिक्षाविदउज्जैन
307 माननीय श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी	पूर्व उप महानिदेशक, आकाशवाणी एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार
308 माननीय डॉ. बालकृष्ण शर्मा	पूर्व कुलगुरु,विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
309 माननीय न्यायमूर्ति श्री टी. पी. शर्मा	पूर्व प्रमुख लोकायुक्त, छत्तीसगढ़
310 माननीय न्यायमूर्ति आलोक वर्मा	पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय
311 माननीयरू डॉ. सच्चिदानंद जोशी	कार्यकारी एवं अकादमिक प्रमुख, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली
312 माननीय श्री शरद शर्मा,	वरिष्ठ रंगकर्मी, उज्जैन

भारतीय ज्ञानपीठ
श्रीपाल एज्यूकेशन सोसायटी
श्रीकृष्ण लोक परमार्थ समिति, उज्जैन

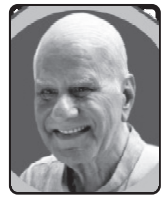

स्व. कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ (एडव्होकेट)

संस्थान के पितृपुरुष

कर्मयोगी, समर्पित समाजसेवी, मूल्य पर आधारित शिक्षा के सच्चे संवाहक

वर्ष 1964 से मध्यप्रदेश के प्रतिष्ठित शिक्षा क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराने वाले भारतीय ज्ञानपीठ एवं श्रीपाल एजुकेशन सोसायटी ने न केवल उज्जैन शहर, बल्कि समूचे प्रदेश में शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। यह संस्था निरंतर राष्ट्र को योग्य, संस्कारवान एवं कर्तव्यपरायण विद्यार्थी प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध रही है। इस प्रेरणादायी यात्रा की नींव रखने वाले महान व्यक्तित्व, गांधीवादी चिंतन से प्रेरित तथा कर्मयोग के प्रतीक स्व. श्री कृष्णमंगल सिंह कुलश्रेष्ठ (एडवोकेट) ने अपना संपूर्ण जीवन समाजहित, शिक्षा प्रसार और राष्ट्र की प्रगति के लिए समर्पित किया।

स्व. श्री कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व थे, जिन्होंने शिक्षा को मात्र ज्ञान प्रदान करने का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और राष्ट्र सेवा का प्रभावी माध्यम माना। वे देशभर में एक प्रतिष्ठित गांधीवादी और सर्वोदय विचारधारा के निष्ठावान अनुयायी के रूप में सम्मानित थे। आजीवन खादी धारण करने वाले इस महान विभूति ने विनोबा भावे, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, सुश्री निर्मला देशपांडे, सर्वोदय नेता सुब्बाराव और कर्मयोगी बाबा आमटे जैसे समाज सुधारकों के साथ अनेक सामाजिक परिवर्तन अभियानों में सक्रिय भागीदारी निभाई।

शिक्षा के क्षेत्र में उनके प्रयासों का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों का समावेश करते हुए उन्हें राष्ट्र सेवा के लिए तैयार करना था। यह संस्था आज भी उनके इन्हीं आदर्शों और संकल्पों को पूर्ण निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रही है।

संस्थान की स्थापना जिन पवित्र उद्देश्यों को ध्यान में रखकर हुई थी, वे आज भी यहाँ के समर्पित, विद्वान और अनुभवी शिक्षकों एवं प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में मूर्त रूप ले रहे हैं। यह संस्था पूरी तरह से आत्मनिर्भर रहते हुए, बिना किसी शासकीय या अशासकीय सहायता के, शिक्षा की गुणवत्ता को प्राथमिकता देती है। यहां पारंपरिक विषयों के साथ–साथ कंप्यूटर साइंस, फैशन टेक्नोलॉजी, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, मास कम्युनिकेशन जैसे आधुनिक पाठ्यक्रम भी संचालित किए जा रहे हैं। संभवतः यह प्रदेश की एकमात्र ऐसी संस्था है, जहाँ नर्सरी से लेकर पीएचडी तक की शिक्षा का सहज वातावरण उपलब्ध है, जिससे अभिभावक अपने बच्चों के सम्पूर्ण शैक्षणिक भविष्य को लेकर निश्चिंत हो जाते हैं। यही नहीं, इस संस्था से शिक्षा प्राप्त कर कई छात्राएँ अपने सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसर होते हुए, यहीं आयोजित कैंपस प्लेसमेंट में चयनित हो रही हैं। यह संस्था केवल शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि एक मिशन है।

संस्थान के परिसर में संचालित उज्जैन के पहले सामुदायिक रेडियो स्टेशन 'रेडियो दस्तक 90.8 FM' ने अल्प समय में ही नगरवासियों के बीच अपनी विशेष पहचान बना ली है। आज यह न केवल सूचनाओं और ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का माध्यम है, बल्कि सामाजिक सरोकारों से जुड़कर उज्जैन और मालवा अंचल के जनमानस के हृदय में अपनी स्थायी जगह बना चुका है।

संस्थान का परिचय –

राष्ट्र निर्माण और सामाजिक सेवा को आधार बनाकर, संस्कार आधारित शिक्षा के उच्च मानकों को लक्ष्य बनाते हुए, श्रीपाल एजुकेशन सोसायटी एवं भारतीय ज्ञानपीठ की स्थापना सन 1964 में पितृपुरुष स्वर्गीय श्री कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेठ द्वारा की गई। पूज्य विनोबा भावे जी की प्रेरणा से भारतीय ज्ञानपीठ ने देशभर में शिक्षा जगत में एक विशिष्ट पहचान बनाई। ख्यातिनाम शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, विचारकों, न्यायविदों, अर्थशास्त्रियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के सतत मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से यह संस्थान निरंतर प्रगति कर रहा है। इसकी श्रेष्ठता इसी से प्रमाणित होती है कि यहाँ से शिक्षित अनेक विद्यार्थी देश–विदेश में उच्च पदों पर कार्यरत हैं और भारत का नाम रोशन कर रहे हैं। प्राचीन और आधुनिक शिक्षा का समन्वय करते हुए, विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, संस्था ने माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर तक अपने शैक्षणिक विस्तार को स्थापित किया। संस्थान प्रबंधन ने अनुभव किया कि उज्जैन में कंप्यूटर विज्ञान के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए छात्राओं को उपयुक्त शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध नहीं है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए, संस्था ने भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज की स्थापना की, जिसने उज्जैन में पहली बार बीसीए पाठ्यक्रम की शुरुआत कर छात्राओं को एक नई दिशा प्रदान की। इसके बाद, कई व्यावसायिक एवं रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों की शुरुआत की गई।

छात्राओं की उच्च शिक्षा के लिए वर्ष 1996 में ''भारतीय महाविद्यालय'' की स्थापना की गई, जिसने उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रखा। महाविद्यालय की अनुभवी फैकल्टी और उच्च स्तरीय सुविधाओं के कारण, आज यह छात्राओं की पहली पसंद बन चुका है।

संस्था द्वारा संचालित ''राष्ट्रभारती शिक्षा महाविद्यालय'' उज्जैन संभाग का एकमात्र महाविद्यालय है जो विशेष रूप से छात्राओं के लिए बी.एड. पाठ्यक्रम उपलब्ध करवा रहा है। यह

महाविद्यालय अपने नवीन भवन में चिन्तामण मार्ग पर संचालित हो रहा है। इसके अलावा, राष्ट्रभारती उच्च माध्यमिक विद्यालय ने कृषि आधारित पाठ्यक्रमों के सफल संचालन के माध्यम से चिंतामण क्षेत्र के ग्रामीण छात्रों और पालकों को एक महत्वपूर्ण शैक्षिक अवसर प्रदान किया है।

संस्था ने फैशन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी कदम उठाते हुए ''भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी'' की स्थापना की, जहाँ छात्राएँ फैशन और इंटीरियर डिजाइन के एडवांस्ड पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेकर अपने करियर को नई दिशा दे रही हैं। इसके अलावा, संस्था द्वारा संचालित ''भारती बुटीक'' अल्प समय में ही शहर में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी है।

संस्थान स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर विविध रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों का संचालन कर रहा है। विद्यार्थियों की प्रतिभा को पहचानते हुए, कई नेशनल एवं मल्टीनेशनल कंपनियों के कैंपस प्लेसमेंट कार्यक्रम यहाँ आयोजित किए जाते हैं।

उज्जैन के लिए गर्व की बात है कि शहर के पहले सामुदायिक रेडियो स्टेशन 'रेडियो दस्तक 90.8 एफएम' की स्थापना भी संस्था परिसर में हुई। यह रेडियो स्टेशन उज्जैन शहर के संचार क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक है।

संस्था अपने मूल्यों और सिद्धांतों के साथ शिक्षा और सामाजिक कल्याण की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

प्रबंध एवं संचालन :–

समाजसेवी, कर्मयोगी स्व. श्री कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ (एडव्होकेट) के कुशल प्रबंधन में संस्थान ने निरन्तर प्रगति के जो कीर्तिमान स्थापित किये है, उन्ही कीर्तिमानों और उपलब्धियों को संस्थान परिवार श्रद्वेय स्व. कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्वहै। संस्थान द्वारा संचालित सामाजिक निर्माण के लिए प्रतिबद्ध संस्थाओं का समूह –

भारतीय कॉलेज – संपूर्ण देश में छात्राओं के लिए संस्कार आधारित क्वालिटी एजुकेशन देने के लिए प्रतिबद्ध कॉलेज।

भारतीय इंस्टीट्यूट आफ प्रोफेशनल स्टडीज – वर्तमान दौर के प्रोफेशनल कोर्सेज संचालित करने वाला संस्थान।

भारतीय इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी– फैशन टेक्नोलॉजी के जॉब ओरिएंटेड डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स संचालित करने वाला संस्थान।

भारतीय स्कूल– इंग्लिश मीडियम का क्वालिटी एजुकेशन देने के लिए प्रतिबद्ध स्कूल ।

राष्ट्र भारती शिक्षा महाविद्यालय (चिंतामण मार्ग, उज्जैन) – उज्जैन संभाग में सिर्फ छात्राओं के लिए B.Ed. पाठ्यक्रम संचालित करने वाला एकमात्र – महाविद्यालय।

राष्ट्र भारती हायर सेकेंडरी स्कूल (चिंतामण मार्ग, उज्जैन) – चिंतामण क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा के साथ एग्रिकल्चर सहित विभिन्न प्रोफेशनल कोर्स संचालित करने वाला स्कूल ।

भारतीय ज्ञानपीठ महानंदा नगर, उज्जैन– इंग्लिश मीडियम का क्वालिटी एजुकेशन देने के लिए प्रतिबद्ध स्कूल ।

लिटिल जेम्स प्ले स्कूल – आपके नन्हें मुन्नों के लिये सर्वश्रेष्ठ प्ले स्कूल

रेडियो दस्तक 90.8 **FM** – मालवा की प्रतिभाओं को नई आवाज देने वाला उज्जैन का पहला कम्युनिटी रेडियो।

उद्देश्य :–

1. छात्राओं को सद्भावना एवं संस्कार आधारित शिक्षा के साथ शैक्षणिक विकास करना।
2. सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं खेलकूद संबंधी प्रतिभा को विकसित करना।
3. रोजगार मूलक पाठ्यक्रम के शिक्षण द्वारा छात्राओं को आत्मनिर्भरता की और प्रेरित करना।
4. मानवीय मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम से एक आदर्श नागरिक बनाना। जिससे उनमें परिवार समाज व राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का उदय हो।
5. विद्यार्थियों को विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं एवं परीक्षाओं के लिए तैयार करना।

संस्थाओं से सम्बद्धता :–

संस्था म.प्र. शासन, स्कूली शिक्षा विभाग, एन.सी.टी.ई., म.प्र. उच्च शिक्षा विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल से सम्बद्ध तथा मान्यता प्राप्त है।

भारतीय स्कूल
भारतीय कॉलेज
भारतीय इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज
भारतीय इन्स्टीट्यूट ऑफ फेशन टेक्नालॉजी
राष्ट्र भारती शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन
राष्ट्र भारती उ.मा. विद्यालय, उज्जैन

लायब्रेरी :–

संस्था में विद्यालय एवं महाविद्यालय की विशाल लायब्रेरी है जिसमें विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय की पुस्तकें वर्ष भर के लिए सत्र के प्रथम दिन से ही उपलब्ध हो जाती है।

❋ विद्यार्थियों को विषय विशेष के प्रति रूचि जागृत करने एवं उनके ज्ञान वृद्धि के लिए लायब्रेरी अधिक संख्या में कई संदर्भ पुस्तकें भी उपलब्ध है।

❋ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिये आवश्यक विभिन्न साप्ताहिक एवं मासिक पत्रिकाएँ भी लायब्रेरी में उपलब्ध है।

❊ कई राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार पत्र भी उपलब्ध है जिनके माध्यम से विद्यार्थी अपने सामान्य ज्ञान में वृद्धि कर विश्व में घट रही घटनाओं के प्रति जागरूक रहते है।

प्लेसमेन्ट सेल :

यह प्रकोष्ठ हमारी संस्था का महत्वपूर्ण अंग है जो निरन्तर क्रियाशील रहकर कई संस्थाओं, कम्पनियों एवं संगठनों के सतत् सम्पर्क में रहता है एवं योग्य उम्मीदवारों हेतु सर्विस की व्यवस्था करता है, अभी तक लगभग 1800 उम्मीदवारों को इस प्रकोष्ठ के माध्यम से विभिन्न सेवाओं में भेजा जा चुका है।

केम्पस :

संस्था के समय–समय पर देश की प्रतिष्ठित इन्फोसिस, आई.बी.एम., टी.सी.एस., विप्रो जैसी कम्पनियों द्वारा प्रतिभावान छात्राओं का केम्पस इन्टरव्यू आयोजित कर उनके केरियर को एक नई दिशा प्रदान की जाती है। देश की कई प्रतिष्ठित कम्पनियों के केम्पस समय–समय पर संस्था में आते है एवं विगत वर्षों संस्था से कई छात्राएँ इन कम्पनियों में चयनित होकर संस्था को गौरवान्वित कर चुकी है। छात्राओं द्वारा संस्था की इसी उपलब्धि का क्रम वर्तमान में भी जारी है। बी.सी.ए., बी.एस.सी., बी.कॉम.,बी.ए., एम.एस.सी. (आई.टी.) और एम.एस.सी. (सी.एस.) की कई छात्राएं प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कंपनियों में चयनित हो चुकी है। वर्ष 2018 में भारतीय महाविद्यालय में आयोजित केम्पस ड्राईव में प्रतिष्ठित 10 कम्पनियों द्वारा महाविद्यालय की छात्राओं का चयन किया गया। वर्ष 2019 में कई और प्रतिष्ठित कम्पनियों के केम्पस आना प्रस्तावित है।

प्रयोगशाला :

1. कम्प्यूटर प्रयोगशाला : संस्था में विद्यालयीन विद्यार्थियों एवं महाविद्यालयीन छात्राओं के लिए सर्वसुविधायुक्त कम्प्यूटर लेब है, जिनमें नवीनतम तकनीक कलर मॉनीटर वाले कम्प्यूटर उपलब्ध है। बड़ी संख्या में कम्प्यूटर की उपलब्धता वाला प्रदेश में यह प्रथम संस्थान है।

सभी कम्प्यूटर नेटवर्किंग (लेन, इन्टरनेट) से जुड़े हुए है और आधुनिक तकनीक के सर्वर उपलब्ध हैं। विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है –

2. भौतिकी प्रयोगशाला
3. रसायन प्रयोगशाला
4. माईक्रो बायलॉजी प्रयोगशाला
5. जूलॉजी प्रयोगशाला

संस्था में विद्यालय एवं महाविद्यालय की सभी आवश्यक एवं आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित भौतिकी, रसायन, माइक्रो बायलॉजी एवं जूलॉजी की प्रयोगशालायें है जहां संस्था के विद्यार्थी विषय विशेषज्ञों की उपस्थिति में सभी प्रायोगिक कार्य सम्पन्न करते है एवं अपने अनुसंधान को एक नई दिशा प्रदान करते है।

उच्चस्तरीय फैकल्टी :

विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर विभिन्न विषयों की उच्चस्तरीय, योग्य एवं अनुभवी फैकल्टी को एक नई पहचान प्रदान करती है। कक्षाओं में एक्सपर्ट फैकल्टी द्वारा प्रभावी नोट्स, ऑडियो–विडियो सिस्टम द्वारा विषय का प्रस्तुतिकरण शिक्षण को एक नई दिशा प्रदान करता है।

सॉफ्टवेयर विकास इकाई :

संस्था की एक सॉफ्टवेयर इकाई है जो उच्चस्तरीय कम्प्यूटर के साथ संलग्न रहते हुए कार्य करती है। विभिन्न पाठ्क्रमों के विद्यार्थी एक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इस ईकाई पर कार्य करते है।

शैक्षणिक ऋण :

संस्था कई राष्ट्रीयकृत बैंकों से सम्बद्ध है, जो विद्यार्थियों को शैक्षणिक ऋण उपलब्ध कराती है। यह सुविधा उन विद्यार्थियों के लिए है जो उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक राशि उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं है।

छात्रवृत्ति योजना :

विद्यालय एवम् महाविद्यालय में शासन के नियमानुसार छात्रवृत्ति तो प्रदान की ही जाती है, साथ ही संस्था द्वारा भी अपने स्तर पर प्रतिभावान विद्यार्थियों के शिक्षण के लिये छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जो उनके भविष्य को संवारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

गतिविधियाँ :

आज सम्पूर्ण विश्व सिमटकर छोटा हो रहा है, परिवेश निरन्तर परिवर्तित होता जा रहा है। इस युग में विद्यार्थियों द्वारा सफलता प्राप्त करने हेतु उनका व्यक्तित्व बहुआयामी होना अत्यन्त आवश्यक है इसी भावना के साथ संस्था द्वारा विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन स्तर पर निम्न गतिविधियाँ संचालित की जाती है।

स्वागत समारोह :

रेगिंग जैसी दुषित प्रवृत्ति को रोकने के उद्देश्य से महाविद्यालय की सीनियर छात्राओं द्वारा अपनी जूनियर छात्राओं का स्वागत एक भव्य समारोह द्वारा किया जाता हैं। जिससे उनमें अपनत्व का विकास होता है। इस अवसर पर सभी संकायों की प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिये

आयोजित मिस वेलकम प्रतियोगिता एक विशेष आकर्षण होता है।

बाल मेले का आयोजन :

विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यवसायिक ज्ञान की वृद्धि के उद्देश्य से बड़े स्तर बाल मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें विद्यार्थी एक–दूसरे से अपनी व्यवसायिक समझ को सांझा करते करते है। बाल मेले में एक–दूसरे को जानने, समझने और सपनों को सांझा करने से संबंधित गतिविधियां भी संचालित होती है।

पर्सनालिटी डेवलपमेट क्लासेस (व्यक्तित्व विकास कक्षाएँ) :

सप्ताह में एक दिन छात्राओं के व्यक्तित्व विकास के उद्देश्य से विषय विशेषज्ञ प्राध्यापकों द्वारा व्यक्तित्व विकास कक्षाएँ ली जाती है। इन कक्षाओं में छात्राओं को संस्था में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय कंपनीयों के केम्पस इन्टरव्यू में चयनित होने के लिये विशेष तैयारियाँ भी करवाई जाती है।

वार्षिक उत्सव :

संस्था का वार्षिक उत्सव भी विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये अपनी प्रतिभा में निखार लाने का एक माध्यम होता है, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी जाती है। विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ खेलकूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन वार्षिक उत्सव के दौरान होता है।

वार्षिक उत्सव के अन्तर्गत ही छात्राओं द्वारा पारम्परिक वेशभूषा का फेशन शो भी आयोजित होता है जिसके लिये छात्राएँ विशेष तैयारियाँ करती है।

केरियर गाइडेंस सेमीनार :

हायर सेकेण्डरी तथा अण्डर ग्रेज्यूएट के पश्चात विभिन्न पाठ्यक्रमो एवं सर्विसेस की जानकारी के लिये समय–समय पर छात्राओं के लिये केरियर गाइडेंस सेमीनार आयोजित कर उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये तैयार किया जाता है।

क्रीड़ा गतिविधियाँ :

संस्था में विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को बेडमिन्टन, खो–खो, कबड्डी,

एथलेटिक्स, बास्केट बाल, सॉफ्ट बाल, शतरंज, जूडो, भारोत्तोलन तथा योग से संबंधित गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

विगत वर्षों में विद्यालय एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने विभिन्न खेलों में जिला स्तर, संभाग स्तर एवम राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व कर सफलताएँ अर्जित की है।

कई विधाओं में महाविद्यालय की छात्राओं ने विक्रम विश्वविद्यालय के दल का नैतृत्व कर अर्न्तविश्वविद्यालयीन प्रतिस्पर्धाओं में ख्याति प्राप्त की है।

युवा उत्सव में सहभागिता :

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा आयोजित "युवा–उत्सव" में महाविद्यालय की छात्राएँ प्रतिवर्ष उत्साह के साथ भाग लेकर सफलताऐं प्राप्त करती है। युवा उत्सव की विभिन्न विधाओं में महाविद्यालय की छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पुरस्कार प्राप्त किये है।

सेमीनार / सिम्पोजिया :

समय–समय पर संस्था द्वारा व्यक्तित्व विकास या कॅरियर संबधित विषयों पर सेमीनार आयोजित किए जाते है। यह आयोजन परिसर में स्थित विशाल सभागृह में सम्पादित होते है। इनमें विद्ववतजन सहभागिता करते है।

सामाजिक जागरूकता गतिविधियाँ :

संस्थान के विद्यार्थियों को सामाजिक सरोकार्य के प्रति अपने दायित्वों को पूर्ण करने के लिए विशेश गतिविधियाँ संचालित होती है। इन गतिविधियों का उद्देश्य है कि विद्यार्थी अपने कॅरियर के निर्माण के प्रति जागरूक होने के साथ सामाजिक दायित्वों के लिए भी जागरूक बने और सामाजिक निर्माण व राष्ट्र प्रेम की भावना बलवति हो सके।

राष्ट्रीय सेवा योजना :

विद्यालय एवम् महाविद्यालय में युवा शक्ति को रचनात्मक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई स्थापित की गई है। रासेयो इकाई के अन्तर्गत दोनों शैक्षणिक सत्रों के बीच नियमित गतिविधियों में सेवा कार्य करने रा.से.यो. कर्मियों को ए.,बी.,सी. परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

ड्रेस–कोड :

छात्राओं में अनुशासन के भाव को कायम करने एवं सुरक्षा के दृष्टीकोण से महाविद्यालय में छात्राओं के लिए ड्रेस–कोड लागू किया गया है जिसमें छात्राएं पूर्ण अनुशासित रूप से एक समान वेशभूषा में अध्ययन करती है ।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी :

भारतीय महाविद्यालय में छात्राओं को अपने नियमित पाठ्यक्रम के साथ–साथ विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं बैंक, रेलवे, पी.एस.सी., आई.ए.एस. व एस. एस.सी. के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रतियोगी परीक्षाओं के विभिन्न विषयों के लिए विषय विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता है। महाविद्यालय की छात्राऐं डिग्री पुर्ण करने के ठीक बाद प्रतियोगी परीक्षा में सफल होकर अपने कॅरियर को सही दिशा प्रदान करें, इस उद्देश्य के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी छात्राओं को करवाई जा रही है।

NCC :

एन.सी.सी. सम्पूर्ण देश में 16 लाख से भी अधिक युवा शक्ति को लेकर देश की द्वितीय रक्षा शक्ति के रूप में खड़ा है।

इस महान संगठन में संस्था द्वारा एन.सी.सी. के विद्यार्थियों में "एकता और अनुशासन" के गुण विकसित करने के उद्देश्य से यह संस्था कार्यरत है, जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संम्भव होता है, गत तीन वर्षों से विद्यार्थियों को इस योजना का पूर्णतः लाभ मिल रहा है।

एन.सी.सी. इकाई के अन्तर्गत दो शैक्षणिक सत्रों के बीच नियमित गतिविधियों में सेवा कार्य करने ए.एन.ओ. को ए.,बी.,सी. परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण–पत्र भी प्रदान किया जाता है।

भारतीय स्कूल – संस्कार आधारित उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने वाले भारतीय स्कूल में कक्षा नर्सरी से 12वीं तक कला विज्ञान वाणिज्य संख्याओं की कक्षाएं छात्र एवं छात्राओं के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों में संचालित है।

राष्ट्र भारती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय – चिंतामण मार्ग स्थित भव्य एवं सुसज्जित भवन में संचालित यह विद्यालय चिंतामण क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में एग्रीकल्चर सहित विज्ञान, कला और वाणिज्य संकायों की शिक्षा उपलब्ध करवा रहा है।

भारतीय महाविद्यालय :– भारतीय महाविद्यालय सन् 1996 से संचालित एक कन्या महाविद्यालय है जो म.प्र. उच्च शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त एवं विक्रम विश्वविद्यालय से संबद्धता प्राप्त है। महाविद्यालय से अब तक 60000 से अधिक छात्राऐं शिक्षित होकर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सफलताओं के परचम लहरा रही है।

सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पाठ्यक्रम (केवल छात्राओं के लिये) :–

B.Sc. (Computer Science,Mathematics , Physics)
B.Sc. (Computer Science,Mathematics , Statistics)
B.Sc. (Physics,Chemistry,Mathematics)
B.Sc. (Statistics, Mathematics, Physics)
B.Sc. (Microbiology, Zoology, Chemistry)
B.Sc. (Biotechnology, Zoology, Chemistry)
B.A. (Economics/ Political Science/ Sociology/History)
B.A. (Computer Application)
B.B.A.
B.Sc. (Hons.), B.Com. (Hons.), B.A. (Hons.)
B.Com. (Computer Application)
B.Com. (Unified)
M.Com.
M.Sc. (Mathematics)
Ph.D. (Commerce)

भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज : – भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज संपूर्ण उज्जैन संभाग में कम्प्यूटर, सूचना प्रोद्योगिकी एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में कॅरियर बनाने वाले विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श संस्थान है।

For Girls Students

B.C.A. (Bachelor of Computer Application)
B.B.A. (Mass Communication)
B.B.A. (Advertising and Public Relations)
B.Sc. (Electronic Media)

For both Boy and Girl Students

M.Sc. (Computer Science)
M.A. (Mass Communication)
M.A. (Marketing and Management Communication)
PGDCA (Post Graduate Diploma in Computer Applications)
D.C.A. (Diploma in Computer Applications)

राष्ट्र भारती शिक्षा महाविद्यालय :

राष्ट्र भारती शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन संभाग का एक मात्र कन्या शिक्षा महाविद्यालय है जो एन.सी.टी.ई., म.प्र. उच्च शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त एवं विक्रम विश्वविद्यालय से संबद्धता प्राप्त है। महाविद्यालय चिन्तामण रोड़ स्थित अपने नवीनतम, भव्य भवन में संचालित है। संस्था मे छात्राओं के लिए दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम उपलब्ध है।

भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नॉलाजी :

वर्तमान दौर में बाह्य व्यक्तित्व का आकर्षण उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना भीतर का व्यक्तित्व। भारतीय इन्स्टिट्युट ऑफ फैशन टेक्नॉलाजी ने परिवर्तित जीवन शैली एवं वातावरण का सामन्जस्य बनाते हुए व्यक्तित्व को नये आयाम देने हेतु कई एडवांस पाठ्यक्रम छात्राओं के

लिये उपलब्ध करवाये है। फैशन की दिशा में कुशल मार्गदर्शकों को तैयार करने के लक्ष्य के साथ इस संस्थान ने अल्प समय में ही अपनी पहचान अग्रणी फैशन संस्थानों में बना ली है। यहां पर महानगरों जैसी सुविधाओं के साथ एक्सपर्ट फैकल्टीज के माध्यम से छात्राएं फैशन के कई टीप्स लेते हुए अपना भविष्य संवार रही है। इस संस्थान में प्रेजेन्टेशन के कई अवसर उपलब्ध हैं जिसमें अपनी प्रतिभा का समय–समय पर प्रदर्शन करके छात्राएं स्वयं का आंकलन कर रही है। यहां की छात्राएं संस्था द्वारा संचालित भारतीय बुटीक के माध्यम से स्वयं द्वारा निर्मित मटेरियल को मार्केट में लांच कर रही है। संस्थान की यह विशिष्टता ही उसे अन्य संस्थानों से हटकर अद्वितीय बनाती है। जिस प्रकार अनुशासन, दक्षता एवं व्यवहार कुशलता जैसे आभुषण आंतरिक व्यक्तित्व को संवारते हैं उसी प्रकार बाहरी व्यक्तित्व को संवारने के लिये भी कई वेल प्लांड कोर्सेस भारती इन्स्टीट्युट ऑफ फैशन टेक्नालाजी में संचालित हो रहे है।

वर्तमान में इंटीरियर डेकोरेशन भी छात्राओं का केरियर उज्जवल बनाने की दिशा में एक अभिनव और उत्कृष्ट क्षेत्र साबित हो रहा है। जहां इस क्षेत्र में लगातार बड़ रही संभावनाएं छात्राओं को इंटीरियर पाठ्यक्रमों की ओर आकर्षित कर रही है वहीं उनके लिये एक आदर्श संस्थान का चयन करना भी एक चुनौति सिद्ध हो रहा है। भारतीय इन्स्टीट्युट ऑफ फैशन टेक्नालाजी में छात्राओं की इस समस्या के दृष्टिगत इंटीरियर डेकोरेशन के क्षेत्र में भी कई नये पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाए जा रहे है। इसमें कोई संदेह नहीं की विशेष सुविधाओं एवं उच्च गुणवत्ता के साथ संचालित इन पाठ्यक्रमों को करने के बाद छात्राएं अपना भविष्य इंटीरियर के क्षेत्र में बहुत उज्जवल रूप से देख रही है।

छात्राओं द्वारा निर्मित ड्रेस मटेरियल एवं ज्वेलेरी की गुणवत्ता का मुल्यांकन उनके विश्वास में अभिवृद्धि करता है इसी कारण संस्थान में भारती बुटीक का भी सफलतम संचालन हो रहा है। छात्राओं द्वारा निर्मित आकर्षक ड्रेसेस एवं ज्वेलेरी के अतिरिक्त कई ओर भी मटेरियल यहां उपलब्ध है। इसी कारणवश अल्प समय में ही भारती बुटीक छात्राओं एवं महिलाओं के लिये पहली पसंद बन चुका है।

विशेषताएं :–

1. अत्याधुनिक सुविधाएं 2. बुटिक प्रशिक्षण 3. अनुभवी फेकल्टी 4. प्लेसमेंट सुविधा

Diploma and Advanced Diploma Course :

* Fashion Designing * Interior Designing

Certificate Courses :

* Textile Designing * Dress Designing

Various Short Term Courses

सिलाई, फेब्रिक पेटिंग, जरदोसी वर्क, क्रोशिया वर्क, मेहंदी, बेग मेकिंग, एम्ब्रायडरी, स्क्रीन (प्लेन एम्बोश), बटिक फोक आर्ट, स्टेचू मेकिंग, पेकिंग कोर्स, बन्देज (टाई एण्ड डाई), कोन पेटिंग, ब्लॉक पेटिंग, स्टेन्सिन पेंटिंग, पॉट डेकोरेशन, पफ ऑन वर्क, स्टेन ग्लास, एलम वर्क, लमासा वर्क, मेक्रम वर्क, पेपर वर्क, सॉफ्ट टॉयस, फाउन्टेन, वेक्स वर्क, मिरर डेकोरेशन, ज्वेलरी डिजाईनिंग, पेपर क्वीलिंग, फ्लावर मेकिंग, नेल आर्ट, कार्डस् मेकिंग।

उज्जैन की पहचान बना सामुदायिक रेडियो "रेडियो दस्तक 90.8 FM"

श्री कृष्ण शिक्षण लोक परमार्थ समिति, उज्जैन द्वारा स्थापित "रेडियो दस्तक" 90.8, शहर का पहला सामुदायिक रेडियो है। इस पहल में श्रीपाल एजुकेशन सोसायटी तथा भारतीय ज्ञानपीठ जैसी प्रमुख शिक्षण संस्थाओं का सहयोग प्राप्त है। इसका प्रमुख उद्देश्य आमजन को सामुदायिक विकास की प्रक्रियाओं से अवगत कराना और उन्हें उसमें सक्रिय रूप से सहभागी बनाना है। रेडियो दस्तक उज्जैन एवं उसके आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले विभिन्न वर्गों और समुदायों को शैक्षणिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से सशक्त बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है।

लोक जन जीवन में व्याप्त लोक संस्कृति को प्रोत्साहित करने तथा उज्जैन शहर तथा ग्रामीण अंचल की प्रतिभाओं को रेडियों दस्तक के माध्यम से मंच उपलब्ध करवाये जा रहे है। विभिन्न धर्म ,जाति और सम्प्रदाय के प्रति आपस में सद्भावना व्याप्त हो, इसके लिए विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से आमलोगों को जोड़ने को प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य , सामाजिक , सांस्कृतिक ,लोक संस्कृति, लोककला, जनसंख्या, खेलकूद, कुपोषण, किसानों अनुसूचित जाति, जनजाति ,मनोरजन , महिला एवं बच्चों के सर्वांगीण विकास आदि विषयों पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों में जनचेतना लाने का प्रयास रेडियों दस्तक कर रहा है। रेडियो दस्तक 90.8 FM मुख्य रूप से आमजन को केन्द्र और राज्य सरकार की मुख्य जनहितकारी योजनाओं की जानकारी देकर उन्हें उससे लाभान्वित करने के लिए भी प्रेरित कर रहा है, ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके। इस प्रकार संस्था में स्थापित रेडियो दस्तक 90.8 FM समाज में सामाजिक और आर्थिक बदलाव लाने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

रेडियो के क्षेत्र में कॅरीयर बनाने वाले विद्यार्थियों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम भी संचालित है –

- Programming
- All Form's of Radio Jockey
- Equipment Information
- Script Writing
- Audio Editing
- Learn With Live Radio Experience

- ✻ Management
- ✻ Studio Visit
- ✻ Recording
- ✻ Marketing Strategy
- ✻ Software Information

विशेषताएँ :–

- ✻ भारतीय ज्ञानपीठ छात्राओं के लिये अनुकूल वातावरण वाला प्रदेश का अग्रणी संस्थान है, जहाँ नर्सरी से स्नातकोत्तर तक विभिन्न संकायों के पाठ्यक्रम उपलब्ध है।
- ✻ विद्यालय एवं महाविद्यालय की सभी कक्षाओं में सीमित प्रवेश।
- ✻ के.जी. कक्षाओं से ही अंग्रेजी सही रूप से लिखने व बोलने पर विशेष ध्यान।
- ✻ नृत्य, संगीत, चित्रकला, योग, कराते, शतरंज आदि में प्रशिक्षण।
- ✻ कक्षा 6 टी से 12 वीं तक नियमित कम्प्यूटर शिक्षण अनिवार्य।
- ✻ विद्यालय में छात्र–छात्राओं के लिये अलग–अलग शिफ्ट।
- ✻ विद्यार्थियों के लिए आधुनिक ऑडियों एवं विडियों तकनीक के साथ शिक्षण की व्यवस्था।
- ✻ आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों द्वारा विषयों का प्रस्तुतिकरण।
- ✻ सभी बोर्ड परीक्षाओं में श्रेष्ठ परिणाम।
- ✻ महाविद्यालय से प्रतिवर्ष विभिन्न संकायों में सर्वाधिक संख्या में छात्राएँ विक्रम विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में प्रावीण्य सूची में अपना स्थान सुनिश्चित करती है।
- ✻ महाविद्यालय की प्रत्येक छात्रा को सभी विषयों की सर्वाधिक पुस्तके लायब्रेरी से उपलब्ध होती है।
- ✻ विभिन्न राष्ट्रीय परीक्षाओं एवं प्रतियोगिताओं में संस्था की छात्राओं ने सफलता हासिल कर उज्जैन के साथ संस्था का नाम भी गौरवान्वित किया है।
- ✻ ऑडियो एवं विडियों सिस्टम के साथ अध्यापन।
- ✻ कक्षाओं में कुशल एवं विषय विशेषज्ञ प्राध्यापकों द्वारा उपयोगी नोट्स तैयार करवायें जाते है। जिससे छात्राओं को अन्यत्र कोचिंग की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

सादर - आमंत्रण

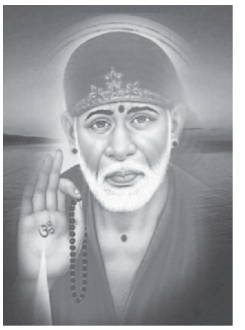

Love All, Serve All, Help Ever, Hurt Never

पद्मभूषण डॉ. शिवमंगसिंह 'सुमन' की स्मृति में
कर्मयोगी स्व. कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ (एडव्होकेट) की प्रेरणा से
24 वीं अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला - 2026

सद्भाव, संस्कृति एवं राष्ट्रीय चिंतन को समर्पित यह आयोजन वर्ष 2026 में अपनी नियत तिथियों एवं समयानुसार संपन्न होना है। आपकी सहभागिता इस आयोजन को और अधिक व्यापक एवं सार्थक बनाएगी।

इस वैचारिक अनुष्ठान को और अधिक व्यापकता प्रदान करने के लिए आपकी गरिमामयी उपस्थिति सादर अपेक्षित है।

स्थान – भारतीय ज्ञानपीठ परिसर
माधवनगर रेलवे स्टेशन के सामने फ्रीगंज, उज्जैन (म.प्र.)

– आयोजक –

भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन
श्रीपाल एज्युकेशन सोसायटी

शिक्षा सद्भावना संस्कार

म.प्र. शासन शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त

RASHTRA BHARTI H.S.SCHOOL

(Run by Shripal Education Society, Ujjain)

1964 से शिक्षा सेवा के प्रति समर्पित

ADMISSIONS OPEN

Class Nursery to 12th

सीबीएसई पेटर्न की उच्च गुणवत्ता की शिक्षा अब चिंतामण क्षेत्र में ही उपलब्ध

CBSE Pattern

एग्रीकल्चर साईंस, कॉमर्स आर्ट्स एवं विभिन्न वोकेशनल कोर्सेस

- प्रायमरी एवं प्री–प्रायमरी कक्षाओं में विशेष क्रीड़ा पद्धति के माध्यम से शिक्षण
  LBF method for Pre-Primary & Primary Classes.
- विशेष योग्यता प्राप्त एवं अनुभवी शिक्षक
  Experienced and well qualified faculties.
- प्रत्येक विद्यार्थी पर विशेष ध्यान व अतिरिक्त कक्षाओं की सुविधा
  Special attention on each student and Extra classes are available.
- सर्वसुविधायुक्त कम्प्यूटर लेब सुविधा
  Best Computer lab facilities.
- विविध प्रकार की खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ
  Various types of Sports and cultural activities.
- सरल आवागमन सुविधा
  Easy Transport facility.
- उन्मुक्त, अनुशासित एवं सुरक्षित वातावरण में विद्यार्थियों का विकास
  Development of Student in free disciplined & secure Environment.

Campus : Chintaman Road, In front of Punjab National Bank, Jawasiya, Ujjain
City office: "Bhartiya Gyanpeeth Parisar" In front of Madhav Nagar Railway Station Freeganj, Ujjain (M.P.) **Contact: 0734-25502300**

भारतीय ज्ञानपीठ

1964
से शिक्षा सेवा के प्रति समर्पित

श्रीपाल एजुकेशन सोसाइटी
SHRIPAL EDUCATION SOCIETY

श्री कृष्ण शिक्षण लोक परमार्थ समिति
SHRI KRISHNA SHIKSHAN LOK PARMARTH SAMITI

राष्ट्र भारती स्कूल
RASHTRA BHARTI SCHOOL

राष्ट्र भारती शिक्षा महाविद्यालय
RASHTRA BHARTI SHIKSHA MAHAVIDHYALAYA

भारतीय इंस्टिट्यूट ऑफ़ फैशन टेक्नोलॉजी
BHARTIYA INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY

भारतीय इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्ट्डीज
BHARTIYA INSTITUTE OF PROFESSIONAL STUDIES

भारतीय स्कूल
BHARTIYA SCHOOL

भारतीय कॉलेज
BHARTIYA COLLEGE

भारतीय ज्ञानपीठ
BHARTIYA GYANPEETH

रेडियो दस्तक
RADIO DASTAK

उज्जैन का अपना एवं पहला कम्युनिटी रेड़ियो

रेडियो दस्तक
90.8 FM
सुनेगा उज्जैन बढ़ेगा उज्जैन

रेडियो दस्तक
RADIO DASTAK

BHARTIYA ASSOCIATES
आगे बढ़े साथ –साथ
वेब डेवलपमेंट, डोमेन रजिस्ट्रेशन
एवं वेब हॉस्टिंग, सॉफ्टवेअर डेवलपमेंट
एण्ड आई.टी.साल्यूशंस
प्लेसमेंट कंसलटेंसी, इवेंट मेनेजमेंट
जर्नलिज्म एण्ड मीडिया सर्विस,
कैरियर कंसलटेंसी, पर्सनालिटी डेवलपमेंट
पब्लिकेशन, मार्केट रिसर्च एडर्वटाइजिंग
एण्ड मार्केटिंग कॉर्पोरेट ट्रेनिंग

Little Gems
PLAY SCHOOL
PLAY GROUP, NURSERY
K.G.I & K.G. II
89, MADHAV CLUB ROAD
BEHIND BHARTIYA GYANPEETH FREEGANJ
UJJAIN (M.P.) TEL. : 0734-2551785

कक्षा नर्सरी से स्नातकोत्तर तक
श्रीपाल एजुकेशन सोसाइटी
SHRIPAL EDUCATION SOCIETY
Infront of Madhav Nagar Railway Station, Ujjain (M.P.)